डा० आज़म बेग क़ादरी

नाम किताब- **ज़ुहदो तक़्वा और फ़क़्र**

मुअ़ल्लिफ़-**डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी**

सने इशाअ़त-जुलाई- **2022**

कम्पोज़िंग-**जुनैद अ़ली क़ादरी सफ़वी &**
ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी सफ़वी

क़ीमत- **90/-** रुपये

-: मिलने के पते :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)
09695661767

जावेद बुक सेलर
करहल (मैनपुरी)
09634447000

अनवार उर्दू बुक डिपो
बिसात खाना मैनपुरी
09319086703

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

786/92

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तई़नुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सइयेआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत व मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर रोज़े क़यामत प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बिया-किराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

और रहमत व सलामती हो आपके अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो रोज़े क़यामत मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढ़ाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्हरात और आपकी आल व असहाव और तमाम औलिया-ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

इन्सान के दो सबसे बड़े दुश्मन हैं एक शैतान और दूसरा नफ़्स और शैतान इन्सान के नफ़्स पर हमला करता रहता है और उसे शर व गुनाह की तरफ़ उकसाता रहता है और उसके नफ़्स का इस्तेअ़माल करता है और फिर इन्सान उमूरे गुनाह और अल्लाह तअ़ाला की नाफ़रमानी के इरतिकाब को अन्जाम देता रहता है और इन्सान का नफ़्स भी शर व बुराई और आख़िरत की बजाए फ़ानी दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत की तरफ़ राग़िब करता है इसलिये शैतान का काम बड़ा आसान हो जाता है और इन्सान नफ़्स के अमराज़ में गिरफ़्तार हो जाता है जैसे तकब्बुर, खुदपसंदी, रियाकारी, हिर्स, हसद, कीना, बुग्ज़, इ़नाद, गुस्सा, हुब्बे शहवात, हुब्बे दुनिया, तमाअ़ और तालिबे जाह व मन्सब, झूठ, बोहतान, ग़फ़लत, माल व दौलत की इंतिहाई मुहब्बत, फ़ख़्र व जुल्म व तशद्दुद और इताअ़ते नफ़्स और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी और ज़िनाकारी और दीगर बुराईयां वग़ैराह।

इसलिये नफ़्स का तज़किया व दिल का तसफ़िया करना निहायत ज़रुरी है ताकि दुनिया व आख़िरत में कामयाबी व कामरानी हासिल हो और इसके सबब गुनाहों से इजतिनाब और हर नेक अ़मल में इख़लास की कैफ़ियत पैदा हो सके जो बेहतर अज्रो सवाब का मुस्तहिक़ बनादे और आख़िरत के सख़्त तरीन अ़ज़ाब से महफूज़ व मामून रखे।

नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने नफ़्स से जिहाद करके उसका तज़्किया करने को जिहादे अकबर का नाम दिया है जब इन्सान नफ़्स की तमाम बीमारियों से निजात पा लेता है तो उसका तज़्किया हो जाता है और जब तक ये बीमारियाँ और ज़ाहिरी व बातिनी बुराईयाँ और नफ़्सानी ख़्वाहिशात व शहवात बातिन से निकल नहीं जातीं तब तक नफ़्स का तज़्किया नहीं किया जा सकता और जब नफ़्स का तज़्किया मुकम्मल होकर इन्सान इन तमाम बुराइयों से निजात पाकर पाको साफ़ हो जाता है तो उसके क़ल्ब व बातिन अनवारे इलाही से मुनव्वर हो जाते हैं हालांकि नफ़्स का ख़्वाहिशात और शहवात पर क़ाबू पाना बड़ा ही मुश्किल है मगर नफ़्स का मारना ही दिल की हयात है।

तक़वे की लगाम से नफ़्स को काबू में किया जा सकता है और तक़वा ही दीनी व दुन्यावी व उख़रवी भलाइयों का जामेअ़ है और तक़वा ही है जो बन्दे की इबादात व इताअ़ात और बन्दगी को दरजाते कुबूलियत पर पहुँचाने का ज़ामिन और कफ़ील है कुरान मजीद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तक़वा को हर भलाई व हर रहनुमाई और हर तम्बीय व हर ताअ़लीम व तहज़ीब से मुताअ़ल्लिक़ किया है और तक़वा इज़्ज़त व बुजुर्गी है और इस फ़ानी व ज़ाइल होने वाली दुनिया की मुहब्बत व रग़बत इन्सान के लिये ज़िल्लत व हलाकत और अ़ज़ाबे दोज़ख़ का बाइस है और अल्लाह तआ़ाला

के नज़दीक तक़्वा एक आअ़ला व महबूब शैः है और इसका मर्तबा निहायत ही बुलन्द है इसलिये नफ़्स को हर शर व बुराई से रोका जाये और हर फिजूल चीज़ व ग़ैर ज़रुरी चीज़ से इजतिनाब किया जाये और इस दुनिया के मालो मताअ़ की मुहब्बत व रग़बत से किनारा कश हो जाये और तमाम अवामिर पर अ़मल किया जाये और तमाम नवाही से इजतिनाब किया जाये तो ऐसा करने से बदन के ज़ाहिरी व बातिनी आज़ा सिफ़्ते तक़्वा से मौसूफ़ हो जायेंगे आंख, कान, ज़बान, दिल व पेट व शर्मगाह और बाक़ी जुमला आज़ा में तक़्वा पैदा हो जायेगा मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि आज अक्सर मुसलमानों की जुबान मुस्लिम है लेकिन उनके दिल मुस्लिम नहीं और उनके क़ौल मुस्लिम हैं लेकिन उनके अ़मल मुस्लिम नहीं और वो जलसो में मुस्लिम हैं मगर ख़लवत में मुस्लिम नहीं।

और जो शख्स ख़ौफ़े इलाही व रिज़ाये इलाही की वजह अपने नफ़्स का मुक़ाबला करता है और ख़्वाहिशाते नफ़्स को छोड़ देता है वो उन लोगों में से है जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने तक़्वे के लिये परख़ लिया है और उन के लिये अज्रे अ़ज़ीम है।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी
Mob. 9897626182

अल्लाह तआ़ाला इन्सान के दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है

अल्लाह तआ़ाला ने इन्सान के अन्दर नफ़्स व रुह की कैफ़ियत रखी है और नफ़्स बुराई की तरफ़ राग़िब करने वाला है जबकि रुह उसे शर व बुराई से रोकती है और उसका नफ़्स दुनिया की मुहब्बत व रग़बत और उसकी ज़ैबो ज़ीनत की तरफ़ माइल करता है जबकि रुह अल्लाह तआ़ाला की मुहब्बत व रिज़ा और खुशनूदी और आख़िरत की तरफ़ राग़िब करती है और जब नफ़्स इन्सान पर ग़ालिब आ जाये तो उसकी दुनिया व आख़िरत दोंनों तबाह व बर्बाद हो जाती हैं और नफ़्स उसे अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ बना देता है।

नफ़्स को क़ाबू करना और उस पर ग़ालिब आना आसान नहीं है मगर जो शख़्स इसके लिये कोशिश करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसकी ग़ैब से मदद फ़रमाता है और फिर वो अपने नफ़्स पर क़ाबू पा लेता है और उस पर ग़ालिब आ जाता जुहदो तक़वे की मन्ज़िल पर फ़ाइज़ होने के लिये नफ़्स पर क़ाबू पाना निहायत ही ज़रुरी है क्योंकि इन्सान का नफ़्स अल्लाह तआ़ाला के क़रीब होने का शऊ़र भी होने नहीं देता और इसके नतीजे में बन्दा अल्लाह तआ़ाला के क़रीब होने का इदराक हासिल नहीं कर पाता और अल्लाह तआ़ाला की माअ़रिफ़त हासिल करने में नफ़्स बहुत ही मज़बूत

दीवार का काम करता है अगर बन्दे को अल्लाह तआ़ला के क़रीब होने का इदराक हासिल हो जाये तो उसका हाल बदल जायेगा व उसे जुहदो तक़वा हासिल हो जायेगा।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक हमने इन्सान को पैदा किया है और हम उन वसवसों को भी जानते हैं जो उसका नफ़्स (उसके दिल और दिमाग़ में) डालता है और हम उसके दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं।
(सू०-क़ाफ़-50/16)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और ऐ हबीब जब मेरे बन्दे आपसे मेरी निस्बत सुवाल करें तो उन्हें बतादें कि मैं (उनके) नज़दीक हूँ और मैं पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब भी वो मुझे पुकारता है पस उन्हें चाहिये कि मेरी फ़रमां बरदारी इख़्तियार करें और मुझ पर पुख़्ता यक़ीन रखें ताकि वो राहे (मुराद) पा जायें। (सू०-बक़राह-2/186)

अल्लाह तआ़ला इन्सान के दिलो दिमाग़ में दाख़िल होने वाले वसवसों को भी जानता है जो उसका नफ़्स डालता है और दिलों के पोशीदा व मख़्फ़ी अहवाल व दिलों के राज़ों को भी अल्लाह तआ़ला जानता है बल्कि बन्दे तमाम ज़ाहिरी व बातिनी अहवाल को अल्लाह तआ़ला बन्दे से भी ज़्यादा जानने वाला है अल्लाह तआ़ला अपने इ़ल्म

व अपनी कुदरत से ऐतबार से बन्दे के दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है और ये वो रग है जो इन्सान के सबसे ज़्यादा क़रीब होती है और ये वो रग है जिसने दिल का इहाता कर रखा है इसलिये इन्सान को चाहिये कि ऐसे कामों के इरतिकाब से हया करे जिन कामों को अल्लाह तआ़ला ने मनाअ़ फ़रमाया है और उन कामों को सिद्क़ दिल और ख़ालिस नीयत और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिये बजा लाये जिनका अल्लाह तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया है।

इसी तरह बन्दे के लिये यही मुनासिब है कि ऐसे क़ौल व फ़ेअ़ल से इजतिनाब करे जो किरामन क़ातिबीन फ़रिश्ते उसके तमाम आअ़माल को हर वक़्त उसके आअ़माल नामें में लिख रहे हैं दांयी जानिब का फ़रिश्ता नेकियां लिखता है और बांयी जानिब का फ़रिश्ता बुराईयाँ लिखता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जब दो लेने वाले (फ़रिश्ते उसके हर क़ौल और फ़ेअ़ल को तहरीर में) ले लेते है (जो) दांयी तरफ़ और बांयी तरफ़ बैठे हुये हैं वो मुंह से कोई बात कहने नहीं पाता मगर उसके पास एक निगेहबान लिखने के लिये तैयार रहता है।
(सू०–क़ाफ़–50/17-18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हालांकि तुम पर निगेहबान फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो–

बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ हैं (जो तुम्हारे आअ़माल) लिखने वाले हैं वो उन (तमाम कामों) को जानते हैं जो तुम किया करते हो और बेशक नेकोकार नेअ़मतों वाली जन्नत में होंगे और बेशक बदकार दोज़ख़ में होंगे। (सू०–इन्फ़ितार–82/10-14)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

क्या वो ये गुमान करते हैं कि हम उनकी पोशीदा बातें और उनकी सरगोशियाँ नहीं सुनते क्यों नहीं (ज़रुर सुनते हैं) और हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते भी उनके पास लिख रहे होते हैं।
(सू०–जुख़रुफ़–43/80)

फ़रिश्तों का आअ़माल को लिखना हिकमत के तक़ाजे के तहत है कि क़यामत के दिन हर शख़्स को उसके आअ़माल नामे उसके हाथ में दे दिये जायेंगे हालांकि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों के लिखने से भी बेनियाज़ है क्योंकि वो सबसे ज़्यादा पोशीदा चीज़ को भी जानने वाला है यहाँ तक कि नफ़्स के वसववे भी उससे पोशीदा नहीं हैं और अल्लाह तआ़ला हर शैः की निगेहबानी करने वाला है और हर शैः को देखने व सुनने वाला है और कायनात की हर मख़्फ़ी चीज़ पर मुत्तलाअ़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और तुम लोग अपनी बात छुपाकर कहो या उसे बुलन्द आवाज़ में कहो वो सीनों की छुपी बातों को भी खूब जानता है। (सू०–मुल्क–67/13)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक वो (लोग) अपने सीनों को मोड़ लेते हैं ताकि वो उस (खुदा) से (अपने दिलों का हाल) छुपा सकें ख़बरदार जिस वक़्त वो अपने कपड़े (जिस्मों पर) ओढ़ लेते हैं (तो उस वक़्त भी) वो उन सब बातों को जानता है जो वो छुपाते हैं और जो आशकार करते हैं बेशक वो सीनों की (पोशीदा) बातों को खूब जानने वाला है।
(सू०–हूद–11/5)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
उसी ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा फ़रमाया है फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ (और) जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती है वो उसे भी जानता है और जो (चीज़ ज़मीन से) निकलती है वो उसे भी जानता है और जो चीज़ आसमान से उतरती है वो उसे भी जानता है और जो कुछ आसमान में चढ़ता है वो उसे भी जानता है और वो तुम्हारे साथ होता है तुम जहाँ कहीं भी हो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआ़ला उसे खूब देखने वाला है। (सू०–हदीद–57/4)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक वो उन कामों से ख़बरदार है जो तुम करते हो। (सू०–नम्ल–27/88)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वो–

(रोज़े महशर) तुम्हें उन (तमाम आअ़माल) से आगाह फ़रमां देगा जो तुम (इस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे। (सू०–अनअ़ाम–6/60)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे अच्छी तरह ख़बरदार है। (सू०–बक़राह–2/234)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (सू०–आले इमरान–3/153)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और अल्लाह उन (सब) कामों से खूब आगाह है जो तुम करते हो। (सू०–तौबा–9/16)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और अ़नक़रीब तुम हर पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (रब) की तरफ़ लौटाये जाओगे सो वो तुम्हें उन आअ़माल से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रहे थे। (सू०–तौबा–9/105)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
(ऐ इन्सान) क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि अल्लाह उन सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और कहीं भी तीन (लोगों) की कोई सरगोशी ऐसी नहीं होती मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका चौथा

होता है और न ही कोई पाँच (लोगों) की कोई सरगोशी होती है मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका छटा होता है और न इससे कम लोगों की और न ज़्यादा की मगर वो हमेशा उनके साथ होता है जहाँ कहीं भी वो होते हैं फिर वो क़यामत के दिन उन्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमां देगा जो वो करते रहे थे।
(सू०–मुजादला–58/7)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और नमाज़ क़ायम किया करो और ज़कात देते रहा करो और तुम अपने लिये जो नेकी आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहाँ पाओगे और जो कुछ तुम कर रहे हो यक़ीनन अल्लाह उसे देख रहा है
(सू०–बक़राह–2/110)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
जो कुछ तुम करते हो वो उसे खूब देख रहा है।
(सू०–हूद–11/112)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सब ग़ैब को जानता है और जो भी अ़मल तुम करते हो अल्लाह उसे खूब देखने वाला है।
(सू०–हुजुरात–49/18)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
वो ग़ायब व हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है

और ज़बरदस्त और बड़ा हिकमत वाला है।
(सू०–तग़ाबुन–64/18)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला हर बोलने वाले की ज़बान के पास है पस बन्दे को देखना चाहिये कि वो क्या कहता है।
(इब्ने अबी शैबा–10/467-ह०–35495)

अल्लाह तआ़ला हमारे बहुत क़रीब है मगर क्या हम उसके क़रीब हैं अगर बन्दे को ये इदराक हो जाये कि अल्लाह तआ़ला मेरी दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है तो बन्दा भी अल्लाह तआ़ला के क़रीब हो जायेगा जिस तरह हम अपने असातिज़ा या माँ बाप वग़ैराह के सामने गुनाह या बुराई का इरतिकाब नहीं करते क्योंकि वो क़रीब होते हैं तो इसी तरह अगर हम हमा वक़्त ये गुमान और तसव्वुर में रखें कि मेरा रब मेरे क़रीब है और हमें देख रहा है और इतना क़रीब कि मेरी दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है तो हमसे हर गुनाह व बुराई दूर हो जायेगी और हम कोई गुनाह का काम नही करेंगे और अपने रब के फ़रमां बरदार और इताअत गुज़ार बन्दे बन जायेंगे और जब दुनिया में लोगों की कुर्बत हमें फ़ायदा देती है तो उस बन्दे का हाल क्या होगा कि जिसे अल्लाह तआ़ला की कुर्बत हासिल हो जाये।

ज़ुह्दो तक़्वा की ताअ़रीफ़ और उसकी हक़ीक़त

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि ज़ुह्द दुनिया से बे रग़बती और अल्लाह तबारक व तआ़ला का कुर्ब चाहने वाले सालिकीन के मक़ामात में से शरीफ़ मक़ाम है और दीगर मक़ामात की तरह ये भी इ़ल्म, हाल और अ़मल से मुरक्कब है और तक़्वा ये है कि अल्लाह तआ़ला के सब अहकामात पर मुकम्मल अ़मल पैरा होना यानी अवामिर को बजा लाना व नवाही से रुक जाना ये तक़्वे की इब्तिदा है और अपनी रग़बत व इरादे को एक चीज़ से हटाकर उससे बेहतर दूसरी चीज़ की तरफ़ रग़बत और तवज्जौ करना ज़ुहद कहलाता है।

तक़्वा ईमान से शुरु होता है और अदब पर मुकम्मल होता है और तक़्बे का अदब ये है कि ईमान के बाद इ़ल्म हासिल करे और किसी दुनियावी ग़रज़ के बग़ैर उस पर अ़मल करे और माअ़सियत व गुनाहों और बुराइयों से बचे और दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करे और दुनिया व आख़िरत की किसी आरज़ू के बग़ैर हाल हासिल करे और किसी ग़फ़लत के बग़ैर यानी जो हाल पाले फिर उसमें ग़फ़लत न आये यानी नमाज़ी हो जाये फिर नमाज़ से ग़ाफ़िल न हो नेक आअ़माल करने लगे फिर उससे ग़ाफ़िल न हो यानी जब ये

हाल मिल जाये तो फिर ग़ाफ़िल न हो व यक़ीन करे किसी शक के बग़ैर यानी यक़ीन आ जाने के बाद फिर कभी शक न आये और शुक्र हासिल करे किसी शर्त के बग़ैर यानी उसकी ख़्वाहिश व मर्ज़ी के मुताबिक़ कोई काम हो तो अल्लाह का शुक्र अदा करे और मर्ज़ी के मुताबिक़ काम न हो तो शुक्र अदा न करे और रिज़ा बा क़ज़ा शिकवा के बग़ैर यानी अल्लाह तआ़ला की जो मर्ज़ी हो उस पर हर वक़्त राज़ी रहे ओर कभी जुबान पर शिकवा न आये और ख़िदमत करे तमअ़ के बग़ैर और ज़िक्र करे तवक़्क़ुफ़ (वक़्फ़ा ताख़ीर) के बग़ैर यानी फिर रुके न और जब इन्सान में ये सारी चीज़ें पैदा हो जायें तो समझ लो उसे तक़्वे का अदब मिल गया है।

हज़रत गौसुल आज़म अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हर वो चीज़ जो तुझे अल्लाह से दूर ले जाये उससे बच जाने का नाम तक़्वा है यानी दुनियावी शहवात व लज़्ज़ात से बचना, गुनाहों से बचना, कबाइर और सग़ाइर गुनाहों से बचना, अल्लाह और रसूल की नाफ़रमानी से बचना और तक़्वा अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर देता है इसलिये इन्न्सान को चाहिये कि बात कहने से पहले और हर काम की इब्तिदा से पहले ये सोचना चाहिये कि जो बात मैं कहने जा रहा हूँ या कोई काम जो मैं करने जा रहा हूँ ये मुझे अल्लाह के क़रीब करेगा या दूर करेगा या अल्लाह तआ़ला को पसंद है या नपंसद है और–

अल्लाह तआ़ाला इससे राज़ी होगा या नाराज़ तब कोई काम की इब्तिदा करे या तब कोई भी बात जुबान से निकाले हर इन्सान के अन्दर अल्लाह तआ़ाला ने ये इम्तियाज़ और पैमाना रखा है कि उसे किसी अह्ले इ़ल्म से पूछने की ज़रुरत भी नहीं क्योंकि जब इन्सान कोई बुरा अ़मल करता है तो वो जानता है कि ये बुरा अ़मल है और जब कोई अच्छा अ़मल करता है तो वो जानता है कि ये अच्छा और नेक अ़मल है और हर बुरे काम से क़ब्ल उसका ज़मीर उसे आवाज़ देता है कि ऐ बन्दे ये बुरा काम है इसे मत कर तो हर काम मैं उसे फ़ैसला करने में कोई मुश्किल दरपेश नहीं आयेगी और हर इन्सान जानता है कि कौन सा काम अल्लाह तआ़ाला के क़रीब करेगा और कौन सा काम अल्लाह तआ़ाला से दूर करेगा और हर वो काम जिसमें ख़ैर और भलाई हो वो काम अल्लाह तआ़ाला के क़रीब करता है और बुराई व गुनाह के काम अल्लाह तआ़ाला से दूर करते हैं और हर काम पर ग़ौर करने वाला बन्दा इस बात का फ़ैसला करने की इस्तिताअ़त रखता है कि कौन सा काम बेहतर और बाइसे अज्र और निजात का बाइस है और कौन सा काम उसकी हलाकत व बर्बादी व दोज़ख़ में ले जाने वाला है।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं ऐ बन्दे कोशिश कर कि तेरा रब तुझे उस जगह न देखे जिस जगह से उसने तुझे मना किया है और जहाँ तेरा रब चाहता है–

कि तू उस जगह मौजूद हो तो तू उस जगह से ग़ैर हाज़िर न हो सूफ़िया किराम फ़रमाते हैं कि जुमला शरीअ़त के अहकाम के ज़ाहिरी व बातिनी आदाब को बजा लाने का नाम तक़्वा है यानी तहारत के आदाब, बुजू के अदाब, बैतुल ख़ला के आदाब, गुस्ल के आदाब और मस्जिद में जाने के आदाब, नमाज़ के आदाब, दुआ़ के आदाब, और इमामत के आदाब, इक़्तिदा के आदाब, जुमआ़ के आदाब, सोने के आदाब, सो कर बेदार हाने के आदाब, रोज़ों के आदाब, और हुकुकल इ़बाद के आदाब, इ़ल्म सीखने के आदाब, हज के आदाब, ज़िन्दगी में दरपेश होने वाले मुआ़मलात के आदाब बाअ़दा पूरा करने के आदाब, रिश्तेदारी व दोस्ती के आदाब, हुकूक़े वालिदैन के आदाब, व सुहवत इख़्तियार करने के आदाब, खाना खाने के आदाब उठने बैठने व चलने के आदाब, हुस्ने अख़लाक़ के आदाब, रियाज़त के आदाब और तवक्कुल के आदाब, सब्र व शुक्र के आदाब मजालिस में बैठने के आदाब, जुबान के आदाब, गुफ़्तगू के आदाब, असातिजा के आदाब, ज़कात के आदाब, सद्क़ात के आदाब तआल्लुक़ात के आदाब, इन्सानी जिस्म के आज़ा के ज़ाहिरी व बातिनी आदाब वग़ैराह।

एक सूफ़ी का क़ौल है कि नफ़्स को बुरी शहवात से खाली कर देने और क़ल्ब को दुनिया की तलब व रग़बतों से खाली कर देने का नाम तक़्वा है कि तेरा क़ल्ब ग़फ़लत से महफ़ूज़ हो जाये और तेरा नफ़्स बुरी शहवत से महफ़ूज़ हो जाये-

और खुल्क़ मजमूआ़त (तकब्बुर, बुग्ज़, खुदपंसदी, झूठ, रिया, कंजूसी, हसद, ख़्वाहिशाते नफ़्स यानी बुरे अख़लाक़) से महफूज़ हो जाये तो वो साहिबे तक़वा है और तक़वा तीन चीज़ों के जमाअ़ करने का नाम है जो कुछ बन्दे तेरे नसीब में नहीं यानी जो तुझे नहीं मिला तो तेरा तवक्कुल न डगमगाये यानी न मिलने पर तवक्कुल हुस्ने ज़न के साथ क़ायम रहे और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो मिले बन्दा उस पर राज़ी रहे यानी हुस्ने रज़ा के औहदे पर रहे और जो मिला था मगर वो चला गया यानी फ़ौत हो गया तो वो मुकम्मल हुस्ने सब्र पर क़ायम रहे यानी न मिलने पर हुस्ने तवक्कुल हो और मिल जाने पर हुस्ने रज़ा और फ़ौत हो जाने पर हुस्ने सब्र हो जब तीन हुस्न मिल जायें तो उसे तक़वा कहते हैं।

हज़रत जुन्नून मिस्री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि तक़वा ये है कि बन्दे का ज़ाहिर अल्लाह तआ़ला के अहकाम से न टकराये और न तेरे बातिन में ग़फ़लत आये यानी अल्लाह से तआ़ल्लुक़ में ग़फ़लत न आये और बन्दा अल्लाह तआ़ला की ऐसी इताअ़त करे कि उसकी ज़िन्दगी में गुनाह दाख़िल न हो सकें और अपने नफ़्स का तज़किया कर और अपने दिल का तसफ़िया कर और ऐ बन्दे तू अपने बातिन को अल्लाह के लिये इतना खूबसूरत कर ले यानी मुज़य्यन कर ले कि जिस तरह तू अपने ज़ाहिर को मख़लूक़ के लिये आरास्ता करता है।

कुरान मजीद में तक़्वे का इत्लाक़ तीन चीज़ों पर किया गया है। (1) ख़ौफ़ व हैबते खुदावन्दी जैसे " सिर्फ़ मुझसे ख़ौफ़ व डर रखो। (सू०-बक़राह-41) यहाँ डरने से मुराद ताअ़त व इ़बादत है (2) अल्लाह तआ़ला की ऐसी इताअ़त करना कि फिर नाफ़रमानी न हो जैसे "ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरा करो जैसा कि उससे डरने का हक़ है" (सू० -आले इमरान-102) (3) क़ल्ब को गुनाहों से दूर रखना जैसे "जो शख़्स अल्लाह और रसूल की इताअ़त करता है और अल्लाह से डरता है और उसका तक़्वा इख़्तियार करता है पस ऐसे ही लोग मुराद पाने वाले (कामयाब) है। (सू०-नूर-24/52)

-: तक़्वे के दरजात :-

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के सिवा हर चीज़ से बे रग़बती इख़्तियार करे यहाँ तक कि वो जन्नतुल फ़िरदौस से भी बे रग़बती इख़्तियार करे और सिर्फ़ अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से मुहब्बत करे वो शख़्स ज़ाहिद मुत्लक़ है और ये ज़ाहिद का आअ़ला तरीन दर्जा है।

जो शख़्स तमाम दुनियावी लज़्ज़ात से बेरग़बत हो लेकिन उख़र'वी नेअ़मतों मसलन जन्नत और जन्नत की नेअ़मतों व लज़्ज़तों और जन्नत की हूरों व महल्लात व बाग़ात और नहरों और मेवे और फलों बग़ैराह का लालच करे वो भी ज़ाहिद-

है मगर उसका मर्तबा ज़ाहिदे मुत्लक़ से कम है और जो शख़्स दुनियावी लज़्ज़ात में से बाअ़ज़ को तर्क करे और बाअ़ज़ को तर्क न करे मसलन वो मालो दौलत को तर्क करे और मर्तबे व शौहरत को तर्क न करे या खाने पीने में वुसअ़त को तर्क करे लेकिन ज़ीनत व आराइश को न करे तो ऐसे शख़्स को मुत्लक़न ज़ाहिद नहीं कहा जा सकता ज़ाहिदीन में ऐसे शख़्स का वही मर्तबा है जैसे तौबा करने वालों में उस शख़्स का है जो बाअ़ज़ गुनाहों से तौबा करे और बाअ़ज़ से न करे और ममनूअ़ चीज़ों को तर्क करने का नाम तौबा है और ये मुम्किन है कि कोई शख़्स बाअ़ज़ ममनूअ़ चीज़ों को तर्क कर पाता है और बाअ़ज़ चीज़ों को तर्क नहीं कर पाता।

और जो शख़्स ममनूअ़ चीज़ों को तर्क करके मुबाह अशिया को न छोड़े उसे ज़ाहिद नहीं कहा जायेगा अगरचा उसने ममनूआ़त चीज़ों से ज़ुहद इख़्तियार किया हो ज़ुह्द सिर्फ़ गुनाह और जाइज़ अशिया को तर्क कर देने का नाम है जिन को नफ़्स चाहता है और लुत्फ़ अन्दोज़ होता है और ज़ुह्द दुनिया से बे रग़बत होकर आख़िरत की तरफ़ रग़बत करने का नाम है और दुनिया को तर्क करके आख़िरत की तरफ़ माइल होने और गैरुल्लाह को छोड़कर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मतुव्वजै होने का नाम ज़ुह्द है और इनमें दूसरी सूरत ज़ुहद का आअ़ला तरीन दर्जा है ज़ुहद के लिये जिस तरह ये बात ज़रुरी है कि ज़ाहिद जिस

चीज़ की तरफ़ माइल हो वो उसके नज़दीक तर्क कर्दा शैः से बेहतर हो इसी तरह ये भी शर्त है कि ज़ाहिद तर्क कर्दा चीज़ पर क़ादिर हो क्योंकि जो चीज़ इन्सान की कुदरत में ही न हो उसे तर्क करना नामुम्किन है और ज़ाहिद जब उस चीज़ पर कुदरत के बावुजूद तर्क करता है तो फिर ये बात ज़ाहिर होती है कि अब उसे उस चीज़ में रग़बत न रही और जब किसी बन्दे को इस बात का इ़ल्म होता है कि दुनियावी लज़्ज़तें फ़ना होने वाली शैः हैं जबकि उख़र'वी नेअ़मतें दायमी और ग़ैर फ़ानी हैं और आख़िरत की नेअ़मतें व लज़्ज़तें दुनिया की नेअ़मतों व लज़्ज़तों से बेहतर हैं तो वो आख़िरत को दुनिया पर तरजीह देता है और दुनिया की लज़्ज़तों को छोड़ देता है और दुनिया व आख़िरत के इस फ़र्क़ पर इन्सान का जिस क़दर पुख़्ता यक़ीन होता है उसी क़दर वो दुनिया के ऐ़वज़ आख़िरत को हासिल करने की कोशिश करता है यहाँ तक कि वो अपनी जानो माल को आख़िरत के बदले बेच देता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक अल्लाह तआ़ला ने अहले ईमान से उनकी जान और उनके माल उनके लिये (बाअ़दा–ए) जन्नत के ऐ़वज़ ख़रीद लिये हैं अब वो अल्लाह की राह में जंग करते है सो वो (दौराने जंग) क़त्ल करते हैं और (खुद भी) क़त्ल हो जाते हैं फिर ये बयान कर दिया गया कि उनका ये सौदा बहुत ही नफ़अ बख़्श है सो (ऐ ईमान वालो) तुम

अपने सौदे पर खूब खुशियाँ मनाओ जिसके ऐ़वज तुमने (अपनी) जान व माल को बेचा है और यही जबरदस्त कामयाबी है।
(सू०–तौबा–9/111)

पस माअ़लूम हुआ कि ज़ुह्द एक तरह का लेन देन है और अद्ना चीज़ के बदले आअ़ला चीज़ हासिल करने का नाम ज़ुह्द है और ज़ुहद का तसव्वुर उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक कि बन्दा दुनियावी लज़्ज़ात व शहवात और दुनिया की ज़ैबो ज़ीनत और मालो असबाब से बेरग़बती इख़्तियार न करे और अपनी आख़िरत और रब तआ़ला का कुर्ब व रिज़ा हासिल करने की तरफ़ राग़िब न हो।

इस तरह तक़्वा के कई दरजात हैं जैसे कुफ़्र व शिर्क से बचना गुनाहों से बचना शहबात से बचना बिदअ़त से बचना और उस चीज़ से बचना कि माअ़लूम नहीं कि ये गुनाह है या नहीं उसको छोड़ना तक़्वा है फिजूल व लग़वियात को छोड़ना लोगों पर जुल्म व ज़्यादती व ना इंसाफ़ी न करना लोगों की हक़ तल्फ़ी न करना यानी हर वो काम जो बन्दे के हक़ में तकलीफ़ देह है वो न करना उससे बच जाना और दिल के गुनाहों से बचना जैसे लालच, शहवत, हिर्स, अ़दावत, कीना, हसद वग़ैराह जब बन्दे को ये मरातिब हासिल हो जायें तो वो बन्दा मुत्तक़ी है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

उन लोगों पर जो ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे उसमें कोई गुनाह नहीं जो वो (हुक्मे हुरमत के उतरने से पहले) खा पी चुके हैं जबकि वो (बक़िया मुआ़मलात में) बचते रहे और (दीगर अहकामे ईलाही पर) ईमान लाये और आअ़माले सालिहा पर अ़मल पैरा रहे और परहेज़ करते रहे और (उनकी हुरमत पर सिद्क़ दिल से) ईमान लाये और फिर साहिबाने तक़वा हुये और (बिल आख़िर) साहिबाने एहसान (यानी अल्लाह तआ़ला के ख़ास महबूब व मुर्क़रब बन्दे) बन गये और अल्लाह तआ़ला एहसान वालों से मुहब्बत करता है (सू०-मायदा-5/93)

इस आयत में पहले तक़वे से मुराद शिर्क से परहेज़ व ईमान से मुराद तौहीद है दूसरे तक़वे से मुराद बिदअ़त से परहेज़ और इसके मुक़ाबले ईमान से अहले सुन्नत वल जमाअ़त के अ़क़ायद व नज़रियात का इक़रार मुराद है और तीसरे तक़वे से गुनाहों से परहेज़ और इसके मुक़ाबले एहसान से ताअ़त व इस्तिक़ामत मुराद है।

जुह्द की दो क़िस्मे हैं एक जुह्द मक़दूर यानी वो जुह्द जो बन्दे के इख़्तियार में हो वो तीन चीज़ों के मुजमुऐ का नाम है 1- दुनिया की जो चीज़ मौजूद न हो उसकी तलब न करे 2- और जो मौजूद हो उसमें से राहे खुदा में तक़सीम करे 3- दुनिया की चीज़ों का इरादा और उन्हें पसंद करना

तर्क कर दे जिस शख़्स में ये तीन सिफ़ते मौजूद हों वो ज़ाहिद है व दूसरी क़िस्म जुह्द ग़ैर मक़दूर यानी जो बन्दे के इख़्तियार में न हों और जिस बन्दे का दिल अशया के हासिल करने के शौक से सर्द पड़ जाये और दुनिया व असबाबे दुनिया की तलब से दिल का सर्द पड़ जाना हक़ीक़ी जुह्द है

–: जुह्दो तक़्वा की अ़लामात :–

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं जुहद की पहचान एक मुश्किल मुआ़मला है हत्ता कि एक ज़ाहिद के लिये खुद भी अपने को पहचानना दुश्वार होता है अलबत्ता तीन अ़लामत ऐसी हैं जिन पर एतमाद करके जुहद की पहचान की जा सकती है 1- जो मौजूद हो उस पर खुश न होना और जो मौजूद नहीं उस पर ग़मगीन न होना।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है:–
ताकि तुम उस चीज़ पर ग़म न करो जो तुम्हारे हाथ से जाती रही और उस चीज़ पर न इतराओ जो उस (अल्लाह) ने तुम्हें अ़ता की।
(सू०–हदीद–57/23)

बल्कि ज़ाहिद का मुआ़मला इसके बरअ़क्स होना चाहिये कि माल की मौजूदगी पर ग़मज़दा और माल की ग़ैर मौजूदगी पर मसरुर हो ये माल में जुहद की अ़लामत है।

2-ज़ाहिद के नज़दीक ताअ़रीफ़ और मज़म्मत करने वाला बराबर हो ये जाह में ज़ुहद की अ़लामत है

3-ज़ाहिद को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत हो और उसके दिल पर अल्लाह तआ़ला की इ़बादत व इताअ़त की हलावत और मिठास ग़ालिब हो क्योंकि कोई भी दिल मुहब्बत की हलावत से खाली नहीं होता या तो दिल में मुहब्बते दुनिया की हलावत होती है या फिर मुहब्बते इलाही की हलावत जैसे पानी और हवा एक ही बर्तन में जमाअ़ नहीं हो सकते जब बर्तन में पानी दाख़िल होता है तो उसमें से हवा निकल जाती है इसी तरह मुहब्बते इलाही और मुहब्बते दुनिया एक ही दिल में जमाअ़ नहीं हो सकती।

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने रब के साथ मशगूल हो जाता है वो अपने नफ़्स और दुनिया से बे रग़बत और बे नियाज़ हो जाता है और ये आ़रिफ़ीन का मक़ाम है और ज़ाहिद के लिये ये ज़रुरी है कि उसके नज़दीक ताअ़रीफ़ व मज़म्मत व किसी चीज़ का होना या न होना दोंनों बराबर हो जायें और ज़ुहद की इन्तिहां ये है कि वो अल्लाह तआ़ला के सिवा हर चीज़ को तर्क कर दे खुलासा कलाम ये है कि ज़ुहद की अ़लामत ये है कि अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत के ग़लबे के बाइस बन्दे के नज़दीक फ़क़्र व मालदारी, इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत और ताअ़रीफ़ व मज़म्मत सब बराबर

हों और वो दुनिया को तर्क कर दे एक शख़्स ने हज़रत याहया बिन मुआ़ाज़ (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) से अ़र्ज किया कि मुझे तवक्कुल और ज़ाहिदीन की सुहवत में बैठने का शरफ़ कब हासिल होगा तो आपने फ़रमाया ये उस वक़्त होगा जब पोशीदा तौर पर नफ़्सानी मुजाहदात करके तू इस मक़ाम तक पहुँचेगा। कि अगर अल्लाह तबारक व तआ़ाला तीन दिन तक तुम्हें रिज़्क़ अ़ता न फ़रमाये तब भी तुम्हारा यक़ीन कमज़ोर न हो।

ज़िन्दगी में अल्लाह तआ़ाला के अम्र का जो भी फ़ैसला हो जाये उस पर राज़ी रहना और अल्लाह तआ़ाला की हर अ़ता पर उसके शुक्र गुज़ार रहना और अल्लाह तआ़ाला के हर हुक्म पर झुक जाना ये तीन अ़लामतें जमाअ़ हो जायें तो उसे तक़वा कहते हैं और तक़वा तमाम भलाइयों को ख़ज़ाना है तक़वे की हक़ीक़त ये है कि बन्दा रब तआ़ाला के अ़ज़ाब से बचने के लिये अल्लाह की ताअ़त को अपनी ढाल बनाले वो मुत्तक़ी है।

तक़वे की एक ताअ़रीफ़ ये है कि जिन कामों से अल्लाह तआ़ाला ने मनाअ़ फ़रमाया उन कामों से इजतिनाब करे और जिन कामों को करने का अल्लाह तआ़ाला ने हुक्म फ़रमाया है उन कामों को सिद्क़ नीयत व इख़्लास के साथ करना और हर उस काम के लिये कोशिश करना कि जिसमें अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा हो और हर उस काम को छोड़ देना जो अल्लाह तआ़ाला से दूर कर दे।

-: ज़ाहिद की ताअ़रीफ़ :-

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि जुहद दो चीज़ों को चाहता है एक वो जिससे रग़बत को फेरा जाये और दूसरी वो जिसमें रग़बत की जाये और वो पहली चीज़ से बेहतर हो और जिस चीज़ से बे रग़बती की जाये उसका भी किसी न किसी ऐतबार से- मरगूब व मतलूब होना ज़रुरी है जो शख़्स ऐसी चीज़ को तर्क करे जो किसी भी तरह से मतलूब न हो उसे ज़ाहिद नहीं कहा जायेगा क्योंकि मिट्टी पत्थर और इस क़िस्म की दीगर ग़ैर मरगूब और ग़ैर मतलूब चीज़ों को छोड़ने वाला ज़ाहिद नहीं कहलाता बल्कि ज़ाहिद वो होता है जो दिरहम व दीनार को छोड़ता है जबकि मिट्टी पत्थर वग़ैराह इस क़ाबिल ही नहीं कि उसमें रग़बत की जाये और जिस चीज़ में रग़बत की जाये उसके लिये ये शर्त है कि वो उस शख़्स के नज़दीक दूसरी चीज़ से बेहतर हो ताकि उस चीज़ की रग़बत दूसरी चीज़ की रग़बत पर ग़ालिब हो जाये।

कोई शख़्स उस वक़्त तक अपनी चीज़ को नहीं बेचता जब तक उसके ऐ़वज़ मिलने वाली शैः अपनी चीज़ से ज्यादा पसंद न हो तो जो कुछ वो बेच रहा है उस बिकने वाली चीज़ की निस्बत से उसका हाल जुहद कहलाता है और जो कुछ भी वो उस चीज़ के बदले में ले रहा है तो उस बदले की चीज़ की निस्बत से उसकी हालत को रग़बत-

व मुहब्बत कहते हैं।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
और यूसफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के भाईयों ने बहुत कम क़ीमत गिनती के चन्द दिरहमों के ऐ़वज़ बेच डाला चूंकि वो उस (युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम) के बारे में पहले ही से बेरग़बत थे।
(सू०-युसूफ़-12/20)

इस आयते मुबारका में हज़रत युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के भाईयों की ये सिफ़त बयान की गई कि वो युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) से बेरग़बत थे और इस आयत में युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) के भाईयों के वस्फ़ को ज़ुहद से ताअ़बीर किया गया क्योंकि उनकी ये ख़्वाहिश थी कि उनके वालिद हज़रत याअ़कूब (अ़लैहिस्सलाम) की मुहब्बत सिर्फ़ उन्हें हासिल हो और इस ख़्वाहिश की तकमील उन्हें हज़रत युसूफ़ अ़लैहिस्सलाम से ज़्यादा महबूब थी इसलिये इस ख़्वाहिश को पूरा करने की वजह से उन्होने हज़रत युसूफ़ (अ़लैहिस्सलाम) को बेच दिया।

हर वो शख़्स जो आख़िरत के बदले दुनिया को बेचता है तो वो दुनिया से बे रग़बत है और जो शख़्स दुनिया के बदले आख़िरत को बेचता है वो आख़िरत से बे रग़बत है मगर ज़ाहिद का लफ़्ज़ सिर्फ़ दुनिया से बेरग़बत शख़्स के लिये इस्तेअ़माल किया जाता है।

-: तसव्वुफ़ की ताअ़रीफ़ :-

तसव्वुफ़ जुहद की तफ़्सीली व तशरीही एक क़िस्म व शक्ल है और जुहद के बग़ैर न कोई वली हो सकता है न सूफ़ी न आ़रिफ़ हो सकता है तसव्वुफ़ कोई नई या जुहद से मुख़्तलिफ़ चीज़ नहीं है बल्कि जुह्द ऐ़न तसव्वुफ़ है।

हज़रत जुनैद बग़दादी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि तसव्वुफ़ दस माअ़नी पर मुश्तमिल है पहला ये कि दुनिया की हर शैः में कसरत के बजाऐ क़िल्लत पर इक्तिफ़ा करे दूसरा ये कि असबाब पर भरोसा करने की बजाए रब तआ़ला पर भरोसा करे व तीसरा ये कि निफ़्ली ताआ़त के साथ साथ फ़र्ज़ पूरा करने में रग़बत रखे चौथा ये कि दुनिया छूट जाने पर सब्र करे और दस्ते सुवाल व जुबान शिकवा दराज़ न हो पाँचवा ये है कि कुदरत के बावुजूद किसी भी शैः के हुसूल के वक़्त हलाल व हराम की तमीज़ रखे छटा ये कि तमाम मशगूलियत के मुक़ाबले में रब तआ़ला के साथ मशगूलियत रखने को तरजीह दे सातवां ये कि तमाम अज़कार के मुक़ाबले में ज़िक्रे ख़फ़ी को फ़ौक़ियत दे आँठवा ये कि वसवसों के आने के बावुजूद इख़लास को साबित और पुख़्ता रखे व नवां ये कि शक की वजह से यक़ीन को मुताज़लज़िल (जुम्बिश, डगमगाना, लरज़ाँ) न होने दे दसवां ये कि इज़तिराब (बेक़रारी, बेचैनी) और

वहशत (घबराहट, ख़ौफ़) के वक़्त अल्लाह तआ़ला के साथ उन्स व सुकून हासिल करे तो जो शख़्स इन सिफ़ात का हामिल है वो सूफ़ी कहलाने का मुस्तहिक़ है वरना वो काज़िब (झूठा) है।
(हिल्यातुल औलिया–स०–34)

हज़रत जुन्नुन मिस्री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) से सूफ़ी के बारे में सुवाल किया गया तो आपने फ़रमाया कि सूफ़ी वो है कि जब वो बोले तो उसकी ज़ुबान हक़ाइक़ से पर्दा उठाये और अगर वो सुकूत इख़्तियार करे तो उसके आअ़ज़ा दुनिया से तर्के तअ़ाल्लुक़ की गवाही दें और अ़ारिफ़ की हक़ीक़त ये है कि जो अल्लाह अ़ज़्ज़ा व जल को पहचान ले और उसकी माअ़रिफ़त हासिल कर ले और अल्लाह के हर हुक्म पर अ़मल पैरा हो जाये और तमाम नवाही से इजतिनाब करे और मख़लूक़ को अल्लाह तआ़ला की राह की तरफ़ बुलाये और दुनिया को पीछे फेंक दे व ख़्वाहिशात को मशक़्क़त का मज़ा चखाये और अल्लाह तआ़ला के बन्दों के साथ नरम दिली और हुस्ने खुल्क़ व शफ़क़त का मुआ़मला रखे और फ़िक्रे आख़िरत में हर वक़्त लगा रहे और उसके नज़दीक मिट्टी व सोना दोंनों बराबर हो जायें वो तो अ़ज़ीम तरीन सूफ़ी है। (हिल्यातुल औलिया–स०–35)

–: सूफ़ी की हक़ीक़त :–

सूफ़ी की हक़ीक़त ये है कि वो अपने नफ़्स

को ज़िब्हा करने वाला और अपनी ख़्वाहिशात को रुसवा करने वाला होता है और वो अपने दुश्मन शैतान को तकलीफ़ और नुक़सान पहुंचाने वाला होता है व मख़लूक़ को नसीहत करने वाला और वो हमेशा ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला होता है और वो अ़मल में मुस्तहकम होता और वो उम्मीदों व आरज़ुओं से बहुत दूर होता और उसका अज्र ही उसका सरमाया होता है और उसकी ऐशो इशरत उसकी क़नाअ़त में पोशीदा होती है वो नेकी का काश्तकार होता है और मुहब्बत का घना शज़र और वो अपने अ़हद व ईमान पर साबित क़दम रहता है। (हिल्ल्यतुल औलिया-स०-36)

तसव्वुफ़े हक़ीक़ी की बुनियाद ये है कि दुनिया की रंगीनियाँ और उसके धोके से ख़ुद को महफ़ूज़ रखना और अपने नफ़्स को मुजाहिद व मशक़्क़त का दायमी आ़दी बनाना नीज़ वक़्त की हिफ़ाज़त करना व ताअ़ते इलाही को ग़नीमत जानना और राहतो आराम और लज़्ज़त व ऐश की ज़िन्दगी से जुदाई इख़्तियार करना और अपने दिल को यादे ख़ुदा से दूर करने वाली तमाम चीज़ों से अपना दामन छुड़ा लेना और राहे ख़ुदा में मालो मताअ़ ख़र्च करने और ईसार करने को तरजीह देना और अल्लाह व रसूल की इताअ़त को अपना शैवा-ए-ज़िन्दगी बना लेना अगर इन औसाफ़ के साथ ज़मीन और उसकी आबादी उस पर तंग हो जाये तो वो पहाड़ों और जंगलों की तरफ़ निकल जाये। (हिल्यातुल औलिया-स०-37)

-: फ़ना फ़िल्लाह की ताअ़रीफ़ :-

हज़रत जुनैद बग़दादी (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते है कि अल्लाह तआ़ाला का इस दर्जे का इस्तिग़राक़ कि अपना भी होश न रहे वो फ़ना फ़िल्लाह है और फ़ना की तीन क़िस्मे हैं।

1- ये कि तुम अपनी सिफ़ात व अख़लाक़ और मिजाज़ की क़ैद से आज़ाद हो जाओ और इस हालत पर अपने आअ़माल में खूब मेहनत और रियाज़त करो और अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ अ़मल करो और जो कुछ तुम्हारा नफ़्स चाहता है उसके बजाए उसे वो चीज़ दो जिससे वो नफ़रत करता है।

2- ये कि तुम अपने नफ़्स से दस्त बरदार हो जाओ यहाँ तक कि ताअ़त में जो लज़्ज़त एक अ़ाबिद व ज़ाहिद को मिलती है उसका एहसास भी तुमसे जाता हे और तुम खुदा के और सिर्फ़ खुदा के हो जाओ और तुम्हारे और ज़ाते हक़ के दरमियान कोई वास्ता न रहे।

3- और ये है कि तज़ल्लियाते रब्बानी का तुम पर इतना ज़्यादा ग़लबा हो जाये कि तुम्हारे वुजूद की हक़ीक़त तुम्हारे आंखो से ओझल हो जाये तो ऐसी हालत में तुम एक ऐसा वुजूदे फ़ानी हो जाओगे जो वुजूद अब्दी के साथ मुत्तहिद होकर खुद भी अब्दी हो गया हो।

हज़रत गौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते है कि फ़ना की तीन क़िस्मे हैं।

1- ''फ़ना अ़निल ख़ल्क़'' यानी कि तू मख़लूक़ से फ़ना हो जा व उनसे न तो नफ़ा की उम्मीद रख और न नुक़सान का ख़ौफ़ यानी मक़सूद ये है कि तेरी नज़र हक़ तअ़ाला पर हो और मख़लूक़ से नज़रे कुल्ली उठ जाये।

2- ''फना अ़न्निनफ़्स'' यानी तू अपने नफ़्स से फ़ानी हो जा और तेरा नफ़्स अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल के ताबेअ़ हो जाये और ख़्वाहिशाते नफ़्स से फ़ना हो जाये।

3- फ़ना अ़निल इरादति'' यानी तू अपने इरादों से फ़ना हो जाये और तू तक़दीर के सामने ऐसा हो जाये जिस तरह मुर्दा गुस्साल के हाथ में होता कि गुस्साल जिस तरह से चाहता है मुर्दे को उलटता पलटता और मुर्दे की अपनी कोई मर्ज़ी व इरादा नहीं होता।

अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों से मुहब्बत करता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों से मुहब्बत करता है। (सू०–तौबा–9/4)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अल्लाह तआ़ला से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह तआ़ला डरने वाले (परहेज़गारों) के साथ है और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और अपने हाथों खुद को हलाकत में न डालो और एहसान करो (यानी नेकी इख़्तियार करो) बेशक अल्लाह तआ़ला एहसान करने वाले (नेकोकारों) से मुहब्बत करता है। (सू०–बक़राह–194,195)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
उन लोगों पर जो ईमान लाये और नेक अ़मल करते रहे उसमें कोई गुनाह नहीं जो वो (हुक्मे हुरमत के उतरने से पहले) खा पी चुके हैं जबकि वो (बक़िया मुआ़मलात में) बचते रहे और (दीगर अहकामे इलाही पर) ईमान लाये और आअ़माले सालिहा पर अ़मल पैरा रहे और परहेज़ करते रहे और (उनकी हुरमत पर सिद्क़ दिल से) ईमान लाये और फिर साहिबाने तक़वा हुये और (बिल आख़िर) साहिबाने एहसान यानी अल्लाह के ख़ास महबूब व मुर्क़रब बन्दे बन गये और अल्लाह तआ़ला

एहसान वालों से मुहब्बत करता है।
(सू०–मायदा–5/93)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो अपना वाअ़दा पूरा करे और तक़्वा इख़्तियार करे सो बेशक अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों से मुहब्बत करता है। (सू०–आले इमरान–3/76)

जिसे अल्लाह तआ़ला की माअ़इयत और कुर्ब हासिल हो जाये वो अब्दी सआ़दतों से सर बुलन्द हो जाता है और अल्लाह तआ़ला साहिबाने तक़्वा के साथ है और उनसे मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ला का कुर्ब व माअ़इयत उसी को नसीब होती जो हर हाल में तक़्वा इख़्तियार करे और अल्लाह की राह में कसरत से माल ख़र्च करे ताकि उसे अल्लाह तआ़ला तक रसाई हासिल करने में आसानी हो और अपने माल को कारे ख़ैर के तमाम रास्तों में ख़र्च करे जैसे ग़ुरबा मसाकीन और क़रीबी रिश्तेदारों पर ख़र्च करना व उन लोगों पर ख़र्च करना जो इसके मुस्तहिक़ हैं और जिहाद की राह में ख़र्च करना और इन राहों में ख़र्च करना जिहाद बिल माल के ज़ुमरे में आता है।

माली जिहाद फ़र्ज़ है जिस तरह से बदनी जिहाद फ़र्ज़ है व हर ऐसे अ़मल से इअ़राज़ व इजतिनाब करना जो कि अल्लाह व रसूल के नज़दीक ना पसंदीदा अ़मल है और हर उस अ़मल

को बजा लाना जिसका अल्लाह व रसूल ने हमें हुक्म दिया है और एहसान करना और एहसान से मुराद बातिनी आअ़माल हैं जैसे रब तआ़ला की हर इ़बादत व आअ़माल में सिद्क़े नियत और इख़्लास हो और दिल सब कुदूरतों व मैल कुचैल और रियाकारी से पाक हो और दिल दुनिया की हिर्स व तमाअ़ और रग़बत व हसद, बुग्ज़, इ़नाद, कीना और जाहो मन्सब की तलब और दुनियावी लज़्ज़ात व शहवात से खाली हो और उसका दिल अल्लाह तआ़ला के लिये हुस्ने ज़न और तवक्कुल व क़नाअ़त और अल्लाह तआ़ला और आख़िरत पर कामिल यक़ीन रखने वाला हो ये तमाम उमूर बातिनी आअ़माल व एहसान के ज़ुमरे में आते हैं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह एहसान क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया एहसान ये है कि तुम अल्लाह तआ़ला की इ़बादत इस तरह से करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अगर तुम अपने दिल में ये कैफ़ियत पैदा नहीं कर सकते तो फिर ये कैफ़ियत पैदा करो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें देख रहा है।
(बुख़ारी–सहीह–1/108-ह०–50)
(मुस्लिम–सहीह–1/117-ह०–93)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि

जिस शख़्स में ये अ़लामात व औसाफ़ पाये जायें वो कामिल ईमान वाला मुत्तक़ी है कसरते ताअ़त, नफ़्स की शहवतों को दबा कर रखना, नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर ग़ालिब आना और गुस्से व खुशी दोंनों हालतों में इन्साफ़ करना व अल्लाह तआ़ला के अवामिर व नवाही पर मुकम्मल गामज़न रहना और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ और उसकी रहमत की उम्मीद दोंनों का रखना और मुसीबत के वक़्त साबिर और नेअ़मत के मिलने पर शाकिर रहना।

ईमान एक दरख़्त है जिसकी जड़ यक़ीन है और शाख़ें परहेज़गारी है और फूल हया है और फल सख़ावत है और कामिले ईमान शख़्स को अपनी आख़िरत की बड़ी फ़िक्र रहती है कि क़ब्र और क़यामत में उसका क्या हाल होगा और थोड़े से माल पर क़नाअत करना ईमान का सुतून है और जब तक बन्दा उन चीज़ों को महबूब न रखे जो अल्लाह तआ़ला को महबूब हैं और उन चीज़ों को बुरा न जाने जो अल्लाह तआ़ला के नज़दीक बुरी हैं और अपनी खुशहाली को फ़ित्ना और मुसीबत को नेअ़मत ख़्याल न करे तब तक उसका ईमान कामिल नहीं हो सकता और जब तक किसी बन्दे का ईमान कामिल नहीं होता तब तक बन्दा जुहदो तक़वा के मन्सब पर फ़ाइज़ नहीं होता।

कोई शख़्स आख़िरत की इ़ज़्ज़त और मरातिबे आ़लिया को तीन चीज़ों के बग़ैर हासिल नहीं कर

सकता 1- इख़्लासे अ़मल 2- दुनिया की उम्मीदों को छोटा करना 3- तक़्वे को लाज़िम पकड़ना और मुत्तक़ीन में तीन औसाफ़ पाये जाते है 1- नेक कामों में रग़बत 2- गुनाहों से परहेज़ 3- आख़िरत की इस्लाह की फ़िक्र व हिर्स।

जो शख़्स अपने नफ़्स से जिहाद करता है वो ही तक़्वा हासिल करता है और तक़्वा सबसे बेहतरीन साथी है और इन्सान का बुराईयों और गुनाहों से परहेज़ करना नेकियां कमाने से बेहतर है और बेहतर परहेज़गारी ये है कि इन्सान तन्हाई में वो काम न करे जिसे लोगों के सामने करने में शर्म करता है और मोमिन का जमाल परहेज़गारी में है और ज़िन्दगी का जमाल क़नाअ़त शियारी में है और हर उस चीज़ से बचता रहे जो आख़िरत बिगाड़ती हो और दुनिया संवारती हो और जो शख़्स तक़्वे से लिबास से खाली हो वो दुनिया के किसी लिबास से आरास्ता नहीं हो सकता और आख़िरत के लिये तक़्वा व परहेज़गारी को अपना ज़ादे राह और हिदायत को अपना रहबर और कुरान को अपना रफ़ीक़ और एहसान व सख़ावत को अपनी ख़सलत बना।

अल्लाह के महबूब बन्दों पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जो भी (सच्चे दिल से ताअ़लीमाते मुहम्मदी के मुताबिक़) अल्लाह तआ़ला पर और योमे आख़िरत पर ईमान लाये और नेक अ़मल करता रहे तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे। (सू०-मायदा-5/69)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
सुन लो बेशक जो अल्लाह के दोस्त हैं उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।
(सू०-यूनुस-10/62)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
सो जो शख़्स ईमान ले आया और वो (अ़मलन) दुरुस्त हो गया तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वो ग़मगीन होंगे।
(सू०-अनआ़म-6/48)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
पस जो परहेज़गार बन गया और उसने (अपनी ज़ाहिरी व बातिनी) इस्लाह कर ली तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वो ग़मगीन होंगे।
(सू०-आअ़राफ़-7/35)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और नेकोकारों के लिये खुशख़बरी हो कि बेशक जिन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है और फिर उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार की तो उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे यही लोग अहले जन्नत हैं जिसमें वो हमेशा रहेंगे ये उन आअ़माल की जज़ा है जो वो किया करते थे। (सू०-अहक़ाफ़-46/13-14)

अल्लाह तबारक व तआ़ला के परहेज़गार बन्दे जिनके दिल ख़ौफ़े इलाही और मुहब्बते इलाही से लबरेज़ हैं और उनकी फ़िक्र सिर्फ़ फ़िक्रे आख़िरत होती है और उनका हर अ़मल सिर्फ रिज़ाये इलाही और कुर्बे इलाही होता है तो उनके दिल अल्लाह तआ़ला के अनवार से मुनव्वर होते हैं और ऐसे लोग अल्लाह के महबूब बन्दे हैं जिन्हें क़यामत के दिन किसी तरह के ख़ौफ़ ज़दा करने वाले उमूर का सामना नहीं करना पड़ेगा और वो उमूर जो पीछे छोड़ आये हैं उनके बारे में वो ग़मगीन नहीं होंगे और यही वो लोग हैं जिनके लिये निजात व कामयाबी है।

जो शख़्स अल्लाह तआ़ला पर और योमे आख़िरत पर ईमान लाये व नेक आअ़माल करे और परहेज़गारी इख़्तियार करे और अपनी ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह करे और फिर उस पर इस्तिक़ामत हासिल करे पस ऐसे बन्दों के लिये अल्लाह तआ़ला का वाअ़दा है कि अल्लाह तआ़ला

उसे अपनी कुर्बे ख़ास अ़ता फ़रमायेगा जिसका नतीजा ये होगा कि वो दुनिया व आख़िरत में हर क़िस्म के ख़ौफ़ व रंजोग़म से महफ़ूज़ व मामून रहेंगे और उन्हें न आइन्दा का ख़तरा रहेगा न गुज़िश्ता का ग़म होगा और उनकी ये बेख़ौफ़ी व रंजोग़म से आज़ादी उनके लिये अल्लाह तअ़ाला की अ़ज़ीम नेअ़मत होगी जो परहेज़गारों को उनके नेक आअ़माल और तक़्वा के बाइस अ़ता होगी और हर मुत्तक़ी अल्लाह का वली है।

चूँकि विलायत के कई दरजात होते है उनमें से एक ये भी है क्योंकि अल्लाह तअ़ाला ने औलिया अल्लाह के लिये भी 'ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम वला हुम याहज़नून' फ़रमाया और ख़ौफ़ व ग़म से मुत्लक़न आज़ादी ये अल्लाह की बड़ी नेअ़मत है जो अल्लाह तअ़ाला अपने मुन्तख़ब बन्दों को अ़ता फ़रमाता है।

मुत्तक़ीन की अ़लामत ये है कि वो हमा वक़्त अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त व उसके कुर्ब के साथ मशगूल रहते हैं व शरीअ़त के मुताबिक़ नेक कामों को अन्जाम देते हैं और उनका दिल अल्लाह तअ़ाला की मुहब्बत में मुस्तग़रक़ और माअ़मूर रहता है और उनकी तमाम कोशिशें कुर्बे इलाही और रिज़ाये इलाही के लिये होती हैं और वो हुस्ने अदब व हुस्ने खुल्क़ होते हैं और उनका बातिन पाको साफ़ होता है और नफ़्स के ऐतबार से परहेज़गार होते हैं और सख़ावत उनकी फ़ितरत

में शामिल होती है और उनके दिल ज़िक्रे इलाही की कसरत से राहत व सुकून हासिल करते और इनकी तबीअ़त शरीअ़त से आरास्ता रहती है व इनके दिल ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ते हैं और दुनिया के मालो मताअ़ से बिल्कुल बेरग़बत रहते हैं और जब बन्दा तक़्वे के इस मक़ाम पर पहुँचता है तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उस बन्दे को विलायत से सरफराज़ फ़रमाता है।

ऐसे नेक परहेज़गार बन्दो के लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़रमाया कि उन पर न तो कोई ख़ौफ़ होगा न ही वो ग़मगीन होंगे और इस ख़ौफ़ और ग़म का मफ़हूम ये है कि मुस्तक़बिल में उन्हें न अ़ज़ाब का ख़ौफ़ होगा और न मौत के वक़्त वो ग़मगीन होंगे और क़यामत के दिन न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे बल्कि वो अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम और उसकी रहमत के साये में अमनो अमान व सआ़दतों में होंगे और उन्हें दायमी नेअ़मतों वाली जन्नत की खुशख़बरी दी जायेगी जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने उनसे वाअ़दा किया है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

बेशक जिन लोगों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर वो इस पर मज़बूती से क़ायम हो गये तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (और वो कहते हैं) कि तुम ख़ौफ़ न करो और न ग़म करो और तुम जन्नत की खुशियां मनाओ जिसका तुमसे वाअ़दा-

किया जाता था और हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे मददगार हैं और आख़िरत में भी और तुम्हारे लिये वहाँ हर वो नेअ़मत है जिसे तुम्हारा जी चाहे और तुम्हारे लिये वहाँ वो तमाम चीज़ें हाज़िर होंगी जो कुछ तुम तलब करोगे और ये बड़े बख़्शने वाले बहुत रहम फ़रमाने वाले रब की तरफ़ से मेहमानी है।
(सू०–फुस्सिलत/हामीम सज्दा–41/30-32)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(रोज़े क़यामत की) सब से बड़ी हौलनाकी भी उन्हें रंजीदा नहीं करेगी और फ़रिश्ते उनका इस्तिक़बाल करेंगे और कहेंगे यही वो दिन है जिसका तुमसे वाअ़दा किया गया था। (सू०–अम्बिया–21/103)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ हबीब) जिस दिन आप मोमिन और मोमिनात को इस हाल में देखेगें कि उनका नूर उनके आगे और उनकी दांयी जानिब दौड़ रहा होगा (और उनसे कहा जायेगा) तुम्हें बिशारत (खुशख़बरी) हो कि आज तुम्हारे लिये जन्नतें है जिनके नीचे नहरें र'वां है और तुम हमेशा इनमें रहोगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सू०–हदीद–57/12)

परहेज़गार बन्दे अल्लाह तआ़ला से बहुत ज़्यादा डरने वाले होते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ईमान वाले तो सिर्फ़ वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल (उसकी अ़ज़मत व जलाल के तसव्वुर से) ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं और जब उन पर उसकी आयात तिलावत की जातीं (तो वो कलामे महबूब की लज़्ज़त अंगेज़ और हलावत आफ़रीन बातें) उनके ईमान में ज़्यादती कर देती हैं और वो हर हाल में अपने रब पर तवक्कुल करते हैं।
(सू०-अनफ़ाल-8/2)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
अल्लाह तआ़ला ने ही बेहतरीन कलाम नाज़िल फ़रमाया है जो एक किताब है जिसकी बातें (नज़्म व माअ़नी में) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं (व इसकी आयतें) बार बार दुहराई गई हैं जिससे उन लोगों के जिस्मों के रौंगटे खड़े हो जाते है जो अपने रब से डरते हैं फिर उनकी जिल्दें व उनके दिल नरम हो जाते हैं और वो (रिक़्क़त के साथ) अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र की तरफ राग़िब होते हैं
(सू०-ज़ुमर-39/23)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
(ये वो लोग हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब हम

यक़ीनन ईमान ले आये हैं सो हमारे गुनाह मुआ़फ़ फ़रमादे और हमें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ये लोग सब्र करने वाले हैं और क़ौल व अ़मल में सच्चाई वाले हैं और अदब व इताअ़त में झुकने वाले हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले हैं और रात के पिछले पहर उठकर अल्लाह से मुआ़फ़ी मांगने वाले है। (सू०–इमरान–3/16-17)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते और जो लोग (अल्लाह की राह में इतना कुछ) देते जितना वो दे सकते हैं और (इसके बावुजूद) उनके दिल ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं कि वो अपने रब की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं (कि कहीं ये ना मक़बूल न हो जायें) यही लोग भलाइयों (के समेटने में) जल्दी कर रहे हैं और यही (वो लोग हैं जो) इसमें आगे निकल जाने वाले हैं। (सू०–मु–मिनून–23/57-61)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर‘वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि वो लोग नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते और सद्क़ा देते हैं फिर भी वो डरते रहते हैं कि कहीं हमारे आअ़माल नामक़बूल न हो जायें। (इब्ने माजा–सुनन–3/373-ह०–4198) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/736-ह०–3175)

➡ हज़रत उस्मान ग़नी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) जब किसी क़ब्र पर खड़े होते तो रोते थे हत्ता कि उनकी दाढ़ी तर हो जाती थी लोग उनसे कहते थे कि आप जन्नत व दोज़ख़ का बयान करते हैं तो नहीं रोते और क़ब्र देखकर रोते हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है और जिसने इससे निजात पाई उसके लिये बाअ़द की मन्ज़िलें ज़्यादा आसान होंगी और अगर इससे निजात नहीं पाई तो उसके लिये बाअ़द की मन्जिलें ज़्यादा सख़्त होंगी और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने क़ब्र से ज़्यादा कोई हौलनाक चीज़ नहीं देखी (इब्ने माजा–सुनन–3/392-ह०–4267)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/179-ह०–2308)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के चेहरे पर मुसलसल रोने की वजह से दो सियाह लकीरें हो गईं थी। (हिल्लयातुल औलिया–1/62-ह०–132)
(अहमद बिन हम्बल–अज़्ज़ुहद–स०–150)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि मैंने हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पीछे नमाज़ पढ़ी तो तीन सफ़ों तक उनके रोने की आवाज़ पहुँचती थी।
(हिल्यातुल औलिया–1/62-ह०–134)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) कुरान

पढ़ते पढ़ते किसी आयत पर गुज़रते तो उनका गला रुंध जाता और वो इस क़दर रोते कि बेहाल होकर गिर जाते फिर घर में पड़े रहते हत्ता कि लोग उनकी अ़यादत को आते और आपको मरीज़ समझने लगते। (हिल्यातुल औलिया–1/62-ह०–133) (इब्ने अबी शैबा–10/497-ह०–35598)

अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ दो तरह का होता है 1- अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क कर देना 2- अल्लाह तआ़ला के जलाल व उसकी अ़ज़मत और उसकी बेनियाज़ी से डरना तो पहली क़िस्म का ख़ौफ़ अ़ाम मुसलमानों में से परहेज़गारों का होता है और दूसरी क़िस्म का ख़ौफ़ अम्बिया व मुरसलीन और औलिया ए कामिलीन और मुक़र्रब फ़रिश्तों का होता है और जिसका अल्लाह तआ़ला से जितना ज़्यादा कुर्ब होता है तो उसे उतना ही ज़्यादा अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ होता है।

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं तुम सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला हूँ और तुम सबसे ज़्यादा अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त रखने वाला हूँ। (बुख़ारी–सहीह–1/89-ह०–20)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने एक मर्तबा एक दरख़्त पर एक परिन्दे को बैठे हुये देखा तो आपने फ़रमाया ऐ परिन्दे–

तुझे मुबारक हो खुदा की क़सम तेरे लिये कितनी भलाई है कि तू फल खाता है और दरख़्त पर बैठता है तुझ पर न हिसाब है न अ़ज़ाब है खुदा की क़सम मैं पसंद करता हूँ काश मैं एक फल होता जिसे परिन्दे खा लेते या फिर मेरे पास से कोई ऊँट गुज़रता और मुझे खा लेता फिर मुझे मेंगनी बनाकर निकाल देता लेकिन मैं इन्सान न होता। (इब्ने अबी शैबा–10/489-ह०–35573) (किताबुज़्ज़ुहद–इब्ने मुबारक–स०–81 रक़म–240)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने ज़मीन से एक तिन्का उठाकर फ़रमाया कि काश मैं एक तिन्का होता, काश मैं कुछ भी न होता, काश मैं पैदा न हुआ होता, काश मैं भूला बिसरा होता। (इब्ने अबी शैबा–10/503-ह०–35621) (किताबुज़्ज़ुहद–इब्ने मुबारक–स०–89 रक़म–234)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि मुझको कुरान सुनाओ तो फिर मैंने सू०–निसा की आयत सुनाई और जब मैं इस आयत पर पहुँचा ''उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत पर गवाह लायेंगे तो ऐ महबूब हम आपको उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे'' तो मैंने देखा कि आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की आंखो से आंसू जारी थे। (इब्ने माजा–सुनन–3/372-4196) (इब्ने अबी शैबा-–10/484-ह०–35560)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं वो देखता हूँ जो तुम नहीं देखते और मैं वो सुनता हूँ जिनको तुम नहीं सुनते अगर तुम वो जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम थोड़ा हंसते और ज़्यादा रोते और बिछौनों पर तुमको अपनी औ़रतों के साथ मज़ा न आता और तुम अल्लाह तआ़ला से फ़रियाद करते हुये जंगलों में निकल जाते खुदा की क़सम मुझे तो ये आरजू है कि काश मैं एक दरख़्त होता जिसे लोग काट डालते। (इब्ने माजा–सुनन–3/371-ह०–4190)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/181-ह०–2312)
(मुस्लिम–सहीह–6/53-ह०–6119)
(नसाई–सुनन–1/519-ह०–1360)
(बुख़ारी–सहीह–6/75-ह०–6485)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ एक जनाज़े में थे कि आप क़ब्र के किनारे बैठकर रोने लगे यहां तक कि आपके आंसुओं से मिट्टी गीली हो गई फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो इसके लिये तैयारी करो। (इब्ने माजा–सुनन–3/372-ह०–4195)

➡ हज़रत अम्र बिन मैमून (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को आख़िरी अय्याम–

में देखा कि एक अन्सारी नौजवान उनकी ख़िदमत में आया और कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन आपको अल्लाह तअ़ाला की बिशारत से खुश होना चाहिये कि आपको इस्लाम में क़दामत का शरफ़ हासिल है और आप ख़लीफ़ा बने तो अ़द्ल व इन्साफ़ से काम लिया और आपने शहादत पाई ये सुनकर हज़रत उ़मर ने फरमाया काश मैं इनकी वजह से बराबर बराबर पर छूट जाऊँ न मुझे कोई अ़ज़ाब हो और न कोई सवाब मिले।
(बुख़ारी–सहीह–2/138-ह०–1392)

अल्लाह तअ़ाला के नेक बन्दे जो हर वक़्त अल्लाह तअ़ाला से डरते हैं और जब कुरान की आयत को सुनते हैं तो उन पर ख़ौफ़ व हैबत तारी हो जाती है व उनका जिस्म लरज़ने लगता है और ख़ौफ़ के ग़लबे से उनके जिस्म के रौंगटे खड़े हो जाते और ख़ौफ़े खुदा से रौंगटे खड़े होना ये रब तअ़ाला की रहमत के हुसूल का बाइस है।

➡ हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान करते है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब ख़ौफ़े खुदा से किसी बन्दे के जिस्म के रौंगटे खड़े हो जाते हैं तो उसके गुनाह इस तरह झड़ जाते है जिस तरह दरख़्त से पत्ते झड़ते है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–1/468-ह०–803)

अहले ईमान जो तक़्वा इख़्तियार करते हैं

और अपने रब से डरते हैं वो जन्नत के हक़दार हैं और वो हमेशा खुद को गुनाहगार समझते हैं और अपने रब की जब्बारी व कह्हारी से बहुत ज़्यादा डरने वाले होते हैं और वो अपनी नेकियों पर एतमाद नहीं करते बल्कि अपने रब के फ़ज़्लो करम की एतमाद रखते हैं और जो चीज़ अल्लाह तआ़ला से उन्हें दूर करे उस चीज़ से वो किनारा कश रहते हैं और जो चीज़ ग़फ़लत पैदा करे और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत से दूरी का बाइस हो उससे वो इअ़राज़ करते हैं और वो मुसीबत और इ़बादत की मशक़्क़तों पर सब्र करते और रियाज़त और मुजाहदा के ज़रिये अपने नफ़्स को शर व बुराई से रोकते हैं और वो अपने क़ौल और वाअ़दे में सच्चे हैं और वो अल्लाह व रसूल के इताअ़त गुज़ार बन्दे होते हैं उनका हर अ़मल इत्तेबाअ़े सुन्नत होता है और वो राहे खुदा में अपना माल ख़र्च करते हैं और अल्लाह तआ़ला और बन्दो के हुक़ूक़ अदा करने में कोताही नहीं करते और रब तआ़ला की बारगाह में तौबा इस्तिग़फ़ार करते हैं।

हर ज़ाहिद इ़बादत गुज़ार का ये माअ़मूल होता है कि वो हमेशा इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं और अपने नेक आअ़माल पर कभी तकब्बुर और फ़ख़्र नहीं करते बल्कि अपने नेक आअ़मालों को अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ और नेअ़मत ख़्याल करते हैं और अपने रब के फ़ज़्ल व करम के मुतमन्नी रहते हैं और उसी ज़ाते पाक से उम्मीद रखते हैं।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम में किसी शख़्स को उसका अ़मल हरगिज़ निजात नहीं देगा एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप को भी नहीं तो आपने फ़रमाया नहीं मगर ये कि अल्लाह तआ़ाला मुझे अपनी रहमत से ढांप लेगा।
(मुस्लिम–सहीह–6/372-ह०–7113)

हज़रत इमाम गज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते है कि सलफ़े सालिहीन दिन रात इ़बादत करते थे और वो जो भी अ़मल करते थे उनके दिल में ख़ौफ़े खुदा रहता था कि उन्हें अपने रब के पास लौट कर जाना है वो दिन रात नेक अ़मल और इ़बादत में गुज़ारने के बावुजूद अपने नुफ़ूस के बारे में ख़ौफ़ ज़दा रहते थे और वो ज़्यादा तक़वा भी इख़्तियार करते थे वो ख़्वाहिशात व शुबहात से बचते थे इसके बावुजूद वो तन्हाई में अपने नुफ़ूस के लिये रोते थे।

लेकिन आज हालात ये हैं कि लोग मुतमइन और खुश और बेख़ौफ़ है जबकि वो कसीर गुनाहों के मुरतकिब हैं और वो दुनिया के तालिब व हरीस हैं और उनके अ़मल सिर्फ़ दुनिया व दुनिया वालों के लिये होते हैं और उन्होंने अल्लाह तआ़ाला से मुंह फेर रखा है उनके काम अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी और जाहलियत व शैतानियत वाले हैं लेकिन फिर भी वो अल्लाह तआ़ाला के फ़ज़्ल व–

करम पर कामिल यक़ीन और उम्मीद रखते हैं कि अल्लाह तआ़ाला उनकी मग़फ़िरत फ़रमायेगा गोया उनका गुमान ये है कि उन्होंने जिस तरह अल्लाह तआ़ाला के फ़ज़्लो करम की माअ़रिफ़त हासिल की है उस तरह अम्बिया किराम और सहाबा किराम और पहले के बुजुर्गो को भी हासिल न थी अगर ये बात महज़ तमन्ना और आसानी से हासिल हो जाती तो उन अम्बिया किराम व सहाबा किराम और बुजुर्गो के रोने व ख़ौफ़ खाने और ग़मगीन होने का क्या मलतब था।

जबकि हक़ीक़त ये है कि हमें अल्लाह तबारक व तआ़ाला पर हुस्ने ज़न रखना और रहमत और मग़फ़िरत की उम्मीद रखना और इसके साथ साथ अल्लाह तआ़ाला का ख़ौफ़ भी रखना चाहिये कि अगर अल्लाह तआ़ाला ने अ़द्ल किया तो हमारे पास कोई भी नेकी बाक़ी नहीं रहेगी और हमेशा अपने ईमान के ज़वाल व हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इ़बाद के अदा करने में हुई कोताही से भी ख़ौफ़ ज़दा रहना चााहिये।

जो लोग ईमान लाये और तक़वा इख़्तियार किया और अपने तमाम अक़वाल और अफ़आ़ल व अहवाल में इख़लास रखते हैं और नेक अ़मल करते फिर भी वो अल्लाह तआ़ाला का ख़ौफ़ रखते हैं कि उन्हें अपने रब के सामने हाज़िर होना है और वो अपने आअ़माल रब तआ़ाला के सामने पेश किये जाने से डरते हैं कि उनके अ़मल उन्हें

अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से निजात दिलाने के क़ाबिल नहीं हैं यही वजह उन्हें अल्लाह तआ़ला के क़रीब कर देती है व उनका इरादा उन्हीं कामों में मर्सरुफ़ रहता है जो उन्हें अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से निजात दिलाने वाले हैं और वो अल्लाह तआ़ला के कुर्ब के लिये सबक़त करने की कोशिश करते रहते हैं।

जिस शख़्स के दिल में अपने रब का ख़ौफ़ कामिल दर्जे का होता है तो वो दुनिया में अल्लाह तआ़ला के नाराज़ होने और आख़िरत में अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से इंतिहाई ख़ौफ़ ज़दा होता है जिस शख़्स का ये हाल होगा वो अल्लाह तआ़ला की नाफ़रमानी से बहुत दूर होता है हज़रत हसन बसरी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि मोमिन नेकी करने के बावुजुद अल्लाह तआ़ला से डरता है जबकि मुनाफ़िक़ कसीर गुनाह करने के बावुजूद अल्लाह तआ़ला से बे ख़ौफ़ रहता है।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला का ख़ौफ़ आ़रिफ़ों की चादर है और यक़ीन उनकी सिफ़त है और बन्दे के पास माल व औलाद के ज़्यादा होने में कोई ख़ैर और खूबी नहीं बल्कि ख़ैर व खूबी इसमें है कि बन्दे के अ़मले सालेह ज़्यादा हों और उसमें तक़्वा व बुर्दबारी (तहम्मुल) ज़्यादा हो और वो अपने गुनाहों के सिवा किसी से भी न डरे और वो अपने नफ़्स के सिवा किसी को मलामत न करे और बन्दे की

बेहतरीन ख़सलतें ये हैं हुस्ने अदब व हराम और गुनाहों के कामों से इजतिनाब, हिल्म, (नरम दिली बुर्दबारी) तवाज़ोअ़, सख़ावत, संजीदगी और पाक दामनी, ईसार, रहम दिल, हुस्ने अ़मल, हुस्ने ज़न, हुस्ने जुहद, हुस्ने खुल्क़ व अपने नफ़्स से जिहाद वग़ैराह हैं और जुहदो तक़्वा मोमिन की ज़ीनत है और इ़बादत की ज़ीनत खुशुअ़ व खुजुअ़ है और हिल्म व संजीदगी इ़ल्म की ज़ीनत है।

जुहद एक ऐसा मक़ाम व मर्तबा है जो नेक लोगों का कमाल है और ऐसा शख़्स मुक़र्बीन में से होता है और जो शख़्स दुनिया में जुहद इख़्तियार करता है तो वो दुनिया से बेरग़बती व अपनी आख़िरत को बेहतर बनाने और अल्लाह तआ़ला का कुर्ब व रिज़ा हासिल करने में मशगूल हो जाता है और दुनिया से सिर्फ़ उतना ही हिस्सा लेता है जितना कि उसे अपनी ज़िन्दगी को बसर करने के लिये बहुत ज़रुरी होता है जैसे इन्सान के पास बहुत ज़्यादा पानी हो लेकिन वो पीने के लिये सिर्फ़ उतना ही लेता है जितना पानी उसकी प्यास बुझा दे उससे ज़्यादा पानी वो चाहकर भी नहीं पी सकता इसी पानी की मिस्ल दुनिया और मालो मताअ़ है कि ज़रुरत के मुवाफ़िक़ दुनिया व मालो मताअ़ को हासिल करे और बाक़ी को छोड़ दे और जुहदो तक़्वा की हक़ीक़त ये है कि बन्दे के नज़दीक माल और पानी एक जैसे हों।

अल्लाह तआ़ला के नज़दीक अह्ले तक्वा मुअ़ज़्ज़ज़ व मुकर्रम होते हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुममें से ज़्यादा बाइज़्ज़त वो है जो तुममें ज़्यादा परहेज़गार है। (सू०–हुजुरात–49/13)

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इज़्ज़त व फ़ज़ीलत का मदार माल व असवाब और नसब नहीं है बल्कि तक्वा और परहेज़गारी है और जो शख़्स तक्वा व परहेज़गारी इख़्तियार करता है तो उसे अल्लाह तआ़ला की बारगाह में इज़्ज़त व फ़ज़ीलत नसीब होती है।

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो अल्लाह तआ़ला ने तुमसे अय्यामे जाहलियत का गुरुर और एक दूसरे के खानदानी फ़ख़्र को दूर कर दिया है और अब सिर्फ़ दो क़िस्मों के लोग हैं एक वो शख़्स जो नेक और मुत्तक़ी है जो कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में मुअ़ज़्ज़ज़ है और दूसरा वो शख़्स जो कि फ़ाजिर व गुनाहगार और बद बख़्त है जो अल्लाह तआ़ला की बारगाह में ज़लील व ख़्वार है
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/815-ह०–3270)
(अबू दाऊद–सुनन–4/827-ह०–5116)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर‘वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब क़यामत का दिन होगा तो बन्दों को अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा किया जायेगा इस हाल में कि वो ग़ैर मख़्तून होंगे और उनकी रंगत सियाह होगी फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मेरे बन्दो मैंने तुम्हें हुक्म दिया तो तुमने मेरे हुक्म की नाफ़रमानी की और तुमने अपने नस्बो को बुलन्द किया और इसी के सबब तुम एक दूसरे पर फ़ख़्र करते रहे आज के दिन मैं तुम्हारे नसबों को हक़ीर व ज़लील क़रार देता हूँ और मै ही ग़ालिब हुक्मरान हूँ फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कहाँ हैं मुत्तक़ी लोग कहाँ हैं मुत्तक़ी लोग बेशक अल्लाह तआ़ला के यहां तुममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो तुममें ज़्यादा परहेज़ गार है। (कंज़ुल उ़म्माल–2/62-ह०–5643)
(तारीख़ बग़दाद–13/246-ह०–6125)

इज़्ज़त का मेआ़र तक़वा है और जो शख़्स सबसे ज़्यादा अल्लाह व रसूल की इताअ़त करने वाला हो और गुनाहों से रुक जाने वाला हो और अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा डरने वाला हो और जो सबसे ज़्यादा इत्तेबाअ़े सुन्नत पर अ़मल पैरा हो वो सबसे ज़्यादा तक़वा शिआ़र है।

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया–

कि कौन सा शख़्स अफ़ज़ल है तो आपने फ़रमाया कि वो मोमिन जो दिल का साफ़ और ज़बान का सच्चा हो अ़र्ज किया गया साफ़ दिल वाले से क्या मुराद है तो आपने फ़रमाया वो मुत्तक़ी परहेज़गार मुख़लिस शख़्स कि जिसके दिल में ख़्यानत, धोका, बग़ावत, बुग्ज़ व हसद और दिल में गुनाह न हो फिर अ़र्ज़ किया गया कि ऐसे शख़्स के बाद कौन अफ़ज़ल है आपने फ़रमाया वो शख़्स जो दुनिया से नफ़रत और आख़िरत से मुहब्बत करता हो। (इब्ने माजा–सुनन–3/377-ह०–4216)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवयत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अबू बक्र तू तक़्वा इख़्तियार कर तू सबसे ज़्यादा आ़बिद होगा और तू क़नाअ़त कर तू सबसे ज़्यादा शाकिर होगा और तू लोगों के लिये वही चाह जो अपने लिये चाहता है तो तू मोमिन होगा और जो तेरा हम साया हो उससे नेक सुलूक कर तो तू मुसलमान होगा और अपनी हंसी को कम कर क्योंकि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/377-ह०–4217)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि तदबीर के बराबर कोई अ़क़्लमंदी नहीं और कोई परहेज़गारी इसके मिस्ल नहीं है कि हराम से बाज़ रहे। (इब्ने माजा–सुनन–3/277-ह०–4218)

परहेज़गारों के लिये निजात और कामयाबी है

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करता है और अल्लाह से डरता है और उसका तक़्वा इख़्तियार करता है पस ऐसे ही लोग निजात पाने वाले है। (सू०–नूर–24/52)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और अल्लाह ऐसे लोगों को जिन्होंने परहेज़गारी इख़्तियार की उन्हें कामयाबी के साथ निजात देगा न उन्हें कोई बुराई पहुँचेगी और न ही वो ग़मगीन होंगे। (सू०–जुमर–39/61)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और हमने उन लोगों को निजात बख़्शी जो ईमान लाये और परहेज़गारी करते हैं।
(सू०–फुस्सिलत–41/18)

वो लोग जिन्होंने नेक आअ़माल के ज़रिये अपने ईमान में मज़ीद तरक़्क़ी और अल्लाह व रसूल की इताअ़त व इत्तेबाअ़े सुन्नत पर ग़ामज़न रहे और जिनके क़ल्बो बातिन ख़ौफ़े खुदा और रियाज़त के सबब मुज़क्का व मुसफ़्फ़ा हो गये फिर वो मन्सबे तक़्वा पर फ़ाइज़ हुये तो ऐसे ही लोग निजात पाने वाले कामयाब बन्दे हैं और यही लोग इताअ़ते

इलाही व इताअ़ते रसूल और तक़्वा-ए-इलाही व ख़शीअ़ते इलाही के जामेअ़ है व यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं और असबाबे अ़ज़ाब को तर्क करके उससे निजात हासिल करके और अज्रो सवाब के असबाब इख़्तियार करके और उसकी मन्ज़िल तक पहुँचकर वो लोग कामयाब हो गये पस कामयाबी उन्हीं के लिये मख़सूस है जो कोई इन लोगों के औसाफ़े हमीदा से मुत्तसिफ़ हो जायें।

जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) का ताबेअ़ फ़रमान बन जाय और उसे जो हुक्म मिले उसे बजा लाये और जिस चीज़ से रोका जाये तो रुक जाये और जो गुनाह हो जाये उससे ख़ौफ़ खाता रहे और आइन्दा गुनाहों से बचने का क़सद करे और तौबा इस्तिग़फ़ार करे और अपने नफ़्स और बातिन को शर व बुराई से पाको साफ़ रखे और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी न करे और दुनिया से बेरग़बती और आख़िरत की तरफ़ राग़िब हो जाये और क़ुर्बे इलाही के हुसूल को अपना सबसे बड़ा मक़सद और उसके लिये कोशिश करे तो ऐसे ही लोग मुत्तक़ी व परहेज़गार हैं और तमाम भलाईयों को समेटने वाले और दुनिया व आखिरत में वो कामयाब और निजात याफ़्ता हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और तुममें से हर एक शख़्स का दोज़ख़ पर से गुज़र होने वाला है (और) ये (बाअ़दा) क़तई तौर

पर आपके रब के ज़िम्मे है जो ज़रुर पूरा होकर रहेगा फिर हम परहेज़गारों को निजात देंगे और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देगे। (सू०-मरयम-19/72)

मुत्तक़ी व परहेज़गार लोगों के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं जैसे अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी लोगों को पसंद फ़रमाता है और क़यामत के दिन मुत्तक़ी व परहेज़गारों को मेहमान बनाकर अल्लाह तबारक व तआ़ला की बारगाह में हाज़िर किया जायेगा और अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों का दोस्त और मददगार है और ये लोग रोज़े क़यामत अमन व अमान और मसर्रतों में होंगे और दायमी नेअ़मतों वाली जन्नत में दाख़िल किये जायेंगे और जन्नत परहेज़गारों के लिये ही तैयार की गई और तक़वा फ़ज़ीलत हासिल होने का सबब है।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम्हारा रब एक है और तुम्हारा बाप एक है और अ़रबी को अजमी पर और अजमी को अ़रबी पर और गोरे को काले पर और काले को गौरे पर कोई बरतरी व फ़ज़ीलत हासिल नहीं है मगर तक़वे के साथ फ़ज़ीलत है।
(तबरानी-मुअ़जम औसत-3/625-4749)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया गोरे लोग काले लोगों से अफ़ज़ल नहीं हैं मगर ये कि तुम तक़्वा में उससे बढ़ जाओ। (कंजुल उ़म्माल–2/61-5632)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इ़ज़्ज़त तक़्वा में है और शराफ़त तवाज़ोअ़ में है और यक़ीन बेपर'वाही में है यानी अगर किसी वक़्त कुछ न हो तो कोई परेशानी न हो। (कंजुल उ़म्माल–2/62-ह०–5637)

➡ इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िरत का बेहतरीन तोशा तक़्वा है। (कंजुल उ़म्माल–2/62-ह०–5635)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसे तक़्वा नसीब हुआ तो उसे दुनिया व आख़िरत की भलाई मिली (कंजुल उ़म्माल–2/62-ह०–5641)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अ़र्ज़ किया गया कि वो कौन सी चीज़ है जिसकी बिना पर लोग जन्नत में जायेंगे तो आपने फ़रमाया कि तक़्वा और हुस्ने अख़लाक़ (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/333-ह०–7919)

हज़रत सालेह बिन याअ़कूब (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला के फ़रमां बरदार बन्दों से क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तुमने मेरी मुहब्बत को दुनिया की शहवात व लज़्ज़ात पर तरजीह दी सो आज तुम मेरे पास हर तरह की ख़्वाहिशात की तकमील कर सकते हो और मेरी कुर्बत में खुश रहो और ऐशो इशरत में ज़िन्दगी बसर करो और मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैंने बहिश्तों को सिर्फ़ तुम्हारी ख़ातिर पैदा फ़रमाया है।
(हिल्यातुल औलिया–9/199-13923)

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मेरी ज़ात की क़सम जो लोग मेरी ख़ातिर मशक़्क़ते, तकलीफ़े बर्दाश्त करते हैं वो मेरी पनाह में आ चुके हैं और मेरे दायमी बाग़ात में मज़े ले रहें पस नेक आअ़माल की तरफ़ हमातन मुतव्वजे रहने वाले खुश हो जायें और क्या तुम ये समझते हो कि उनके आअ़माले सालेहा को मैं ज़ाया कर दूँगा ऐसा नहीं है बल्कि मैं तो उन इअ़राज़ करने वालों पर भी सख़ावत करता हूँ तो फिर उन बन्दो के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है जो हमातन मेरी तरफ़ मुतव्वजे रहते हैं।
(हिल्यातुल औलिया–9/199-13924)

परहेज़गारों को नूर व रहमत और मग़फ़िरत व अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

ऐ ईमान वालो अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो और उसके रसूल पर ईमान ले आओ वो तुम्हें अपनी रहमत के दो हिस्से अ़ता फ़रमायेगा और तुम्हारे लिये नूर पैदा फ़रमा देगा जिसमें (दुनिया व आख़िरत में तुम) चला करोगे और वो तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमां देगा और अल्लाह तआ़ला बहुत बख़्शने वाला और बहुत रहम फ़रमाने वाला है। (सू०-हदीद-57/28)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अल्लाह तआ़ला ने जिस शख़्स की सीना इस्लाम के लिये खोल दिया तो वो अपने रब की तरफ़ से नूर पर (फ़ाइज़) हो जाता है पस उन लोगों के लिये हलाकत है जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से (महरुम होकर) सख़्त हो गये हैं यही लोग खुली गुमराही में हैं। (सू०-जुमाअ़-39/22)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

पस ऐ ईमान वालो अगर तुम अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करोगे तो वो तुम्हारे लिये हक़ व बातिल में फ़र्क़ करने वाली हुज्जत (व हिदायत) मुक़र्रर फ़रमां देगा और वो तुम्हारे गुनाहों को मिटा देगा और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमां देगा और अल्लाह-

तआ़ला बड़ा फ़ज़्ल वाला है।
(सू०–अनफ़ाल–8/29)

जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये और गुनाहों से बचते रहे और इत्तेबाअ़े शरीअ़त पर अ़मल पैरा रहे और वो अल्लाह तआ़ला से डरते रहे और तक़्वा इख़्तियार किया उनके दिल में अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नूर दाख़िल होता है फिर उस दिल में वुसअ़त हो जाती है और फिर उनका दिल नूर और बसीरत से रौशन हो जाता है और फिर वो बन्दा उस नूर और बसीरत की आंख से हक़ और बातिल में इम्तियाज़ करता है और अल्लाह तआ़ला का कुर्ब और आख़िरत की तरफ़ मुतव्वजे होता है और दुनिया से बे रग़बत और मौत आने से पहले उसकी तैयारी में लग जाता है और ऐसे परहेज़गारों से अल्लाह तआ़ला का वाअ़दा है कि वो उन्हें अपने फ़ज़्ल व रहमत से बहरावर फ़रमायेगा व उनके गुनाहों को बख़्श देगा और उनकी मग़फिरत फ़रमायेगा और इसके अ़लावा उनके लिये बेशुमार अज्र व इनाअ़मात और मरातिब व दरजात उन्हें अ़ता किये जायेंगे।

वो शख़्स जिसका सीना अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम के लिये खोल दिया हो और उसमें अल्लाह तआ़ला के अहकाम को कुबूल करने और उन पर अ़मल पैरा होने के लिये वुसअ़त हो और वो राहे बसीरत और राहे हिदायत पर ग़ामज़न हो तो वो अपने रब की तरफ़ से नूर पर फ़ाइज़ होता है।

और वही शख़्स कामयाब व कामरान है और वो ही आख़िरत में बुलन्द मरातिब और दरजात का हामिल होगा यहाँ इस्लाम के लिये सीना खोलने मुराद ये है कि अल्लाह तअ़ाला ने इस्लाम के अहकाम कुबूल करने की उसके दिल में मुकम्मल इस्तिअ़दाद (लियाक़त, क़ाबलियत) पैदा कर दी हो और जिस फ़ितरत पर इन्सान को पैदा किया गया है उसमें वो फ़ितरत सहीह व सालिम मौजूद हो और उसकी ग़लत रविश की वजह से वो फ़ितरत ज़ाया न हुई हो तो वो अपने रब की तरफ़ से नूर पर फ़ाइज़ हो जाता है और उसे रब तअ़ाला की ज़ात व सिफ़ात की माअ़रिफत हासिल हो जाती है

फिर उसके दिल में ख़ौफ़े खुदा व इ़बादात और अहकामे इलाही की इताअ़त पैदा होती है और जब उसका नूर क़वी हो जाता है तो फिर वो दूसरों पर भी असर डालता है और उसकी मजालिस में बैठने वालों और उसकी गुफ़्तगू सुनने वालों के दिलों में भी अल्लाह तअ़ाला का ख़ौफ़ और उसकी इ़बादात और उसके अहकाम की इताअ़त का ज़ौक़ व शौक़ पैदा हो जाता है जब लोग किसी का सुर्ख, गोरा व सफ़ेद चेहरा देखते हैं तो कहते है कि फ़ुंला का चेहरा बड़ा नूरानी है ये नूर का मेअ़ार नहीं है बल्कि नूर का मेअ़ार ये है कि जिसको देखकर खुदा याद आ जाये जिसकी बात सुनकर दिल में रिक़्क़त पैदा हो या जिसकी सीरत व किरदार देखकर दिल में अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त और उसकी इ़बादत का ज़ौक़ व शौक़

और जज़्बा पैदा हो तो उस शख़्स में अल्लाह का नूर है।

नूर का एक मेअ़ार और भी है कि बन्दा कसरत से नेक अ़मल करे और शर व गुनाहों से इज्तिनाब करे तो उसके चेहरे पर सादगी व भोला पन ज़ाहिर होता है और उसका चेहरा बा रौनक़ होता है तो ये नूर के आसार में से एक असर है लेकिन अस्ल नूरानियत ये है कि बन्दे पर अल्लाह की इ़बादत व इताअ़त और ख़ौफ़े खुदा का ग़लबा हो और वो हर उन उमूर से बचता हो जो यादे इलाही से ग़ाफ़िल करने वाले हों और वो जब भी बात करता तो अल्लाह और रसूल व दीन इस्लाम और अहकामे शरीअ़त की बात करता हो और वो फ़िजूल बातों से परहेज़ करता हो और वो कम हंसता और ज़्यादा रोता हो और उसकी मजालिस में सिर्फ़ अल्लाह व रसूल और अहकामे शरीअ़त की बातें होती हों और वो दुनिया को ज़लील और हक़ीर समझता हो और लोगों को ख़ौफ़े खुदा और अ़ज़ाबे आख़िरत से डराता हो और वो खुद भी डरता हो तो ऐसे शख़्स का नूर दरअस्ल अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ये उसके दिल का अस्ल व हक़ीक़ी नूर है जो कि दूसरों के दिलों को भी यादे खुदा से रौशन करता है।

बन्दा जिस क़दर इ़बादत व रियाज़त में क़वी होता जायेगा तो उसी क़दर उसका नूर भी क़वी होता जाता है आ़म मामिनों का नूर चिराग़-

की तरह और औलिया अल्लाह का नूर सितारों की तरह और इनमें जो आअ़्ला व अरफ़ाअ़् दरजात के हामिल हैं उनका नूर चांद की तरह है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का नूर सूरज की तरह बल्कि आप सरापा नूर हैं और आपका नूर सूरज से बुहत ज़्यादा क़वी है और आपके नूर का फ़ैज़ान नबीयों व रसूलों और वलीयों व अ़ाम मोमिनो पर है और हर साहिबे हिदायत को इसी नूर से ही हिदायत और अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त हासिल होती है।

➡हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिसको हिदायत देने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये खोल देता है फिर उस सीने के अन्दर अल्लाह का नूर दाख़िल होता है और उसका सीना कुशादा हो जाता है और वो धोके वाले घर यानी दुनिया से अ़लैहदगी इख़्तियार करता और हमेशगी वाले घर यानी आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़ व इनाबत करता है और मौत आने से पहले मौत के लिये तैयारी करता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/310-ह०–10552)

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मूसा (अ़लैहिस्सलाम) को वही फ़रमाई कि ऐ–

मूसा मैंने ज़ाहिदों के लिये जन्नत तैयार की यहाँ तक कि वो जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें और वो परहेज़गार जो हराम उमूर से परहेज़ करते हैं तो क़यामत के दिन मैं परहेज़गारों से कोई हिसाबो किताब नहीं लूँगा क्योंकि मैं उनसे शर्म व हया करता हूँ और मैं उनको इ़ज़्ज़त दूँगा और जो लोग मेरे ख़ौफ़ से रोने वाले हैं तो उनके लिये रफ़ीक़े आअ़ला है कि उस मक़ाम में कोई दूसरा दाख़िल न होगा (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/305-ह०–10527)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि कौन सी चीज़ है जिस की बिना पर ज़्यादा लोग जन्नत में जायेंगे तो फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तक़्वा और हुस्ने अख़लाक़। (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/333-ह०–7919)

जिस बन्दे में ये तीन औसाफ़ जमाअ़ हो जायें तो वो ज़ाहिद व मुत्तक़ी है और उसका ईमान ईमाने कामिल है एक ये कि जो शख़्स अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ रुजूअ़ करे और अपनी आख़िरत की तरफ़ राग़िब रहने वाला हो तो फिर ज़ाहिर है कि उसके दिल में आख़िरत का ख़ौफ़ होगा और वो अल्लाह तअ़ाला व आख़िरत के ख़ौफ़ की वजह से कसरत से नेक आअ़माल और शर व गुनाह से परहेज़ भी करता होगा व आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला और इताअ़ते इलाही व इत्तेबाअ़े

सुन्नत पर भी अ़मल पैरा भी होगा और दूसरा ये कि जो शख़्स दुनिया से बे रग़बत होता है तो उसके दिल से माल व असबाब की तलब व हिर्स और लालच निकल जाता है और फिर वो थोड़ी सी चीज़ पर किफ़ायत व क़नाअ़त करता है और दुनिया से सिर्फ़ उतना ही हिस्सा लेता है जिससे उसकी हयात बाक़ी रहे और दुनिया व आख़िरत की मिसाल यूँ है कि दुनिया व आख़िरत एक नदी के दो किनारे हैं जो शख़्स आख़िरत वाले किनारे के जितना क़रीब होता जायेगा तो वो दुनिया वाले किनारे से उतना ही दूर होता जायेगा और जो शख़्स दुनिया वाले किनारे के जितना क़रीब होता जायेगा तो वो आख़िरत वाले किनारे से उतना ही दूर होता जायेगा यानी जो शख़्स अपनी आख़िरत का जितना ज़्यादा तालिब होगा और उसकी तरफ़ जिस क़दर रुजूअ़ करेगा तो वो दुनिया से उसी क़दर दूर हो जाता है।

तीसरा ये कि जो मौत से पहले मौत की तैयारी करता है तो ज़ाहिर है कि उसे मौत की फ़िक्र रहती है तो वो कसरते नेक आअ़माल के ज़रिये उसकी तैयारी में हमा वक़्त रहता है ताकि उसके नेक आअ़माल सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह हो जायें और वो शर व गुनाह से भी इस तरह बचता है जिस तरह कोई ख़तरनाक जानवर से खुद को बचाता है कि अगर उसने अपने काबू में ले लिया तो वो मुझे ज़िन्दा खा जायेगा और जब बन्दे के अन्दर मज़कूरा औसाफ़ आ जाते है तब–

उसके दिल में नूरे इलाही दाख़िल हो जाता है बन्दे का तक़्वा इख़्तियार करना उसके लिये बहुत भलाई और अ़ज़ीम सआ़दत का मक़ाम है और फ़लाह व कामयाबी की अ़लामत है और दुनिया व आख़िरत की भलाईयों का दारोमदार तक़्वे पर रखा गया है तो जो शख़्स तक़्वा इख़्तियार करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे कुछ खुसूसी नेअ़मतें अ़ता फ़रमाता है जो हर किसी को नहीं मिलतीं 1- उसका दिल अल्लाह के नूर से मुनव्वर होता है 2- अल्लाह तआ़ला का उस पर ख़ास फ़ज़्लो करम होता है 3- और अल्लाह तआ़ला उसकी मग़फ़िरत फ़रमाता है 4- और अल्लाह तआ़ला उसे इ़ल्म व हिदायत अ़ता फ़रमाता है 5- अल्लाह तआ़ला की बारगाह में वो बा इ़ज़्ज़त होता है 6- और अल्लाह तआ़ला उससे मुहब्बत फ़रमाता है।

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब ईमान दिल में दाख़िल होता है दिल खुल जाता है और उसमें इन्शिराह पैदा हो जाता है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया ये शराह क्या है तो आपने फ़रमाया ये एक नूर है जो दिल में उतर जाता है तो दिल खुल जाता है और फिर आपने ये आयत तिलावत फरमाई ‘‘पस अल्लाह तआ़ला जिसको हिदायत देने का इरादा फ़रमाता है तो उसका सीना इस्लाम के लिये कुशादा फ़रमां देता है’’ (अनआ़म–6/125) लोगों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह इसकी कोई

अ़लामत है जिसके ज़रिये इसे पहचाना जा सके तो आपने फ़रमाया इसकी अ़लामत आख़िरत की तरफ़ रुजूअ़ और धोके वाले घर दुनिया से बेज़ारी और मौत आने से पहले मौत की तैयारी। (इब्ने अबी शैबा–10/456-ह०–35455,35456)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की फ़िरासत से बचो क्योंकि वो अल्लाह के नूर से देखता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/701-ह०–3127) (तबरानी–मुअ़जम औसत–2/616-ह०–3254)

जब बन्दे के दिल में नूर व हिदायत आ जाती है तो उसमें हक़ व बातिल और अच्छे काम व बुरे काम और भले व बुरे शख़्स में फ़र्क़ करने की तमीज़ व सालिहयत पैदा हो जाती है और फिर उसका दिल कहता है ये अच्छा काम है इसे कर लो और ये बुरा काम है इससे बचो और उस पर दुनिया की हक़ीक़त मुन्कशिफ़ हो जाती और वो दुनिया से बेरग़बत व आख़िरत की तरफ़ राग़िब हो जाता है।

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे बग़ैर इ़ल्म सीखे इ़ल्म अ़ता फ़रमाता है बग़ैर हिदायत लिये हिदायत अ़ता फ़रमाता है। (शुअ़बुल ईमान–7/318–10582)

तक़्वा दो क़िस्म को होता है एक ज़ाहिरी तक़्वा होता है यानी जिस्म का तक़्वा व दूसरा बातिनी तक़्वा यानी दिल का तक़्वा और ज़ाहिरी तक़्वे के दो रुकन है एक गुनाहों से बचना और दूसरा नेकियां करना और बातिनी तक़्वा ये है कि तमाम बुराईयों व कुदूरतों से अपने नफ़्स व अपने क़ल्ब को पाको साफ़ करना यानी तज़किया-नफ़्स और तसफ़िया-ए-क़ल्ब और उस क़ल्ब पर रब तअ़ाला की मुहब्बत का ग़लबा होना यानी बन्दे का अपने रब के साथ हुस्ने तआल्लुक़ इस तरह से हो कि बन्दे और अल्लाह तअ़ाला के दरमियान कोई भी चीज़ हाइल न हो।

और बन्दे का मख़लूक़ से हुस्ने तअ़ाल्लुक़ इस तरह से हो और कि बन्दे और मख़लूक़ के दरमियान बन्दे का नफ़्स हाइल न हो यानी बन्दा जब मख़लूक़ के साथ हुस्ने तअ़ाल्लुक़ क़ायम करे तो वो किसी दुनयावी ग़रज़ या कोई लालच या तलब या किसी मक़सद व ख़्वाहिश या एहसान के बदले की नीयत या माल व असबाब और जाह व मन्सब की तलब व लालच की वजह से न करे बलिक सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी और उसका कुर्ब पाने की ग़रज़ से मख़लूक़ के साथ हुस्ने तअ़ाल्लुक़ रखे व उनके जुमला हक़ूक़ अदा करे तो गोया वो अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ रुजूअ़ करने वालों में से है और वो दर हक़ीक़त ज़ाहिरी व बातिनी तक़्वे का हामिल है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिये आसमान से रिज़्क़ उतारता है और नसीहत सिर्फ़ वही कुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करता है। (सू०-ग़ाफ़िर-40/13)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और इस तरह हमने ज़मीन को फैलाया व उसमें हमने बहुत भारी पहाड़ रख दिये और हमने उसमें हर क़िस्म के खुशनुमा पौधे उगाये ये सब बसीरत और नसीहत का सामान है हर उस बन्दे के लिये जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला है। (सू०-क़ाफ़-50/8)

इन आयात के ज़रिये अल्लाह तआ़ला हमें नसीहत फ़रमा रहा है कि ज़मीनो आसामान में हमारी बेशुमार निशानियाँ है और तुम्हारे अपने नुफ़ूस में व अपनी कुदरत के शवाहिद में बेशुमार निशानियाँ हैं और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये आसमान से पानी नाज़िल फ़रमाता है जो तुम्हारे लिये रिज़्क़ का सबब है जिससे तुम्हारे जिस्म को ग़िज़ा और कुव्वत फ़राहम होती है व इन्सानो को जो दुनिया में नेअ़मतें अ़ता की गईं हैं तो उनसे नसीहत वही हासिल करता है जो अल्लाह तआ़ला की तख़लीक़ कर्दा चीज़ो व ख़िल्क़त के अजायबात में ग़ौरो फ़िक्र करते हुये अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करता है यानी अल्लाह की मुहब्बत व ख़शीअ़त और इताअ़त व आ़जिज़ी इख़्तियार करता है।

आसमानो और ज़मीनों को पैदा करने में व जिन चीज़ों से आसमानों को मुज़य्यन किया है व जिन चीज़ों से ज़मीन को मुफ़ीद और खुशमंजर बनाया है उनका मुशाहदा व उनकी माअ़रिफत हर शख़्स के लिये बसीरत, फ़हम, फ़िरासत और इ़बरत व नसीहत का बाइस है जो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करता है और तक़वे की इब्तिदा ख़ौफ़े खुदा पर होती है और इसकी इन्तिहां इश्क़े खुदा पर होती है और तक़वे का एक माअ़नी ये भी है कि ईमान लाने के बाद तमाम फ़राइज़ व वाजिबात को अदा करना और मुहर्रमात व मकरुहात से इजतिनाब करना व ख़िलाफ़े सुन्नत कामो से परहेज़ करना और हर नेक अ़मल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा मक़सूद होना और दिल ख़ौफ़े खुदा से माअ़मूर होना है।

हज़रत जुन्नून मिस्री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं अल्लाह तआ़ला की मख़लूक़ में कुछ ऐसे सालिहीन बन्दे हैं जो अपनी जानों को ताअ़ते खुदावन्दी में सर्फ़ कर देते हैं ये वो लोग हैं जिन्होंने ख़ाक़े अर्द को अपने पहलुओं के लिये बिछौना बना लिया है और कुरान उनके खून और गोस्त में रस बस गया है व उन्होंने अपनी तारीकियों में कुरान को चराग़ और रहनुमा बना लिया है और वो मौत को लब्बैक कहने के लिये तैयार हैं और वो लोग मौत को कभी छोटा नहीं समझते कुरानो हदीस के रास्तों पर वो गामज़न हैं आअ़माल में मुख़लिस हैं और उनके दिल रहमान

के नूर से मुनव्वर हैं उन्होंने फ़ना होने वाली शैः के बदले हमेशा बाक़ी रहने वाली शैः को खरीद लिया है वाह क्या खूब उन्होने तिजारत की है कि दोंनों जहानों मे नफ़अ़ पा लिया और अ़ज़ाब वाले दिन के डर से थोड़े से तोशे पर दुनिया के सफ़र को पूरा कर लिया उन्होंने मुहलत के दिनों में ख़ैर की तरफ़ जल्दी की और अपने अ़ताई दिनों को लह्व व लाअ़ब में बर्बाद नहीं किया।

उन्होंने शोअ़लों वाली आग को याद रखा और नफ़्सानी ख़्वाहिशात को ख़त्म कर दिया पस वो उ़म्दाह कलाम वाले गूँगें हैं और अच्छी निगाह वाले अन्धे हैं और ये वही लोग हैं जिनके तुफ़ैल बरकात का नुजूल होता है और वो मख़लूक़े खुदा के लिये रौशन चराग़ हैं और उम्मत के सुतून हैं और दरगुज़र उनका शैबा है व जूदो सख़ा उनकी फ़ितरत है और उन्होंने दुनिया से अपनी उम्मीदों को ख़त्म कर लिया है और न ही वो लोग उ़म्दाह सवारियों के तालिब हैं न खूबसूरत पुख़्ता महल्लात के ख़्वाहिशमन्द हैं उन्होंने गुनाहों से अपनी जानों को बचा लिया और सीधे रास्तों पर गामज़न हो गये और वो अपनी तकलीफ़ों व मुसीबतों पर सब्र का दामन नहीं छोड़ते और उन्होंने दुन्यांवी उम्मीदों का गला घोंट दिया और वो क़ब्र व उसकी तंगी से ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं और मुन्कर नकीरैन के सुवाल जवाब के ख़्यालात से वो लोग काँपते है व अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होने के तसव्वुर से उनके रौंगटे खड़े हो जाते है और सिर्फ़ अपने

रब पर कामिल तवक्कुल करने वाले हैं व उनके नज़दीक दुनिया ज़लील व हक़ीर होती है वो थोड़ी सी चीज़ पर क़नाअ़त करते हैं और अपने नफ़्स का मुहासिबा करते हैं और उनकी ज़ुबानें ज़िक्रे इलाही व ज़िक्रे रसूल से तर रहती हैं और उन्हें अज़कार से सबसे ज्यादा लज़्ज़त हासिल होती है। (हिल्यातुल औलिया-स०-27)

हज़रत गौसुल आज़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं जो शख़्स आख़िरत में अपनी फ़लाह चाहता हो उसे चाहिये कि अपने नफ़्स व असबाबे दुनिया की परस्तिश छोड़ दे व इसी तरह जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की रिज़ा चाहता हो तो उसे चाहिये कि आख़िरत की ख़्वाहिशात को छोड़ दे यानी नेक आअ़माल की जज़ा का तसव्वुर छोड़ दे क्योंकि इससे इख़्लास तर्क होता है और जब तक किसी के दिल में शहवात और लज़्ज़ाते दुनिया की हवस मौजूद हो वो अपनी आख़िरत को संवार नहीं सकता और जब तक कोई शख़्स आक़िबत में लज़्ज़ाते नफ़्सानी मसलन जन्नत और उसकी की नेअ़मतों का ख़्वाहिश मंद हो तो वो शख़्स ख़ालिसतन रब तआ़ला का दीदार व रिज़ाये इलाही का तालिब नहीं हो सकता और ऐसे शख़्स में जुहदो तक़वा की हक़ीक़त नहीं पायी जाती और वो उसके तक़ाज़ो से ना आशना है क्योंकि जुहदो तक़वा की हक़ीक़त ये है कि उसकी तमाम इ़बादात और नेक आअ़माल जन्नत व हूरो ग़िलमान और जन्नत की नेअ़मतों के लिये न हों।

रोज़े क़यामत परहेज़गारों की ताअ़ज़ीमो तकरीम

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-
जिस दिन हम परहेज़गारों को जमाअ़ करके ख़ुदाये रहमान के हुजूर (मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों की तरह) सवारियों पर ले जायेंगे। (सू०-मरयम-19/85)

अल्लाह तबारक व तआ़ाला क़यामत के दिन तमाम मुत्तक़ीन को इ़ज़्ज़त व इहतिराम साथ वफ़्द की सूरत में जमाअ़ फ़रमायेगा और उन्हें जज़ा-ए-जमील से सरफ़राज़ फ़रमायेगा और उन्हें मेहमानों की तरह अल्लाह तआ़ाला की बारगाह में लाया जायेगा सब मुत्तक़ीन का ये हश्र खुशबूदार नूरानी ऊँटनियों पर होगा और उन्हें मुअ़त्तर व खूबसूरत लिबास ज़ैबे तन कराया जायेगा और वो निहायत शान व शौकत से ऊँटनियों पर सवार होंगे और वो नूर के ताज पहने हुये होंगे फिर उन्हें जन्नत में दाख़िल किया जायेगा और जन्नत में आअ़ला मक़ाम अ़ता किया जायेगा।

अम्बिया किराम खूबसूरत नूरानी घोड़ों पर और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को बुर्राक पर ले जाया जायेगा और अ़ाम मुसलमान अपने अ़मले सालिहा के मुताबिक़ जो उस दिन सवारियो की शक्ल में होंगी और काफ़िरों को मैदाने महशर

की तरफ़ भूका प्यासा जानवरों की तरह हांक कर मुँह के बल घसीट कर ले जाया जायेगा।

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम मैदाने हश्र में पैदल और सवार लाये जाओगे और बाअ़ज़ लोग अपने मुँह के बल घसीटे जायेंगे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/247-ह०–2424) (बुख़ारी–सहीह–6/94-ह०–6523)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह रोज़े क़यामत लोग अपने चेहरों के बल कैसे चलाये जायेंगे तो आप ने फ़रमाया कि जिस परवर दिगार ने इन्सान को दो पैरों पर चलाया है तो क्या वो उसे क़यामत के दिन मुँह के बल चलाने पर क़ादिर नहीं है तो हज़रत क़तादा ने कहा हमारे रब की इज़्ज़त की क़सम बेशक वो हर चीज़ पर क़ादिर है। (बुख़ारी–सहीह–4/707-ह०–4760)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत परहेज़गारों को उनके क़दमों पर नहीं लाया जायेगा और न ही हांक कर लाया जायेगा बल्कि जब मुत्तक़ीन अपनी क़ब्रो से निकलेंगे तो उनको ऐसी सफ़ेद खूबसूरत जन्नती ऊँटनिया पेश की जायेंगी जिनके पर होंगे और उन पर सोने के

कजाबे होंगे और उनकी जूतियों के तस्मे नूर के होंगे जो चमक रहे होंगे व उनकी नकेलें ज़बरजद (जुमुर्रुद की एक क़िस्म, सब्ज रंग का एक क़ीमती पत्थर) की होंगी जिनकी मिस्ल मख़लूक़ में किसी ने न देखी होगी और उनका हर क़दम हद्दे नज़र तक होगा मुत्तक़ीन इन ऊँटनियों पर सवार होकर जन्नत का दर'वाज़ा खटखटायेंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/322-ह०–3425)
(इब्ने अबी शैबा–10/478-ह०–35539)
(दुर्रे मन्सूर–4/742)

जब परहेज़गार लोग अपने पर'वर दिगार के हुजूर हाज़िर होंगे तो उनकी इज़्ज़त की जायेगी और उन्हें नेअ़मतें बख़्शी जायेगी और उन्हें सलाम पेश किया जायेगा और उनकी शफ़ाअ़त कुबूल की जायेगी। (दुर्रे मनसूर–4/741)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ हबीब) जिस दिन आप (अपनी उम्मत के) मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को देखेगें कि उनका नूर उनके आगे और उनके दाँयी जानिब तेज़ी से चल रहा होगा (और उनसे कहा जायेगा) कि तुम्हें खुशख़बरी हो आज तुम्हारे लिये जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं तुम हमेशा उनमें रहोगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है।
(सू०–हदीद–57/12)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान कि ''उनका नूर उनके आगे और उनकी दाँयी जानिब तेज़ी से चल रहा होगा'' के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं कि ईमान वालों को उनके नेक आअ़माल के मुताबिक़ उन्हें नूर अ़ता किया जायेगा उनमें से बाअ़ज़ मोमिन ऐसे होंगे जिनका नूर पहाड़ की मानिन्द होगा और बाअ़ज़ मोमिन ऐसे होंगे जिनका नूर खजूर के दरख़्त की मानिन्द और उनमें से सबसे कम नूर उस शख़्स का होगा कि जिसका नूर अंगूठे पर होगा जो कभी रौशन होगा और कभी बुझ जायेगा।
(इब्ने अबी शैबा–10/521-ह०–35700)

अल्लाह तआ़ला के नेक और परहेज़गार बन्दे अपनी क़ब्रों से इस हाल में उठेंगे कि उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकते होंगे और वो पुलसिरात से इस तरह से गुज़र जायेंगे जैसे चुंधया देने वाली बिजली गुज़रती है और ये वो लोग होंगे जो दुनिया में अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की फ़रमां बरदारी किया करते और नेक अ़मल करते थे और नमाज़ पढ़ते थे और रोज़ा रखते थे और अहकामे शरीअ़त पर अ़मल पैरा थे और ये नेकी की दाअ़वत देते थे और बुराई से मनाअ़ करते थे फिर ये तौबा करते मरे तो ये उनकी जज़ा होगी और उनका ठिकाना जन्नत होगा और अल्लाह की रहमत व बख़्शिश और रिज़ा के साथ पस अल्लाह तआ़ला उनसे राज़ी और वो अल्लाह से राज़ी।

जैसा कि इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
उनकी जज़ा उनके रब के हुज़ूर दायमी रिहायश के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें र‘वाँ हैं वो उनमें हमेशा–हमेशा रहेंगे अल्लाह तअ़ाला उनसे राज़ी हो गया है और वो लोग उस (अल्लाह) से राज़ी हो गये। (सू०–बय्यिना–98/8)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक जिन लोगों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर वो (उस पर मज़बूती से) क़ायम रहे तो उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं (और कहते हैं) कि तुम ख़ौफ़ न करो और न ग़म करो और तुम जन्नत की खुशियाँ मनाओ जिसका तुमसे वाअ़दा किया जाता था। (सू०–फुस्सिलत / हा मीम सज्दा–41/30)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक बेहतर अन्जाम परहेज़गारों के लिये ही है। (सू०–हूद–11/49)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और नेक अन्जाम परेहज़गारों के लिये है।
(सू०–क़सस–28/83)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
उनमें से जो साहिबे एहसान है और परहेज़गार हैं उनके लिये बड़ा अज्र है।
(सू०–आले इमरान–3/172)

दुनिया व आख़िरत की सआ़दतें और भलाईयाँ परहेज़गारों के लिये हैं

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
परहेज़गार लोगों से कहा जाये कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल फ़रमाया है वो कहते है (दुनिया व आख़िरत) की भलाई उतारी है उन लोगों के लिये जो नेकी करते हैं पस इस दुनिया में (भी) भलाई है और आख़िरत का घर तो ज़रुर ही बेहतर है और परहेज़गारों का घर क्या ही खूब है।
(सू०-नह्ल-16/30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
और अपने रब की बख़्शिश और उसकी जन्नत की तरफ़ तेज़ी से बढ़ो जिसकी वुसअ़त में सब आसमान और ज़मीन है जो परहेज़गारों के लिये तैयार की गई है। (सू०-आले इमरान-3/133)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक परहेज़गारों के लिये उनके रब के पास नेअ़मतों वाले बाग़ात हैं। (सू०-क़लम-68/34)

जिन लोगों ने दुनिया की ज़िन्दगी में अच्छे अ़मल किये और तमाम अहकामाते शरीअ़त पर अ़मल पैरा रहे और गुनाहों से बचते रहे और रब तआ़ला से डरते रहे व परहेज़गारी इख़्तियार की तो उनके लिये अज्रे अ़ज़ीम है और उनकी-

नेकियों का सवाब दस से लेकर सात सौ गुना तक बढ़ा दिया जायेगा यानी उन्हें बे हिसाब अज्र अ़ता किया जायेगा और उनके लिये दुनिया में भी भलाई है व आख़िरत में भी वो आअ़ला मरातिब से बहरेयाब होंगे और अल्लाह तआ़ला परहेज़गारों से मुहब्बत फ़रमाता है और ज़मीन व आसमान वाले भी उससे मुहब्बत करते हैं।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाता है तो जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) को निदा की जाती है कि अल्लाह तआ़ला फुलां बन्दे से मुहब्बत करता है लिहाज़ा तुम भी उससे मुहब्बत करो पस हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) उससे मुहब्बत करते हैं और फिर जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) आसमानी मख़लूक़ में निदा करते हैं कि अल्लाह तआ़ला फुलां बन्दे से मुहब्बत करता है तो तुम भी उससे मुहब्बत करो चुनांचा आसमान वाले भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं और फिर ज़मीन वालो के दिलों में उसकी मक़बूलियत रख दी जाती है।
(बुख़ारी–सहीह–3/456-ह०–3209)
(मुस्लिम–सहीह–6/236-ह०–6705)

अल्लाह तआ़ला के नेक मोमिन बन्दे जो अल्लाह तआ़ला की इबादत में मक़ामे एहसान पर फ़ाइज़ हुये और उन्होंने अपने ख़ालिक़ व मख़लूक़

के हुकूक़ अदा किये तो उनके लिये दुनिया में भी भलाई है और आख़िरत में भी भलाई है कि उनसे ज़मीन व आसमान वाले मुहब्बत करते हैं और वो भी अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल और अल्लाह के महबूब व मख़सूस बन्दों से मुहब्बत करते हैं और ऐसे लोगों को दुनिया में इत्मीनाने क़ल्ब और अल्लाह की कुर्बत व माअ़रिफ़त हासिल होती है और यही कामयाब व कामरान और निजात पाने वाले हैं जिनको आख़िरत में बेशुमार इनाअ़मात व मरातिब और आअ़ला दरजात अ़ता होंगे और वो दायमी नेअ़मतों वाली जन्नत में दाखिल होंगे।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
उनके लिये सदाबहार बाग़ात हैं जिनमें वो दाख़िल होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जन्नत में उनके लिये वो कुछ है जो वो चाहेंगे वो उन्हें मयस्सर होगा इसी तरह अल्लाह परहेज़गारों को सिला अ़ता फ़रमाता है। (सू०–नह्ल–16/31)

यानी जब भी उनके दिल किसी चीज़ की आरज़ू और उसका इरादा करेंगे तो वो चीज़ उन्हें अपनी कामिल तरीन शक्ल में हासिल हो जायेगी बल्कि उन्हें वहां ऐसी ऐसी चीज़ें अ़ता होंगी जो उनके ख़्वाबो व ख़्यालो में भी न आयी होंगी।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और जन्नत परहेज़गारों के लिये क़रीब कर दी जायेगी और उनसे बिल्कुल दूर नहीं होगी और–

उनसे कहा जायेगा ये वो है जिसका तुमसे वाअ़दा किया गया था और हर तौबा करने वाले व अपने दीन और ईमान की हिफ़ाज़त करने वाले के लिये है जो (खुदाये) रहमान से बिन देखे डरता रहा है और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में रुजूअ़ व इनाबत वाला दिल लेकर हाज़िर हुआ और तुम सब इसमें सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ ये हमेशगी का दिन है। (सू०–क़ाफ़–50/31-34)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
वही शख़्स नफ़अ़ मन्द होगा जो अल्लाह तआला की बारगाह में सलामती वाले बे ऐ़ब दिल के साथ हाज़िर हुआ और उस दिन जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जायेगी और जहन्नम गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जायेगी।
(सू०–शुअ़रा–26/89-91)

➡ हज़रत अम्र बिन क़ैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इ़ल्म की फ़ज़ीलत इ़बादत की फ़ज़ीलत से बेहतर है और तुम्हारे दीन का खुलासा तक़वा और परहेज़गारी है (इब्ने अबी शैबा–10/480-ह०–35546)

परहेज़गार जन्नत में ऐशो इशरत व फ़रहत और मसर्रतों में होंगे

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक परहेज़गार लोग बाग़ों और चश्मों में (लुत्फ़ अंदोज़) होते होंगे और उन नेअ़मतों से (सुरुर व मज़े) लेते होंगे जो उनका रब उन्हें देता होगा बेशक ये वो लोग हैं जो इससे पहले (दुनिया की ज़िन्दगी में) साहिबाने एहसान थे और वो रातों को थोड़ी देर सोया करते थे और रात के पिछले पहरों में (उठ उठ कर) मग़फ़िरत तलब करते थे। (सू०-ज़ारियात-51/15-18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक परहेज़गारों के लिये कामयाबी है उनके लिये बाग़ात और अंगूर होंगे और नौजवान कुवाँरी हम उ़म्र अ़ौरतें होंगी और शराबे तहूर के छलकते हुये जाम होंगे वहां ये लोग न कोई बेहूदा बात सुनेंगे और ना ही झूठी बातें ये आपके रब की तरफ़ से सिला है जो आअ़माल के हिसाब से काफ़ी बड़ी अ़ता है। (सू०-नबा-78/31-36)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक परहेज़गार लोग अमन वाले मक़ाम में होंगे बाग़ात और चश्मों में बारीक और दबीज़ रेशम का लिबास पहने हुये आमने सामने बैठे होंगे इसी तरह से ही होगा और हम उन्हें गोरी रंगत वाली

बड़ी बड़ी आँखो वाली हूरों से ब्याह देंगे और वो वहाँ बैठे हुये इत्मीनान से हर तरह के फल और मेवे तलब करते होंगे (और वो) उस (जन्नत) में मौत का मज़ा नहीं चखेंगे सिवाय उस पहली मौत के जो गुज़र चुकी होगी और अल्लाह तआ़ला उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लेगा ये आपके रब का फ़ज़्ल है और यही बहुत बड़ी कामयाबी है। (सू०–दुख़ान–44/51-57)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
उस जन्नत का हाल जिसका परहेज़गारों से वाअ़दा किया गया है उसके नीचे नहरें बह रही हैं उसके फल हमेशा रहने वाले हैं और उसका साया भी दायमी है और ये अन्जाम होगा उन लोगों का जिन्होंने तक़्वा इख़्तियार किया और काफ़िरो का अंजाम आतिशे दोज़ख़ है। (सू०–राअ़द–13/35)

अस्ल कामयाबी दुनियावी मालो मताअ़ व जाह व मन्सब का हासिल होना नहीं है बल्कि अस्ल व हक़ीक़ी कामयाबी ये है कि बन्दा क़ब्र व क़यामत के अ़ज़ाब से मामून व महफ़ूज़ रहे और क़यामत के दिन वो जन्नत हासिल करले।

इरशादे बारी तआ़ला है:–
हर जान मौत का मज़ा चखने वाली है व तुम्हारे अज्र पूरे के पूरे तो क़यामत के दिन दिये जायेंगे तो जिसे दोज़ख़ से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया तो वो कामयाब हो गया

और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ़ धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है। (सू०–आले इमरान–3/185)

जो लोग कुफ़्र व बुरे आअ़्माल से इजतिनाब करते हैं और कसरत से नेक आअ़्माल करते हैं और दुनिया से बेरग़बत और आख़िरत के तालिब रहते हैं और अपनी आख़िरत को बेहतर और उ़म्दाह बनाने की तैयारी में हमा वक़्त मसरुफ़ रहते हैं और अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से डरते रहते हैं ऐसे ही लोगों के लिये कामयाबी व कामरानी है और ऐसे लोगों ठिकाना जन्नत है जहाँ वो ऐशो इशरत और फ़रहत और मर्सरतों में अमन चैन से होंगे।

जन्नत हर ख़्वाहिश व आरज़ू पूरी करने की जगह है और उसमें ऐसे ऐसे बाग़ात हैं जिनमें तरह तरह के फलों वाले दरख़्त हैं जिनके नीचे से दरिया बह रहे होंगे और मुत्तक़ी ऐसी पुर फ़ज़ा जगह में होंगे जिसके इर्द गिर्द चश्में और निहायत खुशनुमा मन्ज़र होगा व उनके लिये उठते जोबन वाली निहायत हसीनो जमील कुवांरी बीवियां होंगी और शराबे तहूर के छलकते हुये जाम होंगे मगर वो शराब नशाआवर न होगी जिससे अ़क़्ल ज़ाइल हो जाये और होश व हवाश जाते रहें बल्कि वो निहायत लज़ीज़ और पाकीज़ा शराब होगी जिनको पीने के बाद एक निहायत उ़म्दाह लज़्ज़त आमेज़ कैफ़ियत पैदा होगी जो कि इन्सान ने इससे पहले ऐसी लज़्ज़त कभी चखी भी न होगी।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
जिस जन्नत का परहेज़गारों से वाअ़दा किया गया है उस की सिफ़त ये है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जिसमें कभी तग़य्युर न आयेगा (और उसमें ऐसी) दूध की नहरें है जिसका ज़ायक़ा और मज़ा कभी न बदलेगा और ऐसी शराबे (तहूर की) नहरें होंगी जो पीने वालो के लिये सरासर लज़्ज़त हैं और खूब साफ़ किये हुये शहद की नहरें होंगी और उनके लिये उसमें हर क़िस्म के फल होंगे। (सू०-मुहम्मद-47/15)

जन्नती इस तरह हमेशा दिल पसंद नेअ़मतों में रहेंगे और उनकी ख़िदमत के लिये ख़ादिम भी होंगे जन्नती जो चाहेंगे ख़ादिम उन्हें वो चीज़ पेश करेंगे ये तक़वा शिआ़र लोगों की जज़ा है जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी और उसके अ़ज़ाब से डर कर गुनाहों को तर्क कर दिया और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की इताअ़त की और अहकामे शरीअ़त पर गामज़न रहे तो उन्हें अल्लाह तआ़ला दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लेगा और दायमी नेअ़मतों वाली जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और ये रब तआ़ला का बड़ा फ़ज़्लो करम है कि वो अमन व सलामती वाले मक़ाम में होंगे और यही बहुत बड़ी कामयाबी है कि उन्हें वहाँ किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ व परेशानी न होगी बल्कि हर क़िस्म की मशक़्क़त व रंजोग़म और आफ़ात व मसाइब से वो मामून व महफ़ूज़ रहेंगे और उनके दिलों को भी पाको साफ़

कर दिया जायेगा यानी दिल बुग्ज़, हिर्सो हसद, व कीना व हर बुराई के मैल कुचैल से पाको साफ़ होंगे और दिलों में एक दूसरे के लिये उल्फ़त व मुहब्बत होगी और वहां न कोई बेहूदा बात करेगा और न कोई गाली ग़लोज़ करेगा और जन्नती जब किसी चीज़ की ख़्वाहिश करेगा तो वो फ़ौरन वो चीज़ उसके सामने हाज़िर की दी जायेगी और वहाँ उन्हें किसी क़िस्म की कोई बीमारी न होगी और वो वहाँ न नजासत करेंगे व ग़लाज़त करेंगे और वहां न गर्मी होगी और न सर्दी बल्कि मौसम हमेशा खुशगवार रहेगा और वहां चाँद सूरज भी न होंगे और वहां न धूप होगी और न रात होगी न कभी अंधेरा होगा बल्कि हमेशा दिन होगा और जन्नत अल्लाह तआ़ला के नूर से रौशन होगी।

और सबसे बड़ी नेअ़मत जो जन्नतीयों को अ़ता होगी वो अल्लाह तआ़ला का दीदार है कि जिससे वो ऐसा सुरुर हासिल करेंगे जो जन्नत की किसी नेअ़मत में वो सुरुर हासिल न होगा और ये सबसे बड़ी कामयाबी है और इससे बड़ी कोई कामयाबी नहीं।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) का ज़ुह्दो तक़्वा

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) बयान करते हैं हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआला अन्हु) का एक गुलाम था जो आपके लिये कमाकर लाया करता था एक रात वो आपके लिये खाना लेकर आया तो आपने उसमें से कुछ खा लिया फिर गुलाम ने कहा क्या वजह है कि आप हर रात मुझसे सुवाल करते थे कि ये कहां से लाये हो आज आपने सुवाल नहीं किया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि मैं भूक की शिद्दत की वजह से ऐसा न कर सका तो तुम बताओ कि ये खाना कहां से लाये हो उसने कहा कि ज़माना जाहलियत में मैं कुछ लोगों के पास से गुज़रा और मैंने मन्तर पढ़कर उनका इलाज किया था तो उन्होंने मुझे मुआवज़ा देने का वाअ़दा किया

आज जब मेरा वहां से गुज़र हुआ तो वहाँ शादी थी तो उन्होंने मुझे खाना दिया था ये सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि अफ़सोस तुमने मुझे हलाक कर दिया फिर आप हलक में हाथ डालकर क़ैः करने लगे चूंकि खाली पेट वो लुक्मा खाया था इसलिये वो पेट से निकल नहीं पा रहा था उनसे कहा गया कि बग़ैर पानी पिये ये लुक़मा नहीं निकलेगा फिर आप बराबर–

पानी पीते रहे और उस लुक़्मे को निकालने की कोशिश करते रहे और फिर उनसे कहा गया कि अल्लाह तआ़ला आप पर रहम फ़रमाये कि आप एक लुक़्मे की वजह से इतनी मशक़्क़त उठा रहे हैं तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ने फ़रमाया कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से सुना है जिस्म का जो हिस्सा हराम से पर'वरिश पाये वो जहन्नुम का ज़्यादा मुस्तहिक़ है यहां तक कि आपने वो लुक़्मा क़ै करके बाहर निकाल दिया और फ़रमाया अगर ये लुक़्मा मेरी जान लेकर भी निकलता तब भी मैं इसको निकालता।
(हिल्यातुल औलिया–1/44-ह०–67)
(कंजुल उ़म्माल–2/412-ह०–9259)

हज़रत हारिसा (रज़ि०) के ईमान की हक़ीक़त

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) एक दिन घर से निकले रास्ते में अन्सार का एक नौजवान आपके सामने आ गया उनको हारिसा बिन नुअ़मान कहते थे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उनसे पूछा ऐ हारिसा तुमने सुबह किस हाल में की उन्होंने जवाब दिया कि मैनें सुबह इस हाल में की कि मैं सच्चा और बरहक़ मोमिन हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया देख लीजिये क्या कह रहे हैं कि बिला शुबा हर–

बरहक् शैः की एक हक़ीक़त होती है तो तेरे ईमान की हक़ीक़त क्या है उन्होंने जवाब दिया कि मेरा दिल दुनिया से उचाट और बेरग़बत हो गया और मैं दुनिया से नफ़रत करता हूँ और मैं अपनी रात जागकर गुज़ारता हूँ और दिन को प्यासा रहता हूँ गोया मैं अपने रब के अ़र्श को देखता रहता हूँ और अपने सामने मैं अहले दोज़ख़ को देखता हूँ कि वो एक दूसरे से कैसे मिल रहे हैं और गोया मैं अहले जहन्नम को देखता हूँ कि वो दोज़ख़ में एक दूसरे के साथ दुश्मनी कर रहे हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने तेरे दिल को ईमान से रौशन कर दिया है फिर जब हारिसा शहीद हो गये तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हारिसा जन्नतुल फ़िरदौस में आअ़ला मक़ाम में है। (शुअ़बुल ईमान–7/321-ह०–10590) (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/637-ह०–3289)

ज़ाहिद को बिला वास्ता इ़ल्म व हिदायत अ़ता होती है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ज़ाहिद को बिला ताअ़लीम के इ़ल्म और बग़ैर किसी वास्ते के हिदायत से नवाज़ता है और उसे बसीर बना देता है और पर्दे उससे उठा देता है।
(हिल्यातुल औलिया–1/80-225)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे बग़ैर इल्म सीखे इल्म अ़ता फ़रमाता है बग़ैर किसी वास्ते के हिदायत अ़ता फ़रमाता है। (हिल्यातुल औलिया–1/80-225) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/318-ह०–10582)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी शख़्स में दुनिया से बेरग़बती और क़िल्लत कलाम देखो यानी कम बोलने बाला देखो तो उसका कुर्ब हसिल करो क्योंकि उसको हिकमत व दानाई अ़ता की गई है। (इब्ने माजा–सुनन–3/346-ह०–4101) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/306-ह०–10529)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो जाये तो अल्लाह तआ़ला उसे दानाई व हिकमत अ़ता फ़रमाता है और हिकमत व फ़िरासत उसके दिल में सब्त फ़रमा देता है और अल्लाह तआ़ला उसी दानाई व हिकमत के साथ उसकी ज़बान को बुलवाता है और दुनिया के ऐ़ब व बुराई उसकी नज़र को दिखाता है और उस ऐ़ब व बुराई से बचने का तरीक़ा भी बतलाता है और रब तआ़ला उसको दुनिया से जन्नत की तरफ़ सलामती वाला सहीह व सालिम निकालता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/307-ह०–10531)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन कि फ़िरासत से बचो क्योंकि वो अल्लाह के नूर से देखता है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/701-ह०–3127) (तबरानी–मुअ़जम औसत–2/616-ह०–3254)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी आदमी को देखो कि वो दुनिया में ज़ुहद और दुनिया से बेरग़बती और कम गोई का हामिल है तो तुम उस शख़्स के क़रीब हो जाओ बेशक उसे हिकमत व दानाई अ़ता की गई है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/307-ह०–10534)

कामिले ज़ुहद की अ़लामात

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और फिर उसने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह सबसे बड़ा ज़ाहिद कौन है तो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ब्रों को और बोसीदा होने को न भूले और दुनिया की ज़ीनत को छोड़ दे और आख़िरत को दुनिया पर तरजीह दे और कल के दिन को अपनी हयात में शुमार न करे और खुद को मुर्दों में शुमार करे।
(इब्ने अबी शैबा–10/457-ह०–35459)

रब तआ़ला से ग़ाफ़िल करने वाली हर चीज़ को तर्क करना तक़्वा है

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि इराक़ में हमारे दरमियान जुहद में इख़्तिलाफ़ हो गया बाअ़ज़ ने कहा लोगों के साथ मेल जोल को तर्क करने का नाम जुहद है बाअ़ज़ ने कहा ख़्वाहिशाते नफ़्स को तर्क करने का नाम जुहद है और बाअ़ज़ ने कहा शिकम सेरी को तर्क कने का नाम जुहद है इन सब का कलाम एक दूसरे के क़रीब क़रीब है और मेरा मज़हब ये है कि हर वो चीज़ जो तुम्हें अल्लाह तआ़ला से ग़ाफ़िल कर दे उसको तर्क करना जुहद है।
(हिल्यातुल औलिया–9/201-ह०–13944)

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि सलामते क़ल्ब जैसी कोई सलामती नहीं और ख़्वाहिशे नफ़्स की मुख़ालिफ़त जैसी कोई अ़क़्ल नहीं व दिल की मालदारी जैसी कोई मालदारी नहीं और ग़ुस्से को काबू में रखने जैसी कोई क़ुव्वत नहीं और नूरे यक़ीन जैसा कोई नूर नहीं और दुनिया को हक़ीर जानने जैसा कोई यक़ीन नहीं और माअ़रिफ़ते इलाही जैसी कोई माअ़रिफ़त नहीं और गुनाहों से तौबा जैसी कोई तौबा नहीं और दरजात में सबक़त ले जाने जैसी कोई हिर्स नहीं व फ़राइज़ की अदायगी जैसी कोई ताअ़त नहीं और अल्लाह तआ़ला की नापसंदीदा चीज़ों से परहेज़ करने जैसा कोई तक़्वा नहीं और

मुजाहिदाए नफ़्स जैसा कोई जिहाद नहीं व तमाअ़ जैसी कोई ज़िल्लत नहीं और जन्नत जैसी कोई जज़ा नहीं। (हिल्यातुल औलिया–9/209-ह०–14005)

तक़र्रुब इलल्लाह का अफ़ज़ल दर्जा

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते है कि तक़र्रुब इलल्लाह का सबसे अफ़ज़ल दर्जा ये है कि तुम दुनिया व आख़िरत में सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की ज़ात के मुतलाशी हो। (हिल्यातुल औलिया–9/200-13934)

हज़रत अबू सुलेमान दारानी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) जो कि तबअ़ ताबईन में से थे फ़रमाते हैं ऐ मेरे पर'वर दिगाार अगर तू मेरे भेद को तलब करता है तो मैं मेरी तौहीद का तलबगार हूँ और अगर तू मेरे गुनाहों की तलाश में है तो मैं तेरे रहमो करम की तलाश में हूँ और अगर तू मुझे जहन्नम में फेंकना चाहता हूँ तो मैं अहले जहन्नम में ये ऐअ़लान कर देना चाहता हूँ कि मैं तुझसे मुहब्बत करता हूँ (हिल्यातुल औलिया–9/199-13922)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि कौन सा शख़्स अफ़ज़ल है तो आप ने फ़रमाया वो मोमिन जो दिल का साफ़ और ज़बान का सच्चा हो अ़र्ज़ किया गया साफ़ दिल वाले से क्या मुराद है तो–

आप ने फ़रमाया वो मुत्तक़ी परहेज़गार मुख़लिस शख़्स जिसके दिल में ख़्यानत, धोका, बुग्ज़, हसद बग़ावत और दिल में गुनाह न हो फिर अ़र्ज़ किया गया कि ऐसे शख़्स के बाद फिर कौन अफ़ज़ल है तो आप ने फ़रमाया कि वो शख़्स जो दुनिया से नफ़रत और आख़िरत से मुहब्बत करने वाला हो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/377-ह०–4216)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–4/168-ह०–4800)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा तू तक़्वा इख़्तियार कर तो तू सबसे ज़्यादा आ़बिद होगा और तू क़नाअ़त कर तू सबसे ज्यादा शाकिर होगा और तू लोगों के लिये वही चाह जो अपने लिये चाहता है तो तू मोमिन होगा और जो तेरा हम साया हो उससे नेक सुलूक कर तो फिर तू मुसलमान होगा और अपनी हंसी को कम कर क्योंकि ज़्यादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/377-ह०–4217)

➡हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तदबीर के बराबर कोई अ़क़्ल मंदी नहीं व कोई परहेज़गारी इसके मिस्ल नहीं कि हराम से बाज़ रहे और कोई हस्बो नसब इसके बराबर नहीं कि आदमी के अख़लाक़ अच्छे हों। (इब्ने माजा–सुनन–3/277-ह०–4218)

हिस्सा दोम

फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत

-: फ़क़्र की हक़ीक़त :-

दुनिया लोगों के सामने अपनी खूबसूरती व ज़ैबो ज़ीनत के साथ ज़ाहिर होती है हालांकि ये दुनिया एक बद सूरत बुढ़िया की तरह है जिसकी तख़लीक़ ज़िल्लत व रुसवाई के ख़मीर से की गई है और ये अपने ऊ़यूब व नक़ाइस को छुपाने के लिये इसने मक्रो फ़रेब की चादर ओढ़ रखी है ये लोगों को मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हीलों व धोको से उनका शिकार करती है लेकिन अल्लाह तआ़ला के जो सालेह बन्दे हैं उन पर इस दुनिया की हक़ीक़त मुन्कशिफ़ हो जाती है और वो इस दुनिया की पोशीदा बुराईयों पर मुत्तलाअ़ हो जाते हैं और वो दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार कर लेते हैं और इस दुनिया के माल व असबाब को तर्क करके अपनी आख़िरत संवारने और अल्लाह तआ़ला की कुर्बत हासिल करने में मशगूल हो जाते है और ऐसे लोग फुक़रा कहलाते हैं।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि फ़क़्र (दरवेशी, मुहताजी व मुफ़लिसी) उन चीज़ों के न होने का नाम है कि जिनकी ज़रुरत हो और उन चीज़ों के न होने को फ़क़्र नहीं कहते जिनकी ज़रुरत न हो इसी तरह अगर ज़रुरत की चीज़ मौजूद हो और बन्दे को उस पर कुदरत भी हासिल है तो उसे फ़क़ीर नहीं कहा जायेगा और हर वो शख़्स जिसके पास

माल न हो और उसे माल की बहुत ज़रुरत हो उसे फ़क़ीर कहा जाता है हालांकि देखा जाये तो बन्दे की बेशुमार हाजात व ला ताअ़दाद ज़रुरीयात हैं मगर यहां ज़रुरत से मुराद ख़ास ज़रुरतें हैं न कि आ़म ज़रुरते मुराद हैं और फ़क्र में बन्दे की पांच हालतें होती हैं (1) ये बेहतरीन हालत है कि अगर आदमी के पास माल आये तो उसे बुरा लगे और उसे उसकी मौजूदगी से अज़िय्यत महसूस हो और उसे कुबूल करने से वो घबराये और उसके शर से बचने की कोशिश करे तो इस हालत को जुह्द कहते हैं और जिस शख़्स का हाल ऐसा हो वो ज़ाहिद है।

(2) कि माल की रग़बत इतनी न हो कि उसके मिलने से खुश हो और न इस क़दर नफ़रत हो कि मिलने से तकलीफ़ महसूस करे बल्कि दिल में इस क़दर हिम्मत हो कि अगर माल मिल जाये तो उसे छोड़ भी सके पस इस हालत वाले शख़्स को ''राज़ी'' कहा जाता है।

(3) मालो ज़र की तरफ़ उसकी रग़बत होने की वजह से उसके नज़दीक माल का होना न होने की निस्बत ज़्यादा महबूब हो लेकिन ये रग़बत उस हद तक न पहुँची हो कि हुसूले माल के लिये वो भाग दौड़ करे बल्कि अगर बाआसानी माल खुशी से हासिल हो जाये तो ले ले और अगर हासिल करने के लिये मेहनत व मशक़्क़त करना पड़े तो वो माल को छोड़ दे ऐसी हालत वाले शख़्स को-

''क़ानेअ़'' कहते हैं क्योंकि उसके नफ़्स ने मौजूद माल पर क़नाअ़त की और थोड़े माल के बावुजूद मज़ीद माल की तलब को छोड़ दिया।

(4) एक शख़्स माल व ज़र की तलब नहीं करता लेकिन उसके माल के तलब न करने का सबब ये है कि ये शख़्स हुसूले माल पर क़ादिर ही नहीं है बल्कि उसे माल से ऐसी मुहब्बत व रग़बत है कि अगर हुसूले माल का कोई ज़रिया पाता तो ज़रुर माल हासिल करता अगरचा हुसूले माल में कितनी ही मेहनत व मशक़्क़त क्यों न उठानी पड़ती या फिर वो फ़िलहाल माल की तलब में मशगूल है तो इस हालत वाले शख़्स को ''हरीस'' कहते हैं।

(5) जिस माल से वो महरुम है तो वो उस माल का इज़्तिरारन मुहताज हो यानी वो मजबूर हो व उसके इख़्तियार में न हो जैसे भूके के पास रोटी न हो या बे लिबास के पास कपड़ा न हो जिससे तन ढक सके तो जिसकी ये हालत हो उसे मुज़्तर कहते हैं यानी वो तकलीफ़ो परेशानी में मुब्तिला शख़्स है ख़्वाह माल की तलब में उसकी रग़बत ज़ईफ़ हो या फिर क़वी हो और ऐसा बहुत कम होता है कि आदमी इज़्तिरार की हालत में हो और ऐसी हालत में माल की तरफ़ रग़बत का न होना बहुत कम पाया जाता है।

-: फ़क़ीर के आदाब :-

फ़क़्र के लिये बातिनी व ज़ाहिरी तौर पर कुछ आदाब हैं वो लोगों के मेल जोल के ऐतबार से भी हैं और उसके अफ़अ़ाल के हवाले से भी हैं पस उनका लिहाज़ करना लाज़िम है फ़क़्र का बातिनी आदाब से तअ़ाल्लुक़ ये है कि फ़क़ीर को अल्लाह तअ़ाला ने जिस फ़क़्र में मुब्तिला किया है वो उसे ना पसंद न करे यानी दिल में भी बुरा न जाने।

और इस ऐतबार से भी बुरा न जाने कि किसी को फ़क़ीर बनाना ये अल्लाह तअ़ाला का काम है और अल्लाह तअ़ाला के इस अम्र को बुरा न जाने अगरचा फ़क़्र उसे ना पसंद ही क्यों न हो यानी अल्लाह तअ़ाला का काम होने की हैसियत से बुरा न जाने इसकी मिसाल ये है कि किसी शख़्स की शदीद बीमारी की वजह से जिस्म के किसी हिस्से को सर्जरी की जाती है तो सर्जरी करवाने वाला तकलीफ़ की वजह से इस फ़ेअ़ल को ना पसंद करता है लेकिन सर्जरी करने वाले और उसके काम को बुरा नहीं कहता बल्कि वो उसका शुक्र गुज़ार और उसका एहसान मंद होता है और ये फ़क़्र का सबसे अद्ना दर्जा है और इस पर अ़मल करना उसके लिये वाजिब है और इसके ख़िलाफ़ करना हराम है और इसके ख़िलाफ़ करने से आअ़माल भी ज़ाया हो जाते हैं।

➡ हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ुक़रा की जमाअ़त अल्लाह तआ़ाला की तक़सीम पर राज़ी रहोगे तो तो अपने फ़क्र का सवाब पाओगे वरना तुम्हें ये सवाब नहीं मिलेगा।
(देलमी–अल फ़िरदौस–5/386-ह०–8212)

इससे आअ़ला दर्जा ये है कि फ़क्र को ना पसंद न करे बल्कि उस पर राज़ी रहे और इससे भी आअ़ला दर्जा ये है कि मालदारी के नुक़सानात का इ़ल्म होने की वजह से वो फ़क्र का तालिब रहे और उससे फ़रहत महसूस करे और रब तआ़ाला पर कामिल तवक्कुल रखे कि वो उसे ज़रुरियाते ज़िन्दगी का सामान अ़ता फ़रमायेगा और ज़रुरत से ज़ायद माल व असवाब के हुसूल को ना पसंद करे और पुख़्ता यक़ीन रखे कि जो कुछ उसके मुक़द्दर में है वो उस तक ज़रुर पहुँचेगा।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं फ़क्र अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ से कुछ सज़ायें भी हैं और कुछ इनाअ़मात भी हैं और फ़क्र पर सवाब की अ़लामत ये है कि वो बन्दे के अख़लाक़ को अच्छा कर देता है और बन्दा अल्लाह तआ़ाला की इताअ़त और फ़रमां बरदारी में लग जाता है और शिकवा शिकायत नहीं करता बल्कि अपने फ़क्र पर अल्लाह तआ़ाला का शुक्र बजा लाता है और फ़क्र के सज़ा होने की अ़लामत ये है कि वो बन्दे को बद अख़लाक़ बना देता है और वो–

अल्लाह तआ़ाला की ना फ़रमानी में मशगूल हो जाता है और शिकवा शिकायत करता है और वो तक़दीर पर राज़ी नहीं रहता और न ही अल्लाह तआ़ाला की तक़सीम पर राज़ी रहता है।

हर फ़क़ीर क़ाबिले ताअ़रीफ़ नहीं होता बल्कि वो फ़क़ीर महमूद है जो अपने रब की क़ज़ा पर राज़ी रहे और अल्लाह तआ़ाला जो कुछ उसे अ़ता करे तो वो उस अ़ता पर उसका शुक्र गुज़ार रहे और वो फ़क़ीर अपने फ़क़्र पर खुश होता है जो ये जानता है कि जब दुनिया की कोई चीज़ उसे दी जाती है तो उससे कहा जाता है कि इसे तीन चीज़ों मसरुफ़ियत व फ़िक्र और तवील हिसाब के बदले में लो।

फ़क़्र के ज़ाहिरी आदाबः– फ़क़्र के ज़ाहिरी आदाब ये हैं कि बन्दा मख़्लूक़ के सामने सुवाल न करे और वो लोगों के सामने अपनी हालत को अच्छा करके पेश करे और ना तो शिकवा शिकायत करे और ना ही अपने फ़क़्र को ज़ाहिर करे बल्कि वो अपने फ़क़्र को लोगों से छुपाये और लोगों को ये तक पता न चले कि वो अपने फ़क़्र को छुपाता है तो यही वो फ़क़ीर है जिससे अल्लाह तआ़ाला मुहब्बत फ़रमाता है।

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया–

कि बेशक अल्लाह तआ़ला दोस्त रखता है अपने मोमिन फ़क़ीर बन्दे को जो फ़क़ीर होने के बावुजूद मांगने से बचने वाला हो और अ़यालदार हो और मांगने से बचता हो और अपने फ़क़्र व फ़ाक़ा पर सब्र करता हो और अक्सर अल्लाह वाले ऐसे ही लोगों में होते हैं।
(इब्ने माजा–सुनन–3/353-ह०–4121)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/303-ह०–10509)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कौन है जो मुझे ये ज़मानत दे कि वो लोगों से कुछ नहीं माँगेगा तो मैं उसके लिये जन्नत की ज़मानत दूँ तो हज़रत सूबान ने कहा कि ''मैं'' चुनांचा वो किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे। (नसाई–सुनन–2/179–2594)
(अबू दाऊद–सुनन–2/309-ह०–1643)

इरशादे बारी तआ़ला है:–
(ख़ैरात) उन फुक़रा का हक़ है जो अल्लाह की राह में (कस्बे मआ़श से) रोक दिये गये हैं वो (उमूरे दीन में हमा वक़्त मशगूल रहने के बाइस) ज़मीन में चल फिर भी नहीं सकते उनके (जुहदन) तमआ़ से बाअ़ज़ रहने के सबब नादान (हैं जो उनके हाल से बे ख़बर हैं वो) उन्हें मालदार समझे हुये हैं तुम उन्हें उनकी सूरत से पहचान लोगे वो लोगों से बिल्कुल सुवाल ही नहीं करते कि कहीं (मख़लूक़ के सामने) गिढ़ गिढ़ाना न पड़े और तुम

जो भी माल ख़र्च करोगे तो बेशक अल्लाह उसे खूब जानता है। (सू०–बक़राह–2/273)

हज़रत सुफ़यान सौरी (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते है कि तंगी के वक़्त अपनी हालत को अच्छा ज़ाहिर करना अफ़ज़ल तरीन अ़मल है और फ़क्र को छुपाना नेकी के ख़ज़ानो में से एक ख़ज़ाना है और आअ़माल में फ़क़ीर का अदब ये है कि मालदार की मालदारी की वजह से उसके सामने तवाज़ोअ़ न करे बल्कि उसे चाहिये कि वो अपने आप को उससे बड़ा समझे।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं हुसूले सवाब की नियत से मालदार का फ़क़ीर के लिये तवाज़ोअ़ करना बहुत अच्छा अ़मल है और इससे भी अच्छा ये है कि फ़क़ीर अल्लाह तआ़ला पर भरोसा और तवक्कुल रखे कि ये एक आअ़ला तरीन मर्तबा है और मालदारों से क़तई मेल जोल न रखे और न ही उनकी मजालिसों में रग़बत रखे क्योंकि ये हिर्स व तमाअ़ की बुनियाद हैं और जब कोई फ़क़ीर मालदारों से मेल जोल रखता है तो जान लो कि वो फ़क़ीर रियाकार है और फ़क़ीर का मालदारों की तरफ़ माइल होना उसके फ़क्र की रौनक़ को ज़ाइल कर देता है जब फ़क़ीर को मालदारों के कुर्ब में सुकून हासिल होने लगे तो समझ लो वो राहे हक़ से गुमराह हो गया फ़क़ीर पर लाज़िम है कि मालदारों का लिहाज़ व माल मिलने के लालच की वजह से वो हक़ बात–

कहने से ख़ामोश न रहे और अफ़आ़ल में फ़क़ीर के आदाब ये हैं कि फ़क़्र के सबब रब तआ़ला की इबादत में सुस्ती न करे और जो कुछ उसके इख़राजात में से बच जाये वो थोड़ा ही क्यों न हो उसे राहे खुदा में ख़र्च करे क्योंकि ये ग़रीब का सद्क़ा है और इसकी फ़ज़ीलत उस कसीर माल के सद्क़े से ज़्यादा है जो मालदार की तरफ़ से किया जाये।

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सद्क़े का एक दिरहम अल्लाह तआ़ला के नज़दीक एक लाख दिरहम से अफ़ज़ल है तो अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह वो कैसे तो आपने फ़रमाया कि एक शख़्स के पास सिर्फ़ दो दिरहम हैं तो उनमें से वो एक दिरहम खुश दिली से सद्क़ा करता है तो ग़रीब का एक दिरहम सद्क़ा करना मालदार के एक लाख दिरहम सद्क़ा करने से अफ़ज़ल है। (नसाई–सुनन–2/153-2531) (बैहक़ी–सुनन–कुबरा–5/390-ह०–7779)

हज़रत बिशर हाफ़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि फ़ुक़रा की तीन क़िस्मे हैं एक वो फ़क़ीर जो सुवाल नहीं करता और अगर उसे दिया जाये तो वो नहीं लेता तो ये जन्नत में आअ़ला मक़ाम में होगा और वो फ़क़ीर जो किसी से मांगता नहीं अगर कोई दे दे तो ले लेता है ये जन्नतुल फ़िरदौस में अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों के साथ होगा और वो फ़क़ीर जो सिर्फ़ ज़रुरत के–

वक़्त सुवाल करता है ये उन लोगों के साथ होगा जिनके नामाए आअ़माल सीधे हाथ में दिये जायेंगे

हज़रत सख़ी सुल्तान बाहु (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते है उ़र्फ़े आ़म में फ़क़्र मुफ़लिसी, तंगदस्ती की हालत को कहते हैं लेकिन आरिफ़ीन के नज़दीक फ़क़्र से मुराद वो मर्तबा है कि जहाँ इन्सान हर क़िस्म की हाजत से बेनियाज़ हो जाता है और दुनिया व मताये दुनिया से अपना क़ल्बी तआ़ल्लुक़ क़ताअ़ कर लेता है और सिर्फ़ रिज़ाए इलाही का तालिब व तक़दीरे इलाही से मुवाफ़िक़त इख़्तियार करता है और वो अल्लाह तआ़ला के कुर्ब के सिवा वो कुछ नहीं मांगता और न चाहता है और अल्लाह तआ़ला के ग़ैर से कुछ मतलब व रग़बत नहीं रखता और वो अल्लाह तआ़ला की रिज़ा पर राज़ी रहता और अल्लाह तआ़ला की मन्शा व रज़ा में मुदाख़िलत को वो गुनाह समझता है इसलिये अल्लाह तबारक व तआ़ला के कुर्ब के अ़लावा उसकी कोई तलब व ख़्वाहिश नहीं होती।

तमाम पैग़म्बरों ने फ़क़्र के मर्तबे की ख़्वाहिश व इल्तिजा की मगर उन्हें नहीं मिला और ये सिर्फ़ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हासिल हुआ जो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी उम्मत के सुपुर्द किया और जब बन्दा दुनिया से मुँह मोड़ लेता है तो वो फ़क़ीर हो जाता है और वो फ़क़्र के उस मर्तबे पर पहुँच जाता है जहां उसकी नज़र रब तआ़ला-

के सिवा किसी और चीज़ की तरफ़ नहीं उठती सूफ़िया-ए-किराम हमेशा खुद भी फ़क़्र का रास्ता इख़्तियार करते और लोगों को भी फ़क़्र का रास्ता इख़्तियार करने की तल्क़ीन करते रहे और उनकी दुनियावी माल व दौलत और जाह व मन्सब की तलब व शानो शौकत, आराम व ख़्वाहिशात सब कुछ अल्लाह तबारक व तआ़ला के इश्क़ में फ़ना हो गईं और वो हमेशा अल्लाह तआ़ला के सिवा हर चीज़ से बे नियाज़ रहे।

फ़क़्र की तीन अक़साम है अव्वल फ़क़्र फ़ना ये ला इलाहा है दोम फ़क़्र बक़ा ये इल्लल्लाहु है और सोम फ़क़्र इन्तिहा ये मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है जो रहनुमा हैं और जब तक फ़ना हासिल न हो बक़ा तक कोई पहुँच नहीं सकता और इब्तिदाये फ़क़्र इ़ल्मुल यक़ीन व ऐ़नुल यक़ीन है और इन्तिहाए फ़क़्र हक़्क़ुल यक़ीन है और फ़क़्र हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की हक़ीक़ी विरासत है और आपका वही हक़ीक़ी वारिस है जो इस विरासत का वारिस है और फ़क़्र अल्लाह तआ़ला के ख़ज़ानो में से एक ख़ज़ाना है और ये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तक़सीम फ़रमाते हैं और फ़क़्र की राह पर चलने वाले लोग दुनिया में बहुत कम हैं और इन्हीं की बरकत की वजह से दुनिया पर इ़ताब नाज़िल नहीं होता और जैसे जैसे क़यामत नज़दीक आती जायेगी इनकी ताअ़दाद कम होती जायेगी और जब क़यामत बरपा होगी तो इनमें से कोई भी ज़मीन पर मौजूद न होगा।

–: फुक़रा की फ़ज़ीलत :–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तू अपने आपको उन लोगों की संगत में जमाये रखा कर जो सुबह व शाम अपने रब को याद करते हैं और उसकी रिज़ा के तलबगार रहते हैं और तेरी मुहब्बत व तवज्जो की निगाहें उनसे न हटा करे। (सू०–कह्फ़–18/28)

➡ हज़रत साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि अ़रब के सरदारों व मालदार लोगों ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया कि आप एक दिन हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमादें व एक दिन अपने सहाबा के लिये ताकि हम अपने मुक़र्रर दिन में हाज़िर हों और उन्होंने ये बात इसलिये कही कि ग़रीब सहाबा–ए–किराम मसलन हज़रत बिलाल, हज़रत सलमान फ़ारसी, हज़रत सुहैब, हज़रत अबू ज़र, हज़रत अम्मार बिन यासिर, हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत मिकदाम, हज़रत इब्ने मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) और असहाबे सुफ़्फ़ा की वजह से कही थी क्योंकि से ये हज़रात गुरबत के बाइस शदीद गर्मी में भी ऊनी लिबास पहना करते थे और जब इन्हें पसीना आता तो उसकी बू उनके कपड़ों से निकल कर फैल जाती जो उन मालदार लोगों की ना गवार गुज़रती थी तब अक़राअ़ बिन हाबिस तमीमी व उयैना बिन हिस्न फ़ज़ारी व अ़ब्बास बिन मिरदास

सुलमी बग़ैराह ने देखा कि ग़रीब सहाबा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास बैठे हैं तो इन मालदर लोगों ने ग़रीब सहाबा को हक़ीर जाना तो उन्होंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से कहा कि आप हमारे लिये इनसे अलग दिन मुक़र्रर फ़रमादें ताकि हमारे लोगों को हमारी बुजुर्गी माअ़लूम हो सके और आप के पास अ़रब के लोगों के क़ासिद आते हैं और हमको शर्म माअ़लूम होती कि वो हमें इस तरह देखेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उनके इस्लाम लाने की उम्मीद पर उनकी दरख़्वास्त कुबूल फ़रमाई कि ग़रीब सहाबा को उनके साथ इकट्ठा न करें तब ये आयत नाज़िल हुई फिर हम लोग नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के नज़दीक हो गये और फिर हम मुसलसल आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ बैठते थे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/354-ह०–4127,4128)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम किसी आदमी को देखो कि वो दुनिया में जुहद और दुनिया से बेरग़बती और कम गोई का हामिल है तो तुम उस शख़्स के क़रीब हो जाओ बेशक उस हिकमत व दानाई अ़ता की गई है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/307-ह०–10534)

ये वो लोग हैं जो अहकामाते शरीअ़त पर अ़मल–

पैरा रहते हैं और अल्लाह तआ़ाला की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले और अपने रब का कसरत से ज़िक्र करने वाले हैं और ये वो लोग हैं जो सिर्फ़ अपने पर'वर दिगार की रिज़ा व खुशनूदी चाहते हैं तो ऐसे मोमिन फुक़रा की सुहबत इख़्तियार करने का अल्लाह तआ़ाला ने हमें हुक्म दिया है और ये हुक्मे आ़म है और इन मोमिन फुक़रा की सुहबत में इतने फ़वाइद हैं जिनका शुमार करना मुहाल है

अल्लाह तबारक तआ़ाला ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से फ़रमाया ऐ हबीब मुकर्रम आप अपने आप को तमाम उ़म्र यानी पूरी हयाते तय्यबा हर महफ़िल हर मजलिस हर घड़ी दिन रात सुबहो शाम उन ही फुक़रा को साथ रखिये जो निहायत खुलूस दिल से अपने रब को याद करते हैं जो खुशूअ़, खुज़ुअ़ व तवाज़ोअ़ और इन्किसारी के साथ मेरी इ़बादत में मशगूल रहते हैं और सिर्फ़ मेरी रिज़ा के तालिब रहते हैं और तमाम दुनिया से मुँह मोड़कर सिर्फ़ अपने मौला की ज़ाते पाक का इरादा रखते हैं सो ऐ-हबीब आप अपनी रहमत व शफ़क़त वाली निगाहें उनसे न हटाना।

जिस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर ये आयत नाज़िल हुई उस वक़्त आप अपने किसी घर में मौजूद थे फिर आप बाहर निकले तो आपने देखा कि कुछ लोग बैठे हुये हैं और वो अल्लाह तआ़ाला का ज़िक्र कर

रहे हैं और उनके बाल बिखरे हुये थे और उन्होंने निहायत माअ़मूली कपड़े पहने हुये थे आपने जब उनको देखा तो आप उनके पास बैठे गये और फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग रखे हैं जिनके बारे में मुझे ये हुक्म दिया गया है कि मैं खुद को उनके साथ लाज़िम रखूँ।

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि मैं फुक़रा मुहाजिरीन की एक जमाअ़त में जा बैठा वो लोग लिबास की तंगी की वजह से नंगा होने के डर से एक दूसरे की ओट में बैठे थे और एक क़ारी कुरान पढ़ रहा था कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) तशरीफ़ ले आये तो क़ारी ख़ामोश हो गया फिर आपने सलाम किया और पूछा तुम क्या कर रहे थे हमने कहा या रसूलल्लाह क़ारी कुरान पढ़ रहा था और हम सुन रहे थे आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हम्द है उस अल्लाह की जिसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा फ़रमाये जिनके बारे में मुझे हुक्म दिया गया कि मैं खुद को उनके साथ रोके रखूँ और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ फुक़रा की जमाअ़त क़यामत के दिन तुम्हें नूर की बिशारत हो और तुम लोग मालदारों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होगे।
(अबू दाऊद–सुनन–3/858-ह०–3666)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मुझसे रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा अगर तुम मुझसे मिलना चाहती हो तो तुम्हारे पास इतना माल होना चाहिये जितना किसी सवार का ख़र्च होता है और अपने आपको अमीरों की मजलिस से दूर रखना और कपड़े में पैबन्द लगाने से पहले किसी कपड़े को तर्क न करना।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/963-ह०–1780)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/312-ह०–6867)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/274-ह०–10398)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ मेरे रब मुझे अपनी तरफ़ हालते फ़क़ीरी व मुहताजी में उठाना यानी मेरी वफ़ात फ़क़ीरी व मुहताजी की हालत में करना और मुझे मालदार और ग़नी बनाकर अपनी तरफ़ न उठाना और क़यामत के दिन मुझे मिस्कीनों की जमाअ़त के साथ उठाना नीज़ फ़रमाया ऐ आयशा मिस्कीन को खाली हाथ न लौटालना और उनको कुछ न कुछ ज़रुर देना और मसाकीन को दोस्त रख और उनके नज़दीक होजा अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन तुझे अपने नज़दीक रखेगा। (इब्ने माजा–3/354-ह०–4126)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/203-ह०–2352)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/302-ह०–10506)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/329-ह०–7911)

➡ हज़रत असमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं तुमसे उन लोगों का हाल बयान न करूँ जो अल्लाह तआ़ाला के बेहतर बन्दे हैं लोगों ने अ़र्ज़ की क्यों नहीं या रसूलल्लाह बयान फ़रमाइये आपने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला के बेहतर बन्दे वो हैं कि जब उन्हें कोई देखे तो अल्लाह याद आ जाये।
(इब्ने माजा–सुनन–3/350-ह०–4119)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अहले जन्नत के वो बादशाह होंगे हर बिखरे वालों वाले गुबार आलूद फटे पुराने कपड़ों वाले दुनिया में जो लोग अम्रा (हाकिम) के दर'वाज़ों पर इजाज़त मांगे तो उनको इजाज़त न मिले और वो रिश्ता मांगे तो कोई उनके साथ निकाह न करे और जब वो कोई बात कहें तो उनकी कोई बात न सुने और जिनके दिल की ख़्वाहिश दिल में ही कर'वटें लेती रहे अगर उनके ईमान की रौशनी पूरे अहले ज़मीन में तक़सीम की जाये तो अहले ज़मीन को पूरी हो जाये। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/296-ह०–10486)

कुरान में फुक़रा मुहाजिरीन की सदाक़त का ज़िक्र

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
माले फ़ैः उन फुक़रा मुहाजिरों के लिये है जिनको अपने घरों और मालों से निकाल दिया गया है ये अल्लाह का फ़ज़्ल और खुशनूदी चाहते हैं और अल्लाह व उसके रसूल की (अपने माल व वतन की कुर्बानी से) मदद करते हैं ये लोग ही अपने ईमान व इख़लास में सच्चे हैं। (सू०-हश्र-59/8)

जो लोग अपने घरों और मालों से निकाले गये हैं और उनके घरों और मालों पर कुफ़्फ़ारे मक्का ने क़ब्ज़ा कर लिया उनका हाल ये है कि वो अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी रिज़ा के तालिब हैं और वो अपने जानो माल और वतन छोड़ने की कुर्बानी से दीन की हिमायत में अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की मदद करते हैं तो यही लोग सच्चे मोमिन हैं।

मुहाजिरीन ने अपने घर अपने माल और अपना वतन व अपने कुंबे और अपने अ़ज़ीज़ व अक़ारिब सब कुछ अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की मुहब्बत और दीन इस्लाम के लिये छोड़ दिये और बेशुमार तकलीफ़ों और सख़्तियों को बर्दाश्त किया जो इस्लाम कुबूल करने की वजह से उन्हें पेश आयीं उनके हाल इस हद को पहुँचे कि माल

व असबाब में से उनके पास कुछ न था हत्ता कि भूक की शिद्दत की वजह से पेट पर पत्थर बांधते थे उनके पास इतना कपड़ा मयस्सर न था जो कि उनके जिस्मों को पूरा ढकने पर किफ़ायत करता और उन्होंने अपने ईमान के तक़ाज़े के मुताबिक़ अ़मल किये और आअ़माले सालिहा और मशक्क़त आमेज़ इबादत के ज़रिये अपने ईमान को कामिल किया और उस पर इस्तिक़ामत हासिल की ऐसे फुक़रा मोमिनीन के लिये हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया–

ऐ फुक़रा मुहाजिरीन तुम्हें खुशख़बरी हो क़यामत के दिन तुम मुकम्मल नूर के साथ अमीर लोगों से निस्फ़ दिन पहले जन्नत में दाख़िल होगे और ये निस्फ़ दिन पाँच सौ बरस के बराबर है।
(अबू दाऊद–सुनन–3/858-ह०–3666)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
माली इमदाद के मुस्तहिक़ वो फुक़रा हैं जिन्होंने अपने आप को अल्लाह की राह में इस तरह मुक़ीद कर रखा है कि वो (रोज़ी कमाने के लिये) ज़मीन पर सफ़र नहीं कर सकते चूंकि वो (अपने जुहद की वजह से) किसी से सुवाल नहीं करते इसलिये नादान (जो उनके हाल से बे ख़बर हैं) उन्हें मालदार समझता है। (सू०–बक़राह–2/273)

ये आयते करीमा अहले सुफ़्फ़ा के हक़ में नाज़िल हुई इन हज़रात की ताअ़दाद 400 के क़रीब थी ये

हिजरत करके मदीना तय्यबा में मस्जिदे नबवी के पास एक चबूतरा था जहाँ पर ये रहते थे जिन्हें असहाबे सुफ़्फ़ा कहते हैं यहाँ न उनका मकान था ना कुम्बा न कबीला और न इन हज़रात ने शादी की थी और न इनका कोई कारोबार था इनमें से सत्तर के क़रीब अफ़राद के पास जिस्म ढकने के लिये पूरा कपड़ा भी नहीं था इनके तमाम औक़ात अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत में सर्फ़ होते थे ये रात में ज़िक्रे इलाही व कुरान का सीखना और दिन में इ़बादात और जिहाद के कामों में मशगूल रहते थे जिसकी वजह से इन्हें रोज़ी कमाने की फुरसत नहीं थी कि बाज़ार में चल फिरकर रोज़ी कमायें।

ये लोग गुरबत व भूक प्यास के बावुजूद लोगों से सुवाल भी नहीं करते थे और हमेशा अपने फ़क्र को छुपाने की कोशिश करते थे जिसकी वजह से लोग ये समझते थे कि उनका गुज़ारा बहुत अच्छा हो रहा है लेकिन उनका हक़ीक़ते हाल इससे बर अ़क्स था और उनकी दुनियावी ज़िन्दगी मशक़्क़तों व तकलीफ़ों से माअ़मूर थी और वो अपनी इस हालत में सब्र पर साबित क़दम रहते थे और इन असहाबे सुफ़्फ़ा में बाअ़ज़ ऐसे थे जो भूक की वजह से नमाज़ में गिर जाते थे और ये राहे खुदा में कामिल मुक़ीद थे और दीन की ख़िदमत में हमा वक़्त मशगूल रहते थे इनको कुदरती अ़लामात से ही पहचाना जा सकता था और इनके चेहरों पर फ़ाक़ा के आसार और आवाज़ में कमज़ोरी और–

रफ़्तार में जुअ़फ़ इनके फ़क़्र व फ़ाक़ा का पता देते थे।

ज़िन्दगी तो सबकी गुज़रती है मगर बेहतरीन ज़िन्दगी वो है जो अल्लाह तआ़ाला के लिये वक़्फ़ हो जाये कि जो भी अ़मल करें तो अपने नफ़्स के लिये नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ाला के लिये करें असहाबे कहफ़ के कुत्ते ने अपनी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ाला के महबूब बन्दों के लिये वक़्फ़ की तो उसे हयाते हमेशगी मिली तो अगर इन्सान अपनी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ाला के लिये वक़्फ़ करे तो वो फ़रिश्तों से अफ़ज़ल हो जायेगा।

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ असहाबे सुफ़्फ़ा खुशख़बरी सुन लो कि जो मेरी उम्मत में से इसी सिफ़त पर बाक़ी रहा जिस पर तुम हो और इस हाल के साथ राज़ी बारिज़ाये इलाही रहा तो वो क़यामत के दिन मेरे रुफ़क़ा में से होगा। (कंज़ुल उ़म्माल–3/635-ह०–16577)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं बहुत भूका था तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मेरे चेहरे को देखा और जो कुछ मेरे मन में था मुलाहिज़ा किया और फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा मैंने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैं हाज़िर हूँ फिर आपने

ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा मेरे साथ आओ तो मैं आपके साथ चल पड़ा फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अपने घर तशरीफ़ ले गये और आपने (मुझे अन्दर आने की) इजाज़त दी तो में अन्दर आ गया वहाँ एक प्याले में दूध मौजूद था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी अहलिया से दरयाफ़्त किया कि ये दूध तुम्हारे पास कहाँ से आया है उन्होंने जवाब दिया कि फुलां ने हद्या भेजा है

पस हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा अहले सुफ़्फ़ा के पास जाओ और उन्हें बुला लाओ हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि अहले सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे उनका कोई घर बार व कोई माल जायदाद वग़ैराह नहीं थी जब भी रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में कोई सद्क़ा आता था तो आप उन लोगों की तरफ़ भिजवा देते थे आप उस सद्क़े में हिस्सेदार नहीं बनते थे लेकिन जब आपकी ख़िदमत में कोई तोहफ़ा आता तो आप उनकी तरफ़ भिजवा देते और उस तोहफ़े में उनके साथ हिस्सेदार भी होते थे हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं अल्लाह की क़सम मुझे ये बात नापसंद गुज़री और मैंने सोचा भला इतना सा दूध अहले सुफ़्फ़ा और मेरे और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये क्या काम आयेगा लेकिन मैं चला गया और मैं उन लोगों को बुला लाया फिर आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम) ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी तो वो लोग अन्दर आ गये और तमाम लोग अपनी अपनी जगह पर बैठ गये फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा तुम ये दूध का प्याला लो और इन लोगों की तरफ़ दो हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि मैंने वो प्याला एक शख़्स की तरफ़ बढ़ाना शुरु किया फिर जो शख़्स उसे लेता वो सेर हो जाता तो मैं उससे वापस ले लेता और दूसरे शख़्स की तरफ़ बढ़ा देता हत्ता कि सब लोग सेर हो गये

फिर मैं हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास आया तो आपने अपना सर मुबारक उठाया और मुस्करा दिये और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा अब मैं और तुम बाक़ी रह गये हैं मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह आपने सच फ़रमाया फिर आप ने फ़रमाया कि तुम इसे लो और इसे पी लो इसके बाद आख़िर में बाक़ी रह जाने वाला दूध आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) नोश फ़रमाया और अपने पर'वर दिगार की हम्द बयान की।

(बुख़ारी-सहीह–5/290-ह०-5375)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/290-ह०–2477)
(बुख़ारी–सहीह–6/61-ह०–6452)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–7/540-ह०–6535)

अल्लाह तआ़ला की बारगाह में फुक़रा का मक़ाम

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कितने ऐसे लोग होते हैं जो परेशान हाल बिखरे बालों वाले, फटे पुराने लिबास वाले होते हैं जिनको दर'वाज़ो से धुतकार दिया जाता है अल्लाह तआ़ला के यहां उनका ये मक़ाम होता है कि वो मक़बूले बारगाहे इलाही होते हैं कि अगर वो किसी भी मुआ़मले में अल्लाह तबारक व तआ़ला की क़सम खा लें तो अल्लाह तआला उसे ज़रुर पूरा फ़रमां देता है।
(बुख़ारी–सहीह –4/842-ह०–4918)
(मुस्लिम–सहीह–5/91-ह०–6682)
(इब्ने माजा–सुनन–3/351-ह०–4115)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/339-ह०–7932)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/294-10482)
(मुन्ज़री–अत्तरग़ीब बत्तरहीब–4/73-4849)

फुक़रा अल्लाह के दोस्त होते हैं

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला दोस्त रखता है मोहताज फक़ीर मोमिन को जो अ़यालदार होकर सुवाल से बाज़ रहता है और अपने फ़क्र व फ़ाक़ा पर सब्र करता है और

अक्सर अल्लाह वाले ऐसे ही लोगों में होते हैं। (इब्ने माजा–3/353-ह०–4121)

फुक़रा अपने साथ हुस्ने सुलूक करने वालों को जन्नत में ले जायेंगे

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि ऐ मेरे महबूब बन्दो मेरे क़रीब हो जाओ मलाइका कहेंगे ऐ मेरे रब तेरे महबूब बन्दे कौन हैं अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मोमिन फुक़रा चुनांचा फुक़रा की जमाअ़त अल्लाह तआ़ला के क़रीब हो जायेगी फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मुझे अपनी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम मैंने तुमसे दुनिया को इसलिये दूर नहीं किया था कि तुम मेरे नज़दीक ज़लील थे बल्कि मेरा इरादा था कि आज के दिन तुम्हारी फ़ज़ीलतों और दरजात व मरातिब में इज़ाफ़ा हो लिहाज़ा आज तुम मुझसे जो चाहो मांग सकते हो

फिर उन्हें जन्नत का हुक्म सुना दिया जायेगा और कहा जायेगा कि ऐ मेरे बन्दो उन सफ़ों की तरफ़ जाओ और देखो जिस जिस ने मेरी रिज़ा के लिये तुम्हें खाना खिलाया या फिर तुम्हें कपड़ा पहनाया हो तो वो तुम्हारे इख़्तियार में यानी जिसे चाहो अपने साथ जन्नत में ले जाओ उस वक़्त लोगों का हाल ये होगा कि पसीने ने उन्हें लगाम डाल रखी होगी यानी लोगों के मुंह तक पसीना–

होगा फिर वो लोगों की सफ़ों में जाकर अपने साथ हुस्ने सुलूक करने वालों को तलाश करेंगे और उनका हाथ पकड़कर जन्नत में ले जायेंगे।
(कंज़ुल उ़म्माल–3/645-ह०–16630)
(तफ़्सीर–रूहुल बयान–पारा–7 सू०–अनआ़म तहते आयत–52-सफ़ा–522)

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़क़ीरों की अच्छी पहचान रखो व उनके साथ भलाई और हुस्ने सुलूक का मुआ़मला रखो और उनके पास से नेअ़मतें हासिल करो क्योंकि उनके पास दौलत है अ़र्ज़ किया गया या रसूलल्लाह कि उनकी दौलत क्या है तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत उनसे कहा जायेगा कि उन लोगों को तलाश करो जिन्होंने खाना खिलाया हो या पानी पिलाया हो या कपड़ा पहनाया हो तो उनका हाथ पकड़कर उन्हें जन्नत में ले जाओ (कंज़ुल उम्माल–3/641-16582)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/347-ह०–7947)
(तारीख़ मदीतुल दमिश्क़–14/99-ह०–1556)
(हिल्यातुल औलिया–8/451-ह०–12368)

दुनिया में मोमिन का तोहफ़ा फ़क़्र व फ़ाक़ा है

➡ हज़रत मुआ़ज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अन्हु) से

रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया में मोमिन का तोहफ़ा फ़क़्र व फ़ाका है।
(अल फ़िरदौस–2/111-ह०–2219)
(कंजुल उ़म्माल–3/637-ह०–16601)

फुक़रा के पास बैठना के अफ़ज़ल जिहाद है

➡ हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फुक़रा के साथ तवाज़ो से बैठना अफ़ज़ल जिहाद है।
(कंजुल उम्माल–3/641-1ह०–6585)

कमज़ोर लोगों की वजह से रिज़्क़

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे कमज़ोर व ज़ईफ़ लोगों में तलाश करो इसलिये कि इन्हीं के सबब तुमको से रिज़्क़ मिलता है यानी इन पर रहम करने के सबब से तुम्हें बरकत और फ़तह दी जाती है और इन्हीं के ज़रिये से तुम लोगों की मदद की जाती है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/929-1702)
(अबू दाऊद–सुनन–3/114-2ह०–594)
(नसाई–सुनन–2/368-ह०–3184)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–5/718-ह०–4767)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/587-ह०–2509)

फ़क़ीर मोमिन मालदार से बेहतर

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि देखो तुम्हें मस्जिद में सबसे आ़लीशान शख़्स कौन नज़र आ रहा है तो फिर मैंने ग़ौर किया तो मस्जिद में एक आदमी ऐसा था जिसके बदन पर उ़म्दाह लिबास था तो मैंने कहा वो है फिर आपने फ़रमाया कि मस्जिद में सबसे कमतर शख़्स कौन है तो मैंने ग़ौर किया तो देखा एक शख़्स जिसके जिस्म पर बोसीदा लिबास है मैंने कहा कि वो है तो आपने फ़रमाया कि अगर पहले जैसो से सारी ज़मीन भर जाये तो ये दूसरा बोसीदा कपड़ो वाला उन सबसे बेहतर है। (इब्ने अबी शैबा–10/457-ह०–35457)

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास से गुज़रा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने लोगों से पूछा कि तुम इस शख़्स के बारे में क्या कहते हो तो उन्होंने कहा कि ये लोगों में से शरीफ़ तरीन आदमी है और ये इस क़ाबिल है कि अगर किसी से रिश्ता मांगे तो इसको रिश्ता मिल जाये और अगर किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कुबूल की जाये और अगर वो कोई बात कहे तो मानी जाये हुज़ूर

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ख़ामोश हो गये फिर दूसरा आदमी गुज़रा तो आपने पूछा कि तुम लोग इसके बारे में क्या कहते हो वो बोले या रसूलल्लाह ये फुक़रा मुसलमानों में से है ये तो इस क़ाबिल है कि ये अगर किसी शख़्स से रिश्ता मांगे तो इसे कोई नहीं देगा और अगर ये किसी के लिये सिफ़ारिश करे तो इसकी सिफ़ारिश कोई भी कुबूल नहीं करेगा और अगर कुछ कहे तो कोई भी इसकी बात को नहीं सुनेगा तो फिर आप ने फ़रमाया कि ये फ़क़ीर उस मालदार जैसे तमाम रुये ज़मीन के लोगों से बेहतर है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/294-ह०–10481)
(बुख़ारी–सहीह–6/59-ह०–6447,5091)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/327-ह०–7929)
(इब्ने माजा–सुनन–3/352-ह०–4120)

फ़क्र व फ़ाक़ा बेहतरीन अज्र

➡ हज़रत फ़ुज़ाला बिन उ़बैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब नमाज़ पढ़ाते तो कुछ लोग भूक की वजह से हालते नमाज़ में गिर पड़ते थे वो असहाबे सुफ़्फ़ा थे हत्ता कि देहात के लोग उन्हें मजनून कहते थे फिर जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो उनके पास जाते और फ़रमाते कि अगर तुम्हें इ़ल्म हो जाये कि अल्लाह तआ़ला के पास तुम्हारे लिये क्या कुछ है तो तुम्हारी ख़्वाहिश

होगी कि तुम पर फ़क़्र व फ़ाक़ा व हाजतें और ज़्यादा हो जायें। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/209-ह०–2368) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/254-ह०–10316,10441) (कंज़ुल उ़म्माल–3/642-ह०–16604)

फुक़रा को अ़ता होने वाले मरातिब व दरजात

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मसाइबो आलाम से दो चार होने वालों को जब अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीम सवाब और मरातिब अ़ता फरमायेगा तो दुनिया में आफ़ियत व ऐश व आराम में रहने वाले लोग उनके सवाब व मरातिब को देखकर तमन्ना करेगे कि काश दुनिया में मेरी खालें कैंचियों से काटी जातीं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/231-ह०–2402)
(इब्ने अबी शैबा–3/537-ह०–10934)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602-ह०–6553)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कोई भी मालदार और मुहताज ऐसा नहीं जो क़यामत में ये आरज़ू न करे कि काश अल्लाह तआ़ला उसे दुनिया में उसकी हाजत के मुवाफ़िक़ रिज़्क़ देता और बहुत मालदार न करता क्योंकि वो फुक़रा के

मरातिब को देखेंगे जो उन्हें अल्लाह तआ़ाला अ़ता फ़रमायेगा। (इब्ने माजा–सुनन–3/359-ह०–4140) (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/269-ह०–10378)

➡नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दुनिया में जो शख़्स तवील रंज व ग़म वाला है वो आख़िरत में तवील सुरुर व ख़ुशी में रहने वाला है और जो शख़्स दुनिया में ज़्यादा सेर होकर खाने वाला है वो आख़िरत में सबसे ज़्यादा भूका रहने वाला है।
(कंजुल उम्माल–3/635-ह०–16578)

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ असहाबे सुफ़्फ़ा ख़ुशख़बरी सुन लो कि जो मेरी उम्मत में से इसी सिफ़त पर बाक़ी रहा जिस पर तुम हो और इस हाल के साथ राज़ी बा रिज़ाये इलाही रहा तो वो क़यामत के दिन मेरे रुफ़क़ा में से होगा।
(कंजुल उ़म्माल–3/635-ह०–16577)

➡हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि फुक़रा की एक जमाअ़त ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास अपना एक क़ासिद भेजा कि जिसने हाज़िरे ख़िदमत होकर अ़र्ज़ की कि मैं फुक़रा की जमाअ़त का नुमाइन्दा बनके हाज़िर हुआ हूँ तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया–

कि तुम्हें भी मरहबा और उन्हें भी मरहबा जिनके पास से तुम आये हो और तुम ऐसे लोगों के पास से आये हो जिनसे मैं मुहब्बत करता हूँ क़ासिद ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फुक़रा ने ये गुज़ारिश की है कि मालदार लोग भलाई ले गये क्योंकि वो हज करते हैं और हमें इसकी इस्तिताअ़त नहीं है और वो उ़म्राह करते हैं और हम इस पर क़ादिर नहीं जब वो बीमार होते हैं तो अपना माल सद्क़ा करके आख़िरत के लिये जमाअ़ कर लेते हैं

उस क़ासिद की ये बातें सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से फुक़रा को ये पैग़ाम पहुँचा दो कि उनमें से जो अपनी गुरबत पर सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे उसे तीन ऐसी तीन चीज़ें हासिल होंगी जो मालदारों को हासिल नहीं होंगी 1- जन्नत में एक ऐसा बाला ख़ाना है कि जिसकी तरफ़ अहले जन्नत ऐसे देखेंगे जैसे दुनिया वाले आसमान के सितारों को देखते हैं उन बाला ख़ानो में सिर्फ़ अम्बिया, शहीद, फ़क़ीर और फ़क़ीर मोमिन ही दाख़िल होंगे 2- फुक़रा मालदार लोगों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे 3- मालदार सुबहान अल्लाह अल्हम्दु लिल्लाह और ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर कहे और यही कलिमात फ़क़ीर भी कहे तो मालदार फ़क़ीर के बराबर सवाब नहीं पा सकता अगरचा वो दस हज़ार दिरहम भी सद्क़ा करे और दीगर नेक आअ़माल में भी यही मुआ़मला है जब क़ासिद ने

वापस जाकर अपने फ़ुक़रा भइयों को ये फ़रमाने मुस्तफ़ा सुनाया तो उन्होंने कहा हम राज़ी हैं हम राज़ी हैं। (कुव्वतुल कुलूब-1/436)
(इहयाउल उ़लूम-4/660,453)

फ़क्र व फ़ाक़ा की तल्क़ीन

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत बिलाल से फ़रमाया ऐ बिलाल तुम अल्लाह तआ़ला से फ़क़ीरी की हालत में मिलना दौलत मंदी की हालत में न मिलना हज़रत बिलाल ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह ये कैसे होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब तुझे रिज़्क़ मिले तो उसे जमाअ़ करके न रखना और जब कोई तुझसे मांगे तो इन्कार न करना हज़रत बिलाल ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह इसका नतीजा क्या होगा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तू ऐसे करेगा तो ठीक वरना तू दोज़ख़ में जायेगा। (हाकिम-अल मुस्तदरक-6/320-ह०-7887)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मालदारों के पास कम जाया करो क्योंकि ये इस बात के ज़्यादा लायक़ है कि तुम अल्लाह की नेअ़मतों को हक़ीर न जानोगे। (हाकिम-6/312-ह०-7869)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मुझसे रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ आयशा अगर तुम मुझसे मिलना चाहती हो तो तुम्हारे पास इतना माल होना चाहिये जितना किसी सवार का ख़र्च होता है और अपने आपको अमीरों की मजलिस से दूर रखना और कपड़े में पैबन्द लगाने से पहले किसी कपड़े को तर्क न करना।
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/963-ह०–1780)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/312-ह०–6867)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/274-ह०–10398)

जन्नत परेशानियों और दोज़ख़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात के घेरे में है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात से ढक दी गई और जन्नत मुश्किलात और दुश्वारियों से ढकी हुई है।
(बुख़ारी–सहीह–6/76-ह०–6487)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला ने जन्नत को पैदा फ़रमाया तो जिबराईल (अ़लै०) से कहा जाओ और जन्नत को देखो चुनांचा वो–

गये और उसे देखा फिर आये तो कहा ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम इसके मुताअ़ल्लिक़ जो कोई भी सुनेगा वो ज़रुर इसमें दाख़िल होना चाहेगा फिर अल्लाह तअ़ाला ने उसको मक्रुहात और मुश्किलात व नापंसद बातों व परेशानियों तकलीफों और मशक़्क़तों के घेरे में दे दिया यानी जन्नत में आने वालों को जो अ़मल करने होंगे और शरई पाबन्दियों पर अ़मल पैरा होना होगा ऊ़मूमन उनकी तरफ़ तबिअ़त माइल नहीं होती या फिर हक़ व शरीअ़त की राह पर जमे रहने की वजह से उसे तकलीफ़ें और मशक़्क़तें उठानी होगी फिर अल्लाह तअ़ाला ने फ़रमाया ऐ जिबराईल अब जाओ और जन्नत को देखकर आओ पस वो गये और उसको देखा फिर वापस आये और कहा कि ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि इसमें कोई भी दाख़िल न हो सकेगा

फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया फिर जब अल्लाह तअ़ाला ने दोज़ख़ को पैदा फ़रमाया तो अल्लाह तअ़ाला ने हज़रत जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि जाओ और दोज़ख़ को देखकर आओ वो गये तो देखा कि वो एक पर एक चढ़ी जाती है दोज़ख़ की हौलनाकी व उसकी निहायत सख़्त गरम व शोअ़ले उगलती आग को देखकर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने वापस आकर कहा कि ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम जो कोई इसके मुताअ़ल्लिक़ सुनेगा तो इसमें कोई न जायेगा तो फिर अल्लाह तअ़ाला ने

दोज़ख़ को नफ़्सानी ख़्वाहिशात और मरगूबात (पंसदीदा चीज़ों) के घेरे में दे दिया फिर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ऐ जिबरईल जाओ और उसे देखकर आओ वो गये और उसे देखा फिर आये और कहा ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मुझे अंदेशा है कि इसमें दाख़िल होने से कोई बच न सकेगा। (नसाई–सुनन–6/51-ह०–3797)
(अबू दाऊद–सुनन–6/599-ह०–4744)

फुक़रा जन्नत की चाबी हैं

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक हर चीज़ की एक चाबी होती है और जन्नत की चाबी मसाकीन व फुक़रा से मुहब्बत करना है क्योंकि वो सब्र करते हैं और क़यामत के दिन वो अल्लाह तआ़ला के हम नशीन होंगे (कंजुल उ़म्माल–3/641-ह०–16587)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/376-ह०–5029)

हौज़े कौसर पर सबसे पहले फुक़रा व मुहाजिरीन हाज़िर होंगे

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरा हौज़

इतना बड़ा है कि उसका फ़ासला बैतुल मुक़द्दस से काअ़बा मुअज़्ज़मा तक है और उसका पानी दूध की तरह सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है और उसके सोने व चाँदी के बर्तनों की ताअ़दाद आसमान के सितारों से भी ज़्याादा हैं उस हौज़ पर मेरी उम्मत के लोग जो मेरे ताबेदार हैं वो आयेंगे और मेरे हौज़ से पियेंगे और जो शख़्स उस हौज़ में से एक घूँट भी पियेगा उसे फिर कभी प्यास न लगेगी और मेरे हौज़ पर सबसे पहले मेरी उम्मत के फुक़रा व मुहाजिरीन और मैले कुचैले कपड़ों वाले आयेंगे सहाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप हम लोगों को (यानी अपनी उम्मत के लोगों को) पहचान लेंगे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया हाँ तुम्हारे मुँह और हाथ सफ़ेद होंगे वुजू के निशान से और ये निशान किसी और उम्मत के न होंगे। (इब्ने माजा–3/403-ह०–4301,4302,4303)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/261-ह०–2444)
(बुख़ारी–सहीह–6/120-ह०–6579)
(मुस्लिम–सहीह–1/371-ह०–581)

फुक़रा जन्नत के बादशाह

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अहले जन्नत के वो बादशाह होंगे हर बिखरे वालों वाले गुबार आलूद फटे पुराने कपड़ों वाले दुनिया में वो लोग

जो अम्रा (हाकिम) के दर'वाज़ों पर इजाज़त मांगे तो उनको इजाज़त न मिले और रिश्ता मांगे तो कोई उनके साथ निकाह न करे और जब वो कोई बात कहें तो कोई उनकी बात न सुने और जिनके दिल की ख़्वाहिश दिल में ही कर'वटें लेती रहे अगर उनके ईमान की रौशनी पूरे अहले ज़मीन में तक़सीम की जाये तो अहले ज़मीन को पूरी हो जाये। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/296-ह०–10486)

जन्नत में फुक़रा की अक्सरियत

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत का मुशाहदा किया तो उसमें फुक़रा की अक्सरियत देखी और मैंने दोज़ख़ में झांका तो उसमें औ़रतें ज़्यादा थीं। (बुख़ारी–सही–6/60-6449)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-6942)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/381-2603)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/592-ह०–7455)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/270-ह०–10383)
(कंजुल उ़म्माल–3/641-ह०–16584)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने जन्नत में झांका तो वहाँ के लोग अक्सर वो थे जो कि दुनिया में फ़क़ीर हैं और मैंने दोज़ख़ में झाँका तो

वहाँ अक्सर औ़रतें थी।
(बुख़ारी–सहीह–6/60-ह०–6449)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-ह०–6938)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/381-ह०–2602)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/270-ह०–10384)

➡ हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं जन्नत के दर'वाज़े पर खड़ा हुआ तो मैंने जन्नत के अन्दर देखा तो वहाँ अक्सर लोग वो थे जो दुनिया में मिस्कीन हैं और मालदार लोग रोके गये हैं यानी जो जन्नती हैं वो भी रोके गये हिसाबो किताब के लिये और जो दोज़ख़ी है उन्हें दोज़ख़ में ले जाने का हुक्म हो चुका है और मैंने दोज़ख़ के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो वहाँ औ़रतें ज़्यादा थी।
(बुख़ारी–सहीह–5/176-ह०–5196)
(मुस्लिम–सहीह–6/299-ह०–6937)

➡ हज़रत हारिसा बिन वह्ब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें अह्ले जन्नत की ख़बर न दूँ वो देखने में कमज़ोर लेकिन अगर वो अल्लाह के भरोसे किसी बात पर क़सम उठा लें तो अल्लाह तआ़ला उसे ज़रुर पूरा कर देता है और क्या मैं तुम्हें अहले जहन्नम की ख़बर न दूँ वो सख़्त मिजाज़ झगड़ालू बुरी ख़सलत वाला और तकब्बुर करने वाला और

और माल जमाअ़ करने वाला और बड़े पेट वाला मग़रुर है। (बुख़ारी–सहीह–4/842-ह०–4918)
(मुस्लिम–सहीह–6/391-ह०–7187)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/295-ह०–10484)

फ़ुक़रा मालदारों से पाँच सौ साल पहले जन्नत में जायेंगे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ुक़रा की जमाअ़त मैं तुम्हें खुश ख़बरी देता हूँ कि फ़ुक़रा मालदारों से आधा दिन पहले यानी पाँच सौ साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे फिर हज़रत मूसा बिन ऊ़बैदा ने ये आयत पढ़ी " तो एक दिन आपके रब के यहाँ एक हज़ार साल की मानिन्द है जो तुम शुमार करते हो"। (सू०–हज–22/47)
(इब्ने माजा–सुनन–3/353-ह०–4122,4123,4124)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/203-ह०–2351,2353,2354)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/270-ह०–10382)
(इब्ने अबी शैबा–10/475-ह०–35528)
(कंज़ुल ऊ़म्माल–3/635-ह०–16580)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़ुक़रा व मुहाजिरीन मालदारों से 500 साल क़ब्ल जन्नत में दाख़िल होंगे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/203-ह०–2351)

अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ मालदारी के सबब घिसटते हुये जन्नत में जायेंगे

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा में हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला आया उस काफ़िले में गन्दुम व आटे और खाने से लदे हुये सात सौ ऊँट थे उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने शोर सुना तो इस बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो उन्हें बताया गया कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तिजारती काफ़िला वापस आया है और उसमें गन्दुम, आटे और तुआ़म से लदे हुये सात सौ ऊँट है हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने फ़रमाया कि मैंने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को इरशाद फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ जन्नत में घिसटते हुये दाख़िल होंगे जब ये बात हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ को माअ़लूम हुई तो आप ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से कहा कि ऐ मेरी मां मैं आपको गवाह बनाता हूँ कि मैंने अपने तमाम ऊँट अपने साज़ो सामान के साथ अल्लाह की राह में सद्क़ा कर दिये। (इब्ने असीर–उसदुल ग़ाबा फी माअ़रिफ़ तुस्सहाबा–अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़–2/438) व इसी तरह हज़रत सुलेमान (अ़लैहिस्सलाम) हुकूमत व–

सल्तनत की वजह से अम्बिया किराम में सबसे आख़िर में जन्नत में जायेंगे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/121-ह०–12651)
(हाकिम–माअ़रिफ़ तुस्सहाबा–3/311)

जब लोग फुक़रा को बुरा जानेंगे तो उन पर बलायें नाज़िल होगी

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब लोग फुक़रा को बुरा जानेंगे और दुनिया की ताअ़मीर बुलन्द करेंगे और माल जमाअ़ करने की हिर्स करेंगे तो उन पर अल्लाह तअ़ाला चार चीज़ें मुसल्लत कर देगा 1- क़हृत 2- बादशाह का जुल्म 3- हुकूमती लोगों की ख़्यानत 4- दुश्मन का ग़लबा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/335-ह०–7923)

हुजूर से मुहब्बत तो फक़्र उसके साथ

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है एक शख़्स ने हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैं अपको दोस्त रखता हूँ तो आप ने फ़रमाया कि देख समझ ले तू क्या कह रहा है उसने कहा मैं आपको दोस्त रखता हूँ उसने ये तीन बार कहा तो फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अगर तू मुझे दोस्त–

रखता है तो फिर तू तैयार हो जा फ़क़्र के लिये एक झोल लेकर इसलिये बहुत जल्द आने वाला है फ़क़्र उसकी तरफ़ जो मुझे दोस्त रखता है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/202-ह०–2350)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/345-ह०–7944)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक फ़क़्र व गुरबत उसके साथ है जो मुझसे मुहब्बत करता है कि पहाड़ के ऊपर से सैलाब जिस तेज़ी के साथ नीचे आता है उससे भी ज़्यादा तेज़ी से परेशानी उस पर आती है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–7/285-ह०–10442)

फक़्र अल्लाह के नज़दीक ज़ीनत है

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़क़्र लोगों के नज़दीक ऐब है और अल्लाह तआ़ला के नज़दीक ज़ीनत है
(कंजुल उ़म्माल–3/642-ह०–16595)

फकीर की अ़लामत

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मिस्कीन वो नहीं

है जो कि लोगों के गिर्द घूमता रहता है जो दर बदर फिरता है एक दो खजूर या एक दो लुक़्मे पाता हो व एक दो लुक़्मे या एक दो खजूर लेकर लौट जाता हो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह फिर मिस्कीन कौन है तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मिस्कीन वो है कि जिसको इतना ख़र्च नहीं मिलता हो जो कि उसकी ज़रुरतों पर किफ़ायत करता हो और जो लोगों से सुवाल नहीं करता और न लोग उसके हाल से वाक़िफ़ होते हैं कि उसको कुछ दें एक रिवायत में है कि उसके पास इस क़दर न हो जो कि उसकी किफ़ायत करे और वो लोगों से माँगता भी न हो और न लोगों को उसकी ज़रुरत का इ़ल्म हो कि वो उसे कुछ सद्क़ा दें और न लोग उसे मिस्कीन जानते हों कि उसको सद्क़ा दें और न वो लोगों से कुछ माँगता हो।

(मुस्लिम–सहीह–3/62-ह०–2393)

(अबू दाऊद–सुनन–2/300-ह०–1631,1632)

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तबारक व तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत व रहमो करम और उनके तुफ़ैल और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलिया किराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से मैंने इस किताब की ताअ़लीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था

अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे व मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर व मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये। **आमीन**

मदार बुक सेलर
मकनपुर (कानपुर)